पार्टी कामरेड

यशपाल



'पार्टी कामरेड'

छोटे उपन्यास अथवा लम्बी कहानी का एक उदाहरण है। इस उपन्यास को बंगाली के छोटे उपन्यास 'बड़ी दीदी' 'विजया,' बिन्दू का लड़का, आदि की तुलना में रखा जा सकता है परन्तु इस उपन्यास का क्षेत्र केवल गृहस्थ की चार-दिवारी नहीं। घर के चौके-चूल्हे से लेकर बम्बाई के नाविक विद्रोह के समय जनता का साम्राज्य विरोधी संघर्ष तक है उपन्यास लेखक, कवि और आलोचक उपेन्द्र-नाथ 'अश्क' ने इस उपन्यास की कलापूर्णता के विषय में लिखा था :—"उपन्यास कला की पूर्णता के रूप में 'पार्टी कामरेड' एक उत्कृष्ट नमूना है।

विप्लव पुस्तकमाला—१४

पार्टी कॉमरेड

[उपन्यास]

यशपाल

विप्लव—कार्यालय—लखनऊ.

जून १९४६] दूसरा संस्करण अक्तूबर १९४७ [मूल्य

प्रकाशक—
विप्लव-कार्यालय,
लखनऊ.

मुद्रक—
प्रकाशवती पाल,
साथी प्रेस, लखनऊ.

समर्पण

तुम्हारी यह कहानी
तुम्हीं को अर्पित !

यशपाल

परिचय—

कहानी घटना और घटना के पात्रों का परिचय कराती है। इसलिये स्वयंम कहानी का परिचय क्या ? दूर देश और अतीत काल की कहानी हो तो उसके लिये कुछ संकेत या निर्देश की आवश्यकता हो भी सकती है पार्टी-कॉमरेड की कहानी आज की ही कहानी है, पाठक के चारों ओर मौजूद परिस्थितियों की कहानी। अपने सिर के केशों के सम्बन्ध में कौतुहल क्या, वह तो कटकर सामने ही गिरेंगे। पाठक की परिस्थितियों की कहानी लिखना पाठक को दर्पण दिखाने जैसा ही है। यदि दर्पण में दिखाई देने वाले अपने रूप के सम्बन्ध में हमें शंका हो तो उसके दो कारण हो सकते हैं। दर्पण खराब हो सकता है। ऐसी अवस्था में दर्पण बनानेवाला ही दोषी है परन्तु बहुधा हम अपने आपको वास्तविक से बहुत अधिक रूपवान समझते हैं। ऐसा व्यक्ति शायद ही मिले जिसे अपना रूप ठीक-ठीक याद हो ! कम से कम अपने चेहरे का दोष तो दर्पण में देखे बिना जानना सम्भव नहीं। इसीलिये अपनी ही परिस्थितियों की कहानी लिखने की विशेष प्रवृत्ति हुई।

अपने ही समय की बात पर मतभेद बहुत उग्र हो सकता है। इस कहानी के सम्बन्ध में ऐसा होने से कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि मत-भेद, मत-संघर्ष की परिस्थितियों के सामने ही यह दर्पण रखा जा रहा है। इस दर्पण में और दिखाई क्या देगा ?

किसी भी समय के चित्र में उस समय की बात होगी ही। बन्दर के चित्र में पूँछ न हो और हाथी के चित्र में सूंड़ न हो तो वह चित्र कैसा ? ऐसे ही आज के संघर्षकाल के चित्र में संघर्ष की बात होगी और इस संघर्ष के पात्र भी उसमें होंगे। यहाँ तक शायद किसी आलोचक को आपत्ति न हो। आपत्ति होती है आलोचक को प्रचार की गंध आने पर। प्रश्न है, बन्दर को बन्दर, हाथी को हाथी और गधे को गधा कहना प्रचार है या नहीं ? बन्दर के लिये यह कहना कि वह चंचल और धूर्त होता है, हाथी के लिये कहना कि भारी और विशाल होता है और गधे को बेसमझ कहना प्रचार है या नहीं।

कुछ लोग इसे प्रचार कहेंगे, परन्तु यदि वास्तविक बात न कही जाय तो क्या बन्दर, हाथी और गधे का वास्तविक परिचय या वर्णन हो सकेगा ? जिन लोगों की कहानी लेखक लिखता है, उनके विचारों और व्यवहार का वर्णन करना उनका वास्तविक परिचय है, प्रचार नहीं। इसके बिना चित्र पूरा न होगा और चित्र भी यथा सम्भव एकांगी न हो तभी अच्छा है। वर्णन और चित्रण यदि प्रचार हैं तो संसार का सम्पूर्ण साहित्य ही प्रचार है और आज का लेखक उससे कैसे बच सकता है।

पक्षपात की सफ़ाई दे सकना कठिन है। अपने चारों ओर कुछ हमें ठीक और अच्छा जंचता है और कुछ ग़लत और बुरा। जो हमें ठीक जंचता है, उसे ठीक या अच्छा कैसे न कहा जाय? जो ग़लत जंचता है, उसे ग़लत या बुरा कैसे न कहा जाय? न कहा जाय तो ठीक का अनुमोदन और ग़लत के सुधार का प्रयत्न कैसे हो?

परिस्थितियों के इन सभी संघर्षों की एक झलक पार्टी-कॉमरेड में है, द्वेश की भावना नहीं। जैसा बन पड़ा वैसा दर्पण है। देखिये तो, और न देखिये तो.........और देखकर जैसा जंचे.........!

विप्लव
२४–६–४६

यशपाल

पार्टी कॉमरेड

पुत्तूलाल नौसारी और पदमलाल भावरिया की मित्रता अब नाम को ही रह गई थी। मित्रता की जगह अब दोनों के दिलों में होड़ ने ले ली थी। पुत्तूलाल के हाथ में पैसा उतना न था परन्तु उसे अपनी दिलेरी का अभिमान था। बात पड़ जाय तो पैसा फेंकने में पीछे हटने वाला भी नहीं। ऐसे ही ताव पर आकर उसने मदनपुरा की अपनी चाल (हवेली) बेच डाली परन्तु 'बेटा' पुलिस वालों को भी नाकों चने चबवा दिये। आखिर 'भिण्डी बाजार' के दारोगा साहब ने हाथ मिलाकर दोस्ती कर ली। दो-चार 'आदमी' उसके साथ सदा ही बने रहते। अशफ़ाक पंजाबी, सुकुल और बांडेकर का इलाके भर में खूब नाम था। यह लोग अवसर देख कभी नौसारी के और कभी भावरिया के साथ हो लेते।

उस दिन दोपहर बाद नौसारी एक 'कांकणी' छोकरी की खोज में हॉर्नबाई रोड पर जा रहा था। सुकुल साथ में था। राह में भावरिया और पंजाबी मिल गये। बात-चीत चलने लगी। सुकुल ने बात के उपसर्ग में गाली जोड़ कर कहा—'..........अजीब बला है। यों

हमने भी बहुत देखी हैं। पर यह मछली चारा चाट जाती है और काँटा नहीं निगलती······चकमा दे जाती है।'

'हमारे लैक (लायक) काम हो तो हुकुम करना सेठ'—अपनी ढीली आस्तीनें समेटते हुए अशफ़ाक पंजाबी बोला।

'देखो, कहाँ जाती है !'—आत्मविश्वास का एक श्वास ले, भीड़ में दूर देखते हुये नौसारी ने उत्तर दिया।

भावरिया भी साथ हो लिया, कुछ दिल्लगी रहेगी। और जरूरत पड़ने पर सहायता दे वह नौसारी को नीचा दिखा सकेगा।

'कोंकणी' छोकरी 'विंसर रेस्टोरां' में प्रायः आती थी। वे लोग वहीं जाकर बैठे। वह छोकरी तो दिखाई नहीं दी परन्तु साथ की मेज पर दो आदमियों के साथ एक और लड़की आकर बैठी। खूब खुल-खुल कर बात कर रही थी, कभी अँग्रेज़ी में और कभी गुजराती में। हँसती तो पतले होंटों में श्वेत दाँत ऐसे जान पड़ते कि गुलाबी मखमली मटर की फली फटकर मोती झलक आये हों। आँखें भी छुरे के फले जैसी लम्बी-लम्बी नोकदार, खूब उजली। माथे पर त्योरी चढ़ा देखती तो ऐसा लगता; नज़र सीने में गड़ा देगी। एक अजीब सा चुलबुलापन। लाल गेहुँआ रंग, पतला-पतला, प्यारा लचीला सा बदन।

भावरिया की आँखें लड़की पर गड़ी देख मुकुल ने चुटकी ली—'सेठ, चीज़ तो ज़ोर की है !'

'हमारा सेठ माल पछाणता है भाई'—अशफ़ाक अस्तीनों पर हाथ फेर कर गर्व से बोला—'कोई सिनेमावाली है ; क्यों सेठ ?'

पुत्तूलाल भी उधर देख चुका था—'खान की पहचान ?'—उसने मुस्कराकर कहा—'कालिज की लड़की है।'

सुकुल ने भावरिया को उकसाया—'कहो सेठ, पसन्द है; बुरी भी क्या है ?·······क्यों ?'

'कालिज की लड़की···वह खुद खिलाड़ी है' पुत्तूलाल ने टोका—'उड़कर बादल में चिन्दी लगा आये !·······अपना कान ढूंढ़ते फिरोगे पण्डित !'

भावरिया जानता था, बात उसे ही सुना कर कही गई है। उत्तर दिया—'ऐसा भी क्या कहते हो लाला ? हम भी बम्बई में रहते हैं।'

अशफ़ाक ने आस्तीन चढ़ाकर समर्थन किया—'हमारा सेठ किससे कम है लाला ?'

'तो आज़मा देखो भाई !'—पुत्तूलाल ने होंठ बिचका दिये।

लड़की अपने बड़े बटुए में से कुछ पुस्तकें निकाल साथ आये दोनों आदमियों को दिखा रही थी। उसी में उसका ध्यान लगा था। पुस्तकों को उलट-पलट उसके साथियों ने ले लिया और जेब से दाम निकाल लड़की के आगे रख दिये।

सुकुल ने जेब से चिल्लर (चेंज) निकाल मेज पर बजाया और गर्दन ऊँची कर दबी जबान में आवाज़ कसी—'हम भी ख़रीदते हैं भाई !'

लड़की ने सुना। घूम कर देखा, एक नज़र से भांपा और उपेक्षा से मुख मोड़ चाय का प्याला पीती हुई अपने साथियों से बात करने लगी। कुछ देर बाद वे लोग उठकर चल दिये। जाते समय लड़की ने

एक बार घूमकर इन लोगों की ओर देखा।

ठहाके से हँसकर सुकुल बोला—'है भाई है। मछली कांटा निगलेगी।'

'सेठ को पहचान गई—पुत्तूलाल ने चुटकी ली।

बेपरवाही से सुकुल बोला—'अरे तो क्या है, किताब ही तो बेचती है।······दस-पन्द्रह खरीद ही डालेंगे।'

मेज के नीचे पाँव हिलाते हुये पुत्तूलाल ने उत्तर दिया—'औरत की नज़र पहचानी जाती है बाबू! यहाँ इसी में बिगड़े बैठे हैं।'

भावरिया को यह तानेबाज़ी अच्छी न लगी पर कुछ कह न सका। नौसारो आयु और अनुभव में बड़ा था। भावरिया उसे भैय्या सम्बोधन करता था। बिगाड़ ज़ाहिर न करने के लिये उसके साथ बने रहना ज़रूरी था। वह बदल कर बात करने लगा। पुत्तूलाल का खयाल था कोंकणी छोकरी शायद 'कैपिटल' में मिले। इसलिये उठने पर वे लोग घूमते-घामते उस ओर चल दिये।

पदमलाल भावरिया ने चारों के लिये टिकिट खरीद लिये। सिनेमा शुरू होने में अभी कुछ समय था। वे लोग ड्योढ़ी में आखड़े हुये। मतलब था, आने जाने वालों पर नज़र डालना। शनिवार के दिन फ़िल्म में काम करनेवाली छोकरियाँ प्रायः बन-ठन कर आती हैं। और भी कोई मौसमी पंछी नज़र आ जाते हैं। यह लोग कभी काँच-मढ़ी आलमारियों में लगी तसवीरों की ओर देखते और कभी भीड़ में चलती फिरती तसवीरों की ओर।

'अरे!'—अशफ़ाक ने भावरिया के कंधे पर हाथ रखा। चारों की

दृष्टि उस ओर गई। रेस्टोराँ में चाय पीने आनेवाली लड़की एक दूसरे नौजवान लड़के के साथ सड़क किनारे पटड़ी पर अखबार बेच रही थी। आते-जाते लोगों के सामने अखबार बढ़ाकर वह कहती—'प्लीज़ रीड पीपल्सएज्ज !' और कभी गुजराती में कहती 'जनयुग पढ़िये !' वैसे ही उसका साथी, उससे अधिक ऊँचे स्वर में पुकार पुकार कर और अखबार दिखा कर बिक्री कर रहा था।

'क्यों भाई पण्डित ; अखबार खरीदोगे ?'—सुकुल को सुना कर पुत्तूलाल ने पद्मलाल को चुटकी ली—'कहते थे न ?'

'जैसे सेठ कहें'—सुकुल ने भावरिया की ओर देख मुस्करा दिया।

भावरिया चुप-चाप खड़ा देखता रहा। लड़की उसी प्रकार आग्रह से अखबार बेचे जा रही थी। अखबार बिक जाने पर पैसे बटुये में डाल, दूसरी बांह के नीचे से नया अखबार ले फिर दिखाने लगती। भावरिया आगे बढ़ गया। दस रुपये का एक नोट अखबार बेचनेवाली की ओर बढ़ा उसने कहा—'दीजिये तो एक ठो !'

गाहक की ओर ध्यान न दे लड़की ने अखबार दे नोट ले लिया और शेष रुपये वापिस करने के लिये, अखबार दूसरी बांह के नीचे सम्भाल, बटुआ खोल टटोलने लगी। नौ रुपये और चौदह आने जल्दी नहीं मिल रहे थे।

'जाने भी दीजिये हो जायगा'—उपेक्षा दिखा भावरिया ने कहा। अब लड़की ने भावरिया की ओर देखा और कुछ झेंप गई। भावरिया अखबार को समेटता हुआ, पुत्तूलाल को चुनौती की दृष्टि से देखता लौट आया।

'मानते हैं सेठ !'—सुकुल बोला।

इतने में लड़की अपने अखबार बेचने वाले साथी से पैसे ले पीछे-पीछे आ पहुँची। भावरिया को सम्बोधन कर वह बोली—'सुनिये, देखिये, यह लीजिये नौ रुपये-चौदह आने।'

अब भावरिया के झेंपने की बारी थी परन्तु मित्रों के सामने वह ठिठका नहीं—'क्या होगा'—उसने उपेक्षा से कहा—'आपकी नजर है।'

अखबार बेचने के लिये पुकारने के श्रम से लड़की के चेहरे पर आयी लाली बढ़ गई। उसने दृष्टि बटुए के भीतर झुकाली और एक रसीद की कापी और पेंसिल निकाल बोली—'तो आप नौ रुपये-चौदह आने के लिये पार्टी की रसीद ले लीजिये !······कहिये, क्या नाम लिखूँ ?'

'क्या होगा, रहने दीजिये, फिर हो जायगा'—भावरिया ने टालने के लिये कहा।

'नहीं' ऐसा तो कायदा नहीं है'—लड़की ने अपनी साफ़, बड़ी-बड़ी आँखें भावरिया की आँखों में गड़ाकर उत्तर दिया।

'अच्छा लिख लीजिये, पदमलाल भावरिया।'

रसीद थमा, थैंक्यू कह लड़की लौट गई और फिर उसी तरह पुकार-पुकार कर अखबार बेचने लगी।

सुकुल हँसी से आँखें चढ़ाकर बोला—'सेठ, बस कागज का ही पुर्जा हाथ लगा क्या ?' पुत्तूलाल ने मुस्कराकर सहयोग दिया—'गाँठ के पैसे गये सो अलग और ऊपर से······बना गई घाते में।'

'देखा जायगा'—पुत्तूलाल की चुनौती स्वीकार करने के लिये भावरिया ने उत्तर दिया।

× × ×

मूला मोदी ने भावर से बम्बई में आ फ़ोरास रोड के इलाके में दूकान लगाई थी। तब बम्बई ऐसा न था जैसा आज है। फ़ोरास रोड ही न था। आस पास सिरकी के पालों और खपरैल की झोंपड़ियां में मज़दूरों की बस्ती थी। यही लोग मूला मोदी भावरिया के गाहक थे। सौदा प्रायः उधार चलता। सौदे पर वाजिब मुनाफ़ा और उधार पर वाजिब सूद। स्वभाव में नम्रता और स्नान पूजा में नियम होने से मूला भगत कहलाने लगे।

ज्यों ज्यों बम्बई का विस्तार सेठानी के फूलते शरीर की तरह बढ़ने लगा, उसका आंचल (मुबई) सिमिट-सिमिट कर उसके शरीर पर चढ़ता गया। फ़ोरास रोड के इलाके के साथ ही मूला भगत की स्थिति बदलती गई। फ़ोरास रोड का बाज़ार जमते-जमते मूला भगत की चार चालें (हवेलियां) खड़ी हो गईं। भगवान की दया से सब कुछ था परन्तु उनकी दी सम्पत्ति का वारिस न था। पहले तीन लड़कियां ही हुईं फिर लक्ष्मीनारायण की दया से ढलती उम्र में एक लड़का हुआ।

पुत्र के जन्म पर भगत जी ने अपने अहाते के बीचों-बीच लक्ष्मी-नारायण जी के मन्दिर की नींव डाल दी। चार चालों की इमारत से बचे पत्थर चूने से मन्दिर अनायास ही बन सकता था परन्तु भगतजी

ने भगवान का स्थान अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुरूप बनवाया। भगवान का आसन और मन्दिर का फ़र्श संगमरमर का बनवाया और परिक्रमा के स्थान की दीवारों पर चूनागची की पालिश लगा चित्रकारी की गई। भगतजी का आधा दिन इस मन्दिर के सामने तख्त पर बैठे सुमरनी जपने में बीत जाता। दूकान में कारोबार देखते या बात-चीत करते भी गौमुखी में छिपा हाथ सुमरनी फेरता रहता।

स्वयम भगतजी मामूली बही-खाता लिखने की विद्या से अधिक न पढ़ पाये, जरूरत भी न थी। परन्तु अपने पुत्र पदमलाल को योग्य बनाने के लिये उन्होंने सरकारी अँग्रेज़ी स्कूल में भरती कराया। शीघ्र ही उस नास्तिक विद्या से भगतजी को वैराग्य भी हो गया।

एक दिन पदमलाल की शिकायत पहुँची कि स्कूल के दूसरे लड़कों के साथ मिलकर उसने किसी बाग से केले चुराये हैं। भगतजी ने पुत्र को समीप बैठा कर उपदेश दिया कि चोरी महापाप है और फिर मन्दिर के पुजारी पंडित जी से पुराण बंचवाकर चोरी के अपराध का दण्ड सुनवाया कि चोरी करने से मनुष्य नरक में जाता है। यम के गण उसे बार-बार सूली पर चढ़ाते हैं। बारह वर्ष के बालक पदमलाल ने रोमांचित शरीर से वह कथा सुनी और पुजारी जी के बताये नियम से अनेक बेर 'विष्णु सहस्त्र नाम' का पाठ कर प्रायश्चित किया।

बहुत दिन नहीं बीते थे कि फिर एक दिन भगतजी ने मुनीम से सुना कि पदमलाल छिप-छिप कर सिगरेट पीता है। पूछने पर वह इनकार कर गया। इनकार कर गया पिता की नाराज़ी और मार के डर से। सिगरेट पीने का प्रलोभन हुआ था इसलिये कि मना की

जानेवाली इस चीज़ को जो लोग पीते हैं वे किसी से डरते नहीं ; उसमें क्या आनन्द है ? उस कौतुहल को वह दमन न कर सका।

फिर उसे पुजारी जी ने गरुड़ पुराण से नशा करने के अपराध के दण्ड की कथा सुनाई। उसे गोमूत्र चखा कर प्रायश्चित्त कराया गया। विष्णुसहस्रनाम का जाप करने के लिये उसे नित्य संध्या-प्रातः मंदिर में बैठा दिया जाता। जप करते समय वह सोचता रहता—उसने वह काम किया है जिससे उसके पिता और दूसरे लोग डरते हैं। नरक में यम के गण खौलता हुआ सीसा उसके मुख में उड़ेलेंगे। अनेक बेर सोच-सोच कर स्वयम ही उसने मनमें निश्चय किया—अब ऐसा होना ही है तो वह क्या करे!

घर में पिता का भय, मन में भगवान का भय और स्कूल में मास्टर के बेत का भय......पद्मलाल को जीवन असह्य जान पड़ने लगा। उसे सान्त्वना मिलती ऐसे लोगों की संगति से जो भय की चिंता न कर मन को उमंग से चलते थे, हर दाँव पर बाज़ी लगाने के लिये तैयार रहते थे। स्कूल से वह प्रायः ग़ायब हो जहाँ तहाँ घूमा करता। परीक्षा में पास होने की न उसे चिंता थी और न कोई आवश्यकता ही जान पड़ती। भगत जी ने स्कूल की शिक्षा को न धर्म के लिये और न व्यवसाय के लिये ही विशेष उपयोगी पाया। नवीं श्रेणी से पुत्र का स्कूल छुड़ा दिया। उसे दुकान की गद्दी पर बैठने की आज्ञा हुई कि व्यवसाय की शिक्षा पाये नश्वर संसार की यथेष्ट माया बटोर लेने के पश्चात भगतजी ने जाना कि अन्त में सत्य केवल एक परलोक ही है। पुत्र के लिये संसार की माया कमा कर उन्होंने

उसके परलोक की भी चिन्ता की। पदमलाल की रुचि पाप से हटाकर धर्म की ओर करने के लिये भगतजी ने लक्ष्मीनारायणजी के सिंहासन की परिक्रमा के स्थान में दीवारों पर स्वर्ग-नरक में मिलने वाले पुण्य और पाप के परिणामों के चित्र अंकित करवा दिये।

पदमलाल का मन्दिर में पूजा के लिये प्रातः-संध्या जाना आवश्यक था। परिक्रमा के समय वह दीवारों पर बने चित्रों में देखता कि विष्णु के गण पुण्यात्माओं को पालकियों में बैठा उन पर चंवर डुलाते हुये स्वर्गधाम ले जा रहे हैं। स्वर्ग की अप्सरायें देवताओं और धर्मात्माओं को अमृत के पात्र अर्पण कर उन्हें रिझाने के लिये उनके सामने नृत्य कर रही हैं। समीप ही वह पाप के फल नरक के दृश्य देखता। यम के गणों के माथे पर सींग उगे हैं और उनके मुख से हाथ भर लम्बी जिह्वा लटक रही है। वे चोरी करनेवाले पापी को सूली पर चढ़ा रहे हैं। जुआ खेलनेवाले को ऊखल में डाल कर कूट रहे हैं। शराब और दूसरे नशे पीनेवालों के मुख में खौलता हुआ सीसा उड़ेल रहे हैं। परस्त्री गमन करने वाले को आरे से चीर रहे हैं। किसी दूसरे अपराधी को भट्ठी में झोंक रहे हैं।

इन भयंकर दृश्यों को देख पदमलाल का मन दहल जाता। कुछ मास तक वह ऐसे रहा जैसे बिल्ली को देख कर कबूतर सहम जाता है। पुजारीजी ने उपदेश दिया था कि कठोर तपस्या से मनुष्य का देह मिलता है और पापों के फल से मनुष्य चौरासी लाख योनियों में दुख भोगता है। कुछ दिन इस आतंक की अवस्था में उसने घर से निकलना छोड़ दिया। उसे सब ओर पाप ही पाप दिखाई देता था और धर्म

था केवल भय में ! कुछ दिन में धर्म का यह आतंक निर्बल हो पदमलाल के मन से ऐसे उड़ने लगा जैसे कच्चा रंग धूप में फीका पड़ जाता है। जिस ओर भी उसका मन आकर्षित होता, उसी ओर पाप का भय था परन्तु सम्पूर्ण संसार उसी ओर बहा जा रहा था। अपने मन में पाप के प्रति बैठे भय से उसे ग्लानि होने लगी। 'देखा जायगा'—उसने मन में निश्चय किया। समाज की निन्दा भी उसे एक प्रकार का भय ही जान पड़ा। इस भय को ठुकराने के लिये निन्दा पाने वालों के प्रति वह अपनापन अनुभव करने लगा।

पदमलाल का विवाह धूमधाम से करने के बाद, यत्न से कमाये परलोक की ओर शीघ्र जाने की इच्छा न होने पर भी, भगतजी को चल ही देना पड़ा। पिता का भय सिर से उठ जाने के बाद पदमलाल को भय और चिन्ता से चिढ़ हो गई। तीन हज़ार रुपया माहवार की आमदनी रखने वाले उच्छृङ्खल व्यक्ति के लिये पाप में सहायक बनने वालों की कमी न थी। नशे उसने सभी चखे। किसी से पीछे न रहने और न दबने का उसे गर्व था। भाग्य के सम्मुख भी सीना तान कर परास्त न होने के अभिमान में वह जुये के अखाड़े में भी आगे रहता। पुरुष के लिये उन्माद और सामर्थ्य की चरम साधन है नारी ! उसमें बंधन और सीमा क्या ?

भगतजी की प्रवृत्ति संचय की ओर थी। उन्होंने इस लोक के लिये माया और परलोक के लिये पुण्य दोनों का ही संचय यथेष्ट किया था। इस संचय से उन्हें सुख होता और उसी में वे अपनी शक्ति अनुभव करते थे। स्वयम मारकीन की धोती कुरते से शरीर ढंक और

एक मुट्ठी मोटा चावल खा कर भी चार चालों की सम्पत्ति और बाज़ार में फैले हज़ारों रुपये की सम्पत्ति का अधिकार उन्हें संतोष देता था। पैसे को उपयोग में लाने के लिये उसे हाथ से दे देने की अपेक्षा पैसे की शक्ति को अनुभव करते रहना ही उनके लिये सुख का कारण था। पदमालाल उस से के उपयोग से सुख अनुभव करता था। और यह उपयोग केवल निर्वाह मात्र के लिये बूंद बूंद के रुप में नहीं, एक धारा के रुप में वह देखना चहता था जो रुकती नहीं, बाधाओं को गिरा देती है। पदमलाल के अधिकार में आ उसकी सम्पत्ति का बढ़ना रुक गया। उसकी सम्पत्ति और व्यवसाय जितना कमा सकते थे उतना वह खर्च कर देता। अवसर पड़ने पर उससे आगे बढ़ जाने में भी उसे संकोच न होता।

बाधा उसे सह्य न थी। निर्बंध और निर्भय हो वह समाज के लिये भय का कारण बन गया। यहाँ तक कि भारत सरकार की सर्व-शक्तिमान, प्रतिनिधि पुलिस का भी यह साहस न था कि पदमलाल को गाजर मूली की भाँति उखाड़ फेंके।

× × ×

एक दिन गीता के साथ कालेज में पढ़नेवाली एक लड़की बहुत बढ़िया जम्पर पहन कर आई। उस कपड़े पर गीता का मन आ गया माँ से बहुत जिद कर कालेज जाते समय वह पाँच रुपये लेकर गई कि उस लड़की के साथ जाकर जम्पर का कपड़ा खरीदेगी। उस दिन कुछ लोग कालेज में आ लड़के-लड़कियों से हड़ताल के कारण भूखे

मरते मज़दूरों की सहायता के लिये चन्दा माँगने लगे। उन्होंने मालिकों के जुल्म से मज़दूरों के हड़ताल करने और मज़दूरों की दयनीय अवस्था की कहानी सुनाई। बहुत से लड़के-लड़कियों ने थोड़ा बहुत दिया। गीता ने माँ से पाये पाँचों रुपये दे रसीद लेली। बढ़िया जम्पर वह न पहन सकी परन्तु खेद न हुआ। फिर जम्पर की बात भी मनमें न आई।

इसके बाद वह कालेज में राजनैतिक बातें करने वाले लोगों से मिलने-जुलने और उनकी बातें सुनने लगी। अब तक गीता कालेज की पुस्तकें इस लिये पढ़ती थी कि परीक्षा में अच्छे नम्बर पाकर पास हो सके या कभी कोई कहानी उपन्यास हाथ लगा तो विनोद के लिये पढ़ लिया। इस नई संगति से जानने की इच्छा पैदा हुई, कहाँ क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, क्या होना चाहिये? वह अनुभव करने लगी कि वह बहुत सी ऐसी बातें जान रही है जो दूसरे लोग नहीं जानते। वह संतोष बढ़िया जम्पर या अच्छा गहना पहनने से कम न था। माथे पर हाथ रख वह अपने साथियों से बहस करने लगी—भारतवर्ष इतना बड़ा देश है, यहाँ की जन संख्या इतनी अधिक है; फिर वह छोटे से देश इंगलैण्ड के आधीन क्यों है? सब पदार्थ और धन श्रम से ही पैदा होते हैं फिर समाज में श्रम करने वालों की ही अवस्था सबसे बुरी क्यों है? कोई एक पदार्थ तैयार करने की मज़दूरी मज़दूर को बहुत कम मिलती है और बाजार में उस वस्तु का दाम काफ़ी अधिक रहता है। यह अन्तर ही मालिक का मुनाफ़ा और मज़दूर का शोषण है। मुनाफ़ा कमाने के लिये पूंजीपति व्यवसाय और मज़दूरों

पर अधिकार जमाता है और फिर व्यवसाय का क्षेत्र बढ़ाने के लिये दूसरे देशों पर अधिकार, यानि साम्राज्यवाद······! जानने के संतोष से आया मानसिक परिवर्तन उसके व्यवहार में भी प्रकट होने लगा। वह अपनी आयु से अधिक गम्भीरता और अधिकार से बात करने लगी। संकोच और लज्जा का स्थान आत्मविश्वास और बेपरवाही ने ले लिया। वह अपने आपको सुन्दर लड़की न समझ एक व्यक्ति समझने लगी।

आयु बढ़ने से लड़के अपनी रक्षा और चिन्ता स्वयम् करने योग्य हो जाते हैं। लड़की का विकास इसके विरुद्ध होता है। यौवन में कदम रखने पर उसके लिये रक्षा और पहरेदारी की ज़रूरत अधिक हो जाती है। परन्तु उन्नीस-बीस वर्ष की अवस्था में गीता का व्यवहार बिलकुल बदल गया। पहले वह देश-सेविका (कांग्रेस की लड़की स्वयम् सेविका) बनी और फिर कम्युनिस्टों के प्रभाव में आ कांग्रेस के जलसों और सिनेमा के सामने भी पार्टी का अखबार बेचने लगी। भीड़-भड़क्के में उसने कई बेर मज़ाक और बोली-ठोली भी सुनी। मन में क्रोध भी आया और हँसी भी आई। उपाय था केवल उपेक्षा। सोचा जो लोग अनजान और मूर्ख हैं, उनकी दुत्कारियों से परास्त हो जाय? जिसने देश को स्वतंत्र कराने और संसार से पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के काम में सहयोग देना स्वीकार किया हो, वह भला ऐसे लोगों से परास्त हो जाय?

कॉमरेड लोगों ने उसकी सहानुभूति देख एक पर एक फंदा उस पर डालना आरम्भ किया। पहले उसे चुपके-चुपके पार्टी का साहित्य बेचने

को कहा—इतनी बड़ी सरकार जिस पार्टी को कुचल डालने के लिये परेशान थी उसकी सहायता के लिये कुछ करने का संतोष गीता के लिये साधारण वस्तु न थी। फिर उन्होंने उससे अखबार बिकवाया और अब पार्टी के लिये चन्दा इकट्ठा करने के लिये उसके पीछे पड़े थे।

'भाई यह भीख माँगने का काम हमसे नहीं होता'—संकोच और बेबसी से गीता ने कहा।

अपनी खद्दर की पतलून की जेब में बायाँ हाथ धँसा और दायें हाथ से अपने माथे पर लटक आये केशों को समेटते हुये मेघनाथ बोल उठा यह बोर्जुआ स्नाबरी (भद्र श्रेणी का अहंकार) है। जब पार्टी के लिये नीड है (उद्देश्य के लिये आवश्यकता है) तो इसमें किसी की पर्सनल इंसल्ट या व्यक्तिगत अपमान का सवाल क्या? आई कैन गो विद यू (मैं तुम्हारे साथ चलने के लिये तैयार हूँ)। गीता झेंप गई।

गिरगाँव में पार्टी की शाखा 'गोल्ड वर्कर्स यूनियन' का सेक्रेटरी मज़हर पेंसिल से कागज़ पर कुछ लिख रहा था। मेघनाथ की बात उसके कान में पड़ी। उससे संतुष्ट न हो कागज़ एक ओर रख वह अंग्रेजी में बोला—'देखो कामरेड, देश की जनता की स्वतंत्रता, उनके लिये आत्मनिर्णय का अधिकार यह सब क्या तुम्हारे लिये केवल दिल बहलावे का काम है? मन चाहा, फ़ुर्सत हुई, कर लिया; न हुई न सही? पार्टी है क्या? मेरा और तुम्हारा संगठित रूप से कर्तव्य को पहचान कर उसके लिये प्रयत्न करना ही पार्टी का अस्तित्व है। ऐसी अवस्था में पार्टी के काम को पसन्द करना या न करना, उससे संकोच या अपमान अनुभव करने का अर्थ क्या? तुम्हारी व्यक्तिगत

पसन्द और जनहित में विरोध है ! इसका अर्थ केवल यह है कि तुम्हारी समझ या पसन्द गलत है ? समझती हो ?' पेंसिल उठा उसने कहा--आवेश से उसका स्वर ऊँचा होगया--'केवल स्वयम सही राजनैतिक मार्ग को समझ लेना ही काफ़ी नहीं। जनता को समझाना भी ज़रूरी है। राष्ट्रीय समस्या एक व्यक्ति की समझ और प्रयत्न से हल नहीं हो सकती। यदि ऐसा सम्भव होता तो महात्मा गांधी मुझ से और तुमसे बहुत बड़े हैं, उनके उपवास से स्वराज्य मिल गया होता। समझती हो ? यह पार्टी के लिये अग्नि परीक्षा का समय है। ब्रिटिश साम्राज्यशाही के दमन का मुकाबिला करना आसान था परन्तु उस जनता के अविश्वास और भ्रम की उपेक्षा नहीं की जा सकती जिसके लिये हमारा जीवन है। समझती हो ? आज कांग्रेस की मध्यवर्ती नेताशाही हमसे चिढ़ी हुई है। उन्होंने देख लिया कि १६४२ में हमारी चेतावनी की उपेक्षा कर जिस कार्यक्रम को उन्होंने अपनाया था, वह असफल हुआ। अपनी नीति और कार्यक्रम की असम्बद्धताओं और असफलताओं की ओर से जनता का ध्यान हटाने के लिये वे हमें ग़द्दार कह कर जनता को हमारे विरुद्ध उभार रहे हैं। कल तक चैन से जेल में बैठे जिस आन्दोलन की जिम्मेवारी लेने से वे इनकार कर रहे थे, जनता को फुसलाने के लिये आज वे उसी आन्दोलन को बड़े-बड़े नामों से पुार रहे हैं। अपनी अदूरदर्शिता से असफल हुये आन्दोलन की असफलता का कारण वे हमारी ग़द्दारी बता रहे हैं। यदि १६४२ में हमने साहस और जीवट से काम लिया था तो आज उससे अधिक साहस और जीवट की आवश्यकता है। ऐसे समय किसी भी प्रकार की उपेक्षा

और शिथिलता जनता के प्रति विश्वासघात है। समझीं?'—मज़हरने हाथ की पेंसिल गीता की नाक के सम्मुख कर दी। गीता संकुचित सी निरुत्तर और निश्चल बैठी रही। पार्टी के चन्दे की रसीद कापी माँग उसने बटुये में रख ली।

गीता चलने के लिये उठी तो मेघनाथ ने उसे सम्बोधन कर कहा—'एक मिनिट!.......ठहरो मैं भी चलता हूँ।'

'मुझे एक दूसरी जगह जाना है'—गीता ने उत्तर दिया और चल दी। मेघनाथ का चिपकना उसे भला न लगता था। बातें सब वह भी वैसे ही करता था, मास्सफोर्स प्रोलिटेरियट, पैट्रियोटिक ड्यूटी, सेल्फ डिटर्मिनेशन, एँटीइम्पिरियलिस्ट, आर्गेनाइज्ड-वर्किङ्गक्लास एंड पेज़ेएट्री जैसे मज़हर, श्रीनिवास रंगा और यूनियन के दूसरे कामरेड करते थे परन्तु उसके चेहरे पर स्वयम ली जिम्मेदारी और गुरूर की गम्भीरता में गीता को बनावट जान पड़ती। कुछ ऐसा अनुभव होता कि वह बे मतलब ही उसके निकट आने की चेष्टा करता है। उसके चेहरे पर बरसाती मेण्ढक जैसे पीलेपन और व्यवहार की नज़ाकत से गीता को खीझसी उठती थी। इसके विपरीत श्रीनिवास की बात में तर्क तो नहीं केवल धमकी रहती थी, हर बात में रूखापन वैसे ही पद्मा मालेकर भी चेहरा और कपड़े स्त्रियों के लेकिन व्यवहार बिलकुल मर्दों जैसा ऐसा ही बहुत-कुछ कटु और मधुर गीता को पार्टी के दायरे में मिलता था। इस सबको छोड़ देना भी गीता के लिये सम्भव न था। इस सीमा से बाहर वह अपना व्यक्तित्व और कुछ कर पाने का संतोष कहाँ अनुभव कर सकती थी?

तर्क से परास्त होकर और कर्तव्य मानकर गीता परिचितों में पार्टी के लिये चन्दा माँगने गई। कहीं दो घण्टे बहस करने के बाद दो रुपये मिलते और अनेक जगह लोग टालने के लिये अप्रासंगिक बातों पर बहस करने लगते। वह उनका अभिप्राय समझ कर स्वयम संकुचित हो जाती। आखिर जबरदस्ती किसी से कैसे रुपया छीन ले? वह मन में सोचने लगी न जाने दूसरे साथी कैसे रुपया माँग लाते हैं? इससे तो अच्छा हो उसकी ड्यूटी लेबर-फ्रंट (मज़दूर मोर्चे) पर लग जाय! दिसम्बर के आरम्भ से असेम्बली की मज़दूर सीट के लिये पार्टी की ओर से चुनाव का काम आरम्भ हो गया था। मज़दूर मोर्चे पर काम अधिक था। कई बेर उसे वहाँ जाना भी पड़ा। उसने मज़हर से अपनी इच्छा प्रकट की और वह मज़दूर मोर्चे पर जाने भी लगी।

* * *

गीता दिन भर घर से उड़ी रह कर पार्टी का साहित्य बेचती और चंदा माँगती। वह रिचर्सस्कालर थी इसलिये कालेज जाना केवल नाम को था। जगह-जगह उसे अनेक प्रकार का व्यवहार मिलता, अनेक प्रकार के उत्तर मिलते-निराश और खिन्नता का वह जी-जान से सामना कर रही थी। प्रति शनिवार दोपहर के बाद गीता पार्टी के दफ्तर जाती। उस दिन पार्टी का साप्ताहिक पत्र 'जनयुग' केन्द्रीय दफ्तर से छप कर आता है। पिछले सप्ताह की कापियों का हिसाब दे, नई क़ापियाँ लेती और चंदा भी जो कुछा मिलता, दे आती। चंदे का हिसाब था मज़हर के हाथ में और अखबार का हिसाब मेघनाथ रखता था।

'कामरेड इस दफ़े जनयुग की नौ कापियाँ कम बिकीं, क्या बात है ?'—मुस्करा कर मेघनाथ ने पूछा। उसका मुस्कराना गीता को भला न लगता था। इसलिये उस ओर देखे बिना उत्तर दिया—'भाई' बड़ा झंझट है। यह नौ कापियाँ देने के लिये फोर्ट का चक्कर लगाना पड़ता है। अठारह आने मिलते हैं और हमारी जेब से आठ आने निकल जाते हैं।

'लेकिन······'—मेघनाथ उत्तर देना चाहता था परन्तु काग़ज़ों पर झुका सिर उठा कर मज़हर बोल उठा—'ह्वाट ? (क्या ?) यह बनिये का बिज़नेस है क्या ? नौ जगह पार्टी का मैसेज पहुँचता है, यह कुछ नहीं ? क्या बातें किया करती हो कामरेड' ?······वह गीता की चन्दे की कापी पलट कर हिसाब गिन रहा था—'ये नौ रुपये चौदह आने कैसे ?'

'दस रुपये का नोट था'—गीता ने उत्तर दिया—'एक कापी अखबार की वेची थी। चेंज पूरा नहीं निकला। भले आदमी ने नौ रुपये चौदह आने की रसीद लेली।'

मज़हर उस रसीद को ध्यान से देख रहा था। हाथ में थमी पेंसिल से सिर खुजा कर बोला—'पदमलाल भावरिया!·········ये-ये तो बड़े हज़रत है ! कहाँ मिल गया तुम्हें ? कैसे दे दिया इसने ?'

थकावट से फर्श पर बांह टेक गीता ने उतर दिया—'होंगे ! शायद मज़ाक ही करने आये थे। चेंज नहीं था तो कहने लगे, रहने दीजिये, आपकी नजर है। हमने रसीद काट दी।'

मज़हर, रंगा और दूसरे साथी जोर से हँस दिये। परन्तु मेघनाथ

ने गम्भीरता से कहा—'ऐसे नहीं लेना चाहिये। इससे पार्टी के बारे में लोगों का क्या खयाल होगा ?'

'साले को चप्पल से नहीं मारा'—श्रीनिवास ने पूछा। 'ऊँह बाज़ार में तमाशा बनाने से क्या फ़ायदा ? बम्बई ऐसे शौकीनों से भरा पड़ा है।'—गीता ने उपेक्षा से उत्तर दिया।

'बड़े हज़रत हैं ये !······पदम भावरिया मशहूर गुण्डा है, लखपति गुण्डा !' मज़हर ने कहा—स्कूल में हम लोगों के साथ पढ़ता था। बाप इनके भगत जी मशहूर थे। बेटा गुण्डागिरी में नाम कमा रहे हैं। इससे बचकर रहना। खराब आदमी है। जो न कर जाय वही गनीमत !'

गीता चुप सुन रही थी रंगा बोल बठा—'यह क्या ? उससे कांटेक्ट बनाओ जी !···पार्टी का सिम्पेथाइज़र बनाओ। उसके ज़रिये हैं। पार्टी की सहायता भी कर सकता है।'

'धत्त !'—गीता ने मुँह बना कर कहा।

'धत्त क्या ?'—रंगा का स्वर ऊँचा हो गया—'जिस बात से पार्टी को सहायता हो उसमें धत्त क्या ? गर्ल्स कैन मेक कंटेक्टस मोर ईज़ोली। (लड़कियों के लिये परिचय या सम्बन्ध बनाना ज़्यादा आसान है।)

'वाहजी' ?—गीता का स्वर तीखा हो गया—'किसी लड़की का कुछ सेल्फ़ रिस्पेक्ट (आत्म सम्मान) भी तो होता है ?'

हाथ उठा रंगा ने विरोध किया—'दिस इज़ बोर्जुआ एण्ड कैपिटे-

लिस्ट कंस्पेशन ऑफ़ मोरेलिटी (यह केवल पूंजीवाद और मध्यवर्ग की आचार धारणा है)।

'तो क्या लड़कियाँ पार्टी के लिये अपने आपको बचती फिरें'—चिढ़कर गीता ने अंग्रेजी में पूछा—

अनीसा ने भी अंग्रेज़ी में ही विरोध किया—'परिचय बढ़ाना या मित्रता करना अपने आपको बेचना नहीं है।'

'ज़रूर है'—गीता ने अखबारों की गड्डी पर हाथ मार कर अंग्रेज़ी में उत्तर दिया—'ज़रूर है। यदि आप परिचित और मित्र से फ़ायदा उठायें तो यह ज़रूर अपने आप को बेचना ही है, और कुछ नहीं तो अपनी संगति का मूल्य वसूल करना है। इसमें आत्मसम्मान क्या है?'

मज़हर से न रह गया उसने भी अंग्रेज़ी में ही कहा—'आत्म सम्मान······!' एक मज़दूर कामरेड जो पार्टी का मराठी अखबार अपने पड़ोस में बेचता था इस अंग्रेज़ी से उकता गया। हाथ के अखबार फर्श पर पटक वह क्रोध में चिल्ला उठा—'क्या देश का स्वराज लेगा तुम लोग? तुमारा तो दिमाग मांझे इंगरेजी, जबान इंगरेजी, हरबात इंगरेजी!'—उसने मज़हर की ओर अभियोग लगाने के लिये घूर कर देखा।

मज़दूर कॉमरेड की पीठ पर हाथ रख मज़हर ने उत्तर दिया। 'इसमें नाराज़ होने की क्या बात है कॉमरेड? दस जगह का आदमी इकट्ठा होता है, एक दूसरे की भाषा नहीं भी जानता तो क्या होगा? अंग्रेज़ ने अपने मतलब से सब हिन्दुस्तान को अंग्रेजी में बाँधकर

एक कर दिया। हम भी उससे अपना मतलब निकलते हैं। देखो भाई, कांग्रेस में भी तो अंग्रेजी चलता है। लेकिन तुमारा जैसा साथी रोज़-रोज़ चपत लगायेगा तो सबको अकल हो जायगा। चुप रहेगा तो कुछ नहीं होगा।'

मज़दूर कॉमरेड को संतुष्ट कर मज़हर ने अनीमा और गीता की ओर देखा—'सेल्फ रिस्पेक्ट या आत्म सम्मान क्या है? खुद की नज़र से इज्जत कि दूसरे के सामने बड़ा होने का घमण्ड? (वह गुजराती में बोलने लगा यदि तुम्हें निश्चय है कि तुम अनुचित काम नहीं कर रही, तो दूसरों की राय से मतलब? प्रायः प्रश्न तो रहता है दूसरों की नज़र में गिरजाने का! लोग तुम्हें गद्दार कहते हैं तो फिर क्या करेगी? पूंजीवाद में आचार कुछ नहीं; उसका आधार केवल धन का सम्मान है.......।'

मज़दूर कॉमरेड ध्यान से सुन रहा था। बात काट कर मराठी में कहने लगा—'पूंजीवाद में तो पैसे का सम्मान है। यह कितनी मेहतरानियाँ, कितनी मावली स्त्रियाँ घुटने से ऊपर धोती का कांछा कसे, खुले बदन सड़क साफ़ करती हैं, मन-मन बोझ टोकरी में ढोती हैं। किसी की आँख में नहीं खटकता, किसी को लज्जा नहीं मालूम होती! किसी सेठानी की धोती बालिस्त भर उठ जाय तो बम्बई में आग लग जाय! तुम अखबार बेचती हो, कांग्रेस के लोग बात बनाते हैं! सब कुंजड़ियां तरकारी बेचती हैं, किसी के पेट में दरद नहीं होता, क्यों?.........'

उसे हाथ के संकेत से चुप करा मज़हर ने शांति से कहा—'हमें इस विषमता का आधार भूत सिद्धान्त समझना चाहिये। सदाचार की

भी एक डाइलैक्टिक्स है..........'

गीता ने समझा अब यह एक घण्टे तक व्याख्यान देगा। झट से बटुआ और अखबार सम्भाल उठते हुये उसने कहा—'मुझे बहुत देर होगई। मां से जल्दी लौटने को कह कर आई थी.......!'

× × ×

रास्ते भर गीता पार्टी दफ्तर में हुये तर्क को अपनी कल्पना में साकार रूप दे, जीवन की घटनाओं के रूप में सोचती आई। घर लौटी तो इतनी उद्विग्न थी कि थकावट जान पड़ी। वह अपने बिस्तर पर लेट फिर कल्पना में उसी तर्क के क्रियात्मक रूप पर उधेड़-बुन करने लगी। छोटा भाई शामू ज़ीने पर धमधम करता आया और फर्श पर जूते पटकता रसोई में पहुँच माँ से खाना माँगने लगा। गीता को कुछ मालूम न हुआ। माँ ने जीमने के लिये पुकारा। विचारों की उद्विग्नता से मस्तिष्क में भर गई बेचैनी के कारण उठने को मन न हुआ। गीता ने कह दिया—'भूख नहीं है।'

जवानी में लड़कियों को भूख न लगने या तबीयत कुछ खराब होने की शिकायत प्रायः ही होती है परन्तु गीता को ऐसा न होता था। इक्कीस बरस की आयु हो जाने पर भी वह अपने छोटे भाई शामू के साथ 'छोटा गणेश बाड़ी' से पैदल परेल और दादर तक जाने का दम भरती थी। गीता की माँ को इस बात का गर्व भी कम न था। बिरादरी में जब कभी उनकी लड़की के इक्कीस बरस तक कुंवारी रहने की चुगली घूम-फिर कर उनके कान तक पहुँचती तो वे उपेक्षा के गर्व

से कह देतीं—'भाई, एक ही हाथ की पाँच उंगलियाँ भी एक सी नहीं होतीं। टसके हुये बर्तन की तरह सभी की खबरदारी नहीं की जाती,.......।'

गीता के मुख से 'भूख नहीं' सुन माँ के स्वर में चिंता का पुट आ गया—'क्या ? सांझ को जाड़े में फिरी होगी ? कितनी बार तो कह चुकी हूँ, सुबह-साँझ की सर्दी से ज़रा बचकर ! लेकिन यह तो नगर नाउन है। शहर भर की परिक्रमा कर स्वराज्य का अलख जगाये बिना इसे चैन कहाँ !......क्या हुआ सिर में......?'

'तुम्हें तो यों ही सुपने आने लगते हैं।.......एक जगह गई थी, वहाँ लोगों ने बहुत कुछ खिला दिया।'—गीता ने उत्तर दिया।

'हाँ, हाँ अकेली मिठाई खाओ ! अच्छा है और तबीयत खराब हो..........'श्यामू बोल उठा।

माँ ने बनावटी क्रोध में थप्पड़उठा डाँट दिया—'खबरदार, गधा ! मारूँगी !'

'हाँ-हाँ हमको पैसा नहीं देती हो। बैन को छिपा-छिपाकर देती हो। तभी तो वह सहेलियों के साथ होटलों में दावतें खाती है। हम क्या सौत के बेटे हैं ?'—शामू दिखावे का मान करने लगा। गीता जान बचा लेटी रही। शामू लड़ता रहा—'हाँ हम सिनेमा जायँ तो पाँच आने में और बेन को सवा रुपया मिलता है। कमाकर तो हमीं खिलायेंगे। यह तो चल देगी सब कुछ समेट कर......।'

गीता चुप रही। किसी और दिन इस तरह की बात का जवाब दिये बिना न रहती थी और फिर भाई-बहन का झगड़ा होता। आज इसके

मन में समा रहीं थीं, मज़हर और रंगा से हुये तर्क की सजीव कल्पनायें। लड़की या स्त्री का आत्म-सम्मान क्या ? सम्मान अपनी दृष्टि में या दूसरों की दृष्टि में गिर जाने का भय ? अखबार में पढ़ी एक बात उसे याद आ रही थी—जर्मनी में लड़कियों और स्त्रियों ने अपने चुम्बन बेच-बेच कर युद्ध के समय देश की सहायता के लिये रुपया इकट्ठा किया था और जापान में वेश्यावृत्ति द्वारा देश की सहायता के लिये धन कमाया था। इस देश में ऐसे काम को किसी भी भावना से नहीं सहा जा सकता। क्या यह स्वयम देश और समाज का पतन नहीं है ? समाजवादी रूस में क्या इसे सहन किया जा सकेगा ; कभी नहीं ! परन्तु इस देस में बिना जाने-बूझे पुरुष को पति रूप से स्वीकार कर लेना क्या स्त्री का आत्मसम्मान है ? कोई स्त्री विवश हो वेश्या बनती है कोई विवश हो पतिव्रता·········। भावरिया गुण्डे ने क्या नौ रुपये चौदह आने उसका मोल दिया था ? जैसे कामिला मोजीवाला बनवारी के साथ सिनेमा जाने से इसलिये इनकार न कर सकी कि बनवारी ने उसके भाई की सहायता की थी।·······सेलिंग बन्स कम्पनी (अपनी संगति का मूल्य वसूल करना) ? पास बैठ कर दिल बहलाना, मुस्कराकर खुश करना ; हाथ मिलाकर दिल बहलाना या कमर में हाथ डालने देना ? प्रयोजन वही है। क्या है स्त्री भी ? उसका मूल्य पुरुष को संतोष देने में ही है ? यदि अपने संतोष के लिये वह कुछ करे तो मैं उसे बुरा न कहूँगी ········ अपने संतोष की बात मन में आने पर सहसा मेघनाथ और दूसरे कामरेड दृष्टि के सामने आ गये और फिर उनके बीच गुण्डा भावरिया·········खतरनाक ! जो चाहे कर गुज़रे !

ऐसा मालूम हुआ जैसे बरसाती मेंढकों के समूह पर चील आ पड़ी हो।.......भावरिया जो चाहे कर गुज़रे ! जान पड़ा इस दैत्य का पंजा उसके अपने सम्पूर्ण शरीर से भी बड़ा है और वह उसमें छटपटा रही है.......'क्लिक्लिलारी बौम !' उसके कान के समीप मुँह कर शामू ज़ोर से चिल्ला दिया।

साधारणतः इस हरकत का उत्तर होता कि गीता एक धौल शामू की पीठ पर जमाती। वह कुछ और उपद्रव करता; परन्तु मन की इस अवस्था में खीज से ऊँ-हूँ कर वह निश्चल रह गई। शामू निरुत्साहित हो दूसरी ओर चला गया और सिनेमा की एक तर्ज गुनगुनाने लगा—'तुमहीं ने मुझको प्रेम सिखाया, सोये हुये हृदय को जगाया ! तुमीं हो रूप सिंगार बालम !

गीता बिजली के चकाचौंध प्रकाश से आँखों को बचाने के लिये बाँह की ओट किये लेटी रही। उस मानसिक क्षोभ में शामू का गाना जाने क्यों मीठी थपकी जैसा लगा और मन ने यह भी कहा कि यह धोखा है ! वह स्त्री और पुरुष की बात सोच रही थी; पुरुष के चाहने की, उसके संतोष की और स्त्री की कातरता और बेबसी की। बालम के रूप सिंगार होने की और खूंखार होने की ! स्त्री बेबस और कातर क्यों..........और क्यों वह इसे सहे जाती है..........?

× × ×

चुनाव का आवेश शहर भर में फैल रहा था। कांग्रेस के चोटी के लीडरों को बुला कर बम्बई में स्थान-स्थान पर उनके व्याख्यान

कराये जा रहे थे। मुस्लिम क्षेत्र के वोटों के लिये कांग्रेस की लीग से टक्कर थी परन्तु कांग्रेस के नेता लीग से अधिक क्रोध प्रकट कर रहे थे कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति क्योंकि कम्युनिस्ट लीग की पाकिस्तान की माँग के सिद्धान्त का समर्थन १९४२ से कर रहे थे। कम्युनिस्टों को देशद्रोही गद्दार और मुस्लिम-लीग के पिट्ठू कहा जाता। चौपाटी के मैदान में होने वाले इन व्याख्यानों से उत्तेजित जनता कम्यूनिस्टों को गालियाँ देती हुई जाती। उत्तेजित जनता चौपाटी के समीप सैण्डहर्स्ट रोड पर कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय दफ्तर पर कई बेर ईंट-पत्थरों से हमला कर चुकी थी। इन परिस्थितियों में गीता भी मन ही मन उत्तेजित हो जाती। बम्बई के भद्र श्रेणी के इलाकों की अपेक्षा मज़दूर क्षेत्रों में कम्यूनिस्टों की स्थिति मज़बूत थी। वहाँ उन्हें पिटने का डर न था। गीता मन में ग्लानि अनुभव करने लगी—ऐसी अवस्था में शहर का काम छोड़, मज़दूर क्षेत्र में छिपने की कोशिश करना कायरता नहीं तो क्या है ?

तारीख २३ जनवरी को ट्राम और बस की हड़ताल के कारण वह परेल न जा सकी थी। २४, को सुबह ही उसने समाचार पत्र में कम्यूनिस्ट पार्टी के केन्द्रिय दफ्तर पर दंगे का संक्षिप्त समाचार पढ़ा। उसी समय उठ कर वह सैंडहर्स्ट रोड की ओर चलदी। जो कुछ उसने पढ़ा था उससे बहुत अधिक देखा—मुख्य दरवाज़े के एक ओर राशन की और दूसरी ओर पार्टी की पुस्तकों की दूकानें जल गई थीं। तीसरी मंजिल तक सब जगह आग के चिह्न थे। खिड़कियों के काँच टूट कर वह दाँत टूटे मुख की भाँति विरूप लग रही थीं। दीवारों पर जगह-

जगह आगकी कालिख थी और कई जगह आग बुझाने के इंजन के पम्पों से वह कालिख दीवारों पर बह गई थी और जान पड़ता था, मार खाकर मकान फूट-फूट कर रोदिया हो। सुना, साठ साथी बुरी तरह ज़ख्मी हुये हैं। किसी की जबड़े का हड्डी टूटी है, किसी का माथा फटा है, और कई लोगों के हाथ पाँव टूट गये हैं। ज़्यादा नुकसान प्रेस में हुआ था। प्रेस॰ में जा उसने देखा—बड़ी-बड़ी मैशीनें टूटी पड़ी थीं। सुना, एक लाख का नुकसान हुआ है। गीता के मनने कहा—कितने श्रम से माँगा हुआ रुपया? मनका आवेश वश में रखने के लिये वह बोल न पाई और ओठ दबाये लौट आई। मन उसका प्रतिहिंसा से जल रहा था—यह खद्दर के सफ़ेद-सफ़ेद कपड़े पहन कर अहिंसा का उपदेश देने वाले बगुला भगत !..........पार्टी को चाहिये अपने मज़दूर साथियों की टोलियाँ ले इन सबके गंजे सिर फुड़वा दे और इनके महलों और दफ्तरों में आग लगवा दे !

दूसरे दिन संध्या वह मेम्बरों और पार्टी से सहानुभूति रखनेवालों की सभा में परेल गई। घटना का वर्णन ब्योरे से सुनाया गया। कई साथी उसी की भाँति प्रतिहिंसा की आग से जल रहे थे। उन्होंने खड़े होकर कम्यूनिस्टों को ग़द्दार कहने वाले कांग्रेसी नेताओं पर इस घटना की जिम्मेवारी दे उन्हें भला बुरा कहा और भविष्य में बदला लेने के कार्यक्रम पर ज़ोर दिया। गीता ने उनका समर्थन किया।

प्रान्तीय कमेटी के तीन मेम्बर भी उपस्थित थे। कामरेड हारे ने अपने ढीले चश्मे को सम्भालते हुए अंग्रेजी में कहा—'यह सब मूर्खता है। अगर हम ऐसा करेंगे तो शरारत करने वालों का और

अँग्रेज़ सरकार की मंशा पूरी करेंगे। जिस भीड़ ने पार्टी पर हमला किया उसमें सभी तरह के आदमी थे। कौन कह सकता है इस अवसर से लाभ उठाने के लिये मजदूर श्रेणी के विरोधियों ने ही इस उत्पात को यह विकट रूप न दिया हो? हमें खुद जाहिल नहीं बनना, जाहिलों की आँखें खोलनी हैं।' उँगली उठा कर हारेने पूछा—'अगर हम बदला लेंगे तो क्या होगा? होगा यह कि कांग्रेस वाले हमसे बदला लेंगे और हम फिर उनसे बदला लेंगे। अँग्रेजों की पुलिस हम लोगों में शान्ति स्थापित कराने आयेगी। पुलिस से कांग्रेस और हम दोनों ही मार खाँयगे? यही चाहते हो तुम?······तुम्हें अंग्रेज़ों की पुलिस पर कांग्रेस से ज़्यादा विश्वास है? आज कांग्रेस और लीग बेवकूफ़ी कर अँग्रेजों को पंच बना रहे हैं, वही बात हम करें? कांग्रेस है क्या? कल हम तुम कांग्रेस के मेम्बर थे। हमारे मेम्बरी के प्रतिज्ञापत्र में कांग्रेस मेम्बर होना ज़रूरी शर्त थी। जितने कांग्रेस मेम्बर हमने बनाये हैं, किसी दूसरी कांग्रेस पार्टी ने नहीं बनाये। हम कांग्रेस को समझा सकते हैं उसे तोड़ नहीं सकते·········।'

गीता और उसकी राय के कॉमरेड पर ठण्डा पानी पड़गया। प्रान्तीय सेक्रेटरी ने उठकर अपने वक्तव्य में प्रेस को फिर जल्दी-से-जल्दी ठीक करने के लिये फण्ड के लिये अपील की। कितने ही साथी मेम्बरों ने अपना एक-एक मास का पूरा वेतन दे दिया। कई मज़दूरों ने महीने भर की मज़दूरी देने का वायदा किया और कई साथियों ने अपने पास से रकमें दीं। गीता के पास रुपया न था। उसने गले से लाकेट उतार कर दे दिया। दूसरी लड़की ने चूड़ियाँ दे दीं। पद्मा

मालेकर ने अपना एक मात्र शेष जेवर, सुहाग की कण्ठी उतार दी।

सेक्रेटरी को संतोष नहीं हुआ उसने कहा—'यह सब आपका अपना रुपया है। यह देदेना कोई बात नहीं। यह बताइये आप जनता से मांग कर क्या लायेंगे। जनता को कैसे समझायेंगे कि यह आपस में सिर फोड़ने की नीति स्वतंत्रता और देशभक्ति का मार्ग नहीं, गुलामी और देशद्रोह का मार्ग है। पार्टी के प्रति जनता का भ्रम आप कैसे दूर करेंगे............?'

फिर रकमें बोली जाने लगीं। गीता ने दो सौ रुपया इकट्ठा करने के प्रण के साथ भविष्य में सम्पूर्ण समय पार्टी के काम में देने का वायदा किया। एक घंटे में साढ़े छः हज़ार। प्रान्तीय सेक्रेटरी ने सूची पढ़कर सुनाई और फिर गम्भीरता से कहा—'साढ़े छः हज़ार रुपया कुछ भी नहीं है। परन्तु मुझे संतोष है कि इस तीन सौ की भीड़ में अधिकांश मज़दूर, विद्यार्थी और पूरा समय पार्टी को देने वाले लोग हैं जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है। यहाँ सम्भवतः दो-चार को छोड़ कर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो तीन सौ रुपया माहवार कमाता हो। फिर भी हम साढ़े छः हज़ार वायदों और नक़द के रूप में इकट्ठा कर सके हैं यह हमारे साथियों के दृढ़ निश्चय का सूचक है...।

गीता का लॉकेट, अनीमा की चूड़ियां, मोजीवाला के कान के कांटे और पद्मा की कण्ठी हाथ में ले उसने पूछा—'गर्ल कामरेड्स, यह गहने आपने दिये हैं। आप घर जाकर क्या उत्तर देंगी?'

अनीमा ने उत्तर दिया—'कह दूँगी, खो गये।'

गीता ने उत्तर दिया—'मैं कह दूँगी पार्टी को दे दिया है। जो

होगा देखा जायगा।'

मोजीवाला ने भी गीता का समर्थन किया।

सेक्रेटरी ने अनीमा की चूड़ियां लौटाने के लिये आगे बढ़ाई—'अगर तुम्हें घर में सच बोलने का साहस नहीं है तो यह चूड़ियाँ हम नहीं लेंगे। अनीमा का चेहरा लाल हो गया। खड़ी हो उसने कहा—'मैं घर में ठीक बातें कह दूँगी'—और बैठ गई।

सब लोगों ने खड़े हो, मुट्ठियाँ तान, अनेक प्रकार के परुष और मधुर स्वरों के योग से कम्युनिस्टों का अन्तरराष्ट्रीय गीत गाया:—

'उठ जाग ऐ भूखे बन्दी, अब खींचो लाल तलवार।
कब तक सहोगे भाई, ज़ालिम का अत्याचार॥
तुम्हारे रक्त से रंजित क्रन्दन, अब दस दिश लाया रंग।
ये सौ बरस के बन्धन, एक साथ करेंगे भंग॥
यह अन्तिम जंग है जिसको, जीतेंगे हम एक साथ।
गाओ इंटर-नेशनल, अब स्वतंत्रता का गान॥

× × ×

पुत्तूलाल, अशफ़ाक पंजाबी, रेवती और सुकुल को अपनी मोटर में ले भावरिया घुड़दौड़ से लौट रहा था। भावरिया ने दांव जीता था इसलिये 'विरेंशरिल' बार में रुक कर उन लोगों ने एक-एक पेग ह्विस्की ली। उस जगह की चुप्पी और कायदा इन लोगों को भाया नहीं।—'यार क्या; ऐसा मालूम होता है जैसे हसपताल में आ गये!......न बातचीत न हू हबक !'—पुत्तुलाल बोला।

'हां लाला'—पंजाबी ने समर्थन किया—'शराब क्या है, जैसे दवाई पी रहे हों! सेठ, अपने को तो ठर्रे में ही मज़ा आता है'—अस्तीने चढ़ाते हुए उसने कहा—'और असली चीज़ तो है, गाँव की खिंची हुई......क्यों पण्डित ? क्या कहने ?'—भंवे टेढ़ी कर उसने सुकुल को सम्बोधन किया।

रेवती को चौपाटी के समीप काम था। इसलिये वे लोग उधर ही चले। प्रसंग था कि भावरिया की जीत मनाने के लिये क्या शुग़ल हो ?—'यारो फिल्म ही देख डालो !'—पंजाबी ने प्रस्ताव किया।

'अमा यार छोड़ो भी'—सुकुल ने भांजी मार दी।

'मुजरा देख लिया जाय ?'—भावरिया ने सुझाया।

'हुं, क्या बाजारू छोकरी !......उतरी हुई जूती ! सेठ सब जगह सस्ता देखता है।'—पुत्तूलाल बोल उठा—'उस दिन दस रुपया में कलिज की छोकरी मांगता था !.........क्यों पण्डित ?'—सुकुल से समर्थन पाने के लिये उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

भावरिया को बात लग गई। अपनी छंटी हुई मूंछों पर हाथ रख बोला—'हम दस सौ देते हैं,......लाओ ! तुम लाओ कालिज की छोकरी ! बहुत छोकरी लिया है तुम ने कालिज की, क्यों लाला ?'—पंजाबी ने भावरिया का साथ दिया—'भाई ऐसा न कहो लाला, रुपया खर्च करने में हमारा सेठ किस से पीछे है?'

'सो तो है भाई'—सुकुल ने पुत्तूलाल से हाथ मिलाने के बाद पंजाबी का भी समर्थन किया।

भावरिया की खिन्नता का विचार न कर पुत्तूलाल ने पंजाबी को

जवाब दिया—'हम हाथ डालेंगे तो छोकरी कभी निकल नहीं सकती। हम दस रुपया में सौदा नहीं करते मियाँ।.........शौक फोकट में नहीं होता।'

उस दिन रेस में भावरिया साढ़े तीन हज़ार जीता था और पुत्तूलाल दो हज़ार हार आया था। अशफ़ाक और सुकुल का भावरिया की खुशामद करना उसे पसन्द न आया। 'हमें भी रेवती भैया के साथ चौपाटी पर उतार दो!' उसने भावरिया की ओर देखे बिना कहा। पंजाबी और सुकुल को साथ लेने के लिये उसने प्रलोभन दिया—'मोमिन के यहाँ दो पेटी रियासती आई हैं। क्यों भाई सुकुल? क्यों भाई मियाँ?.........चलते हो?'

भावरिया भी पुत्तूलाल की चिरौरी करने को तैयार न हुआ—'जहाँ कहो उतार दें।.......चौराहे पर?'—नाके पर आ उसने गाड़ी धीमी कर दी। गाड़ी थमने से पहले पूत्तूलाल ने उंगली से 'बस स्टैण्ड' की ओर भावरिया को दिखा कर कहा—'सेठ वह खड़ी है सामने!.......बस की इंतजार में। तुम्हारे भाग से जाओ, हो तो ज़ोर आजमा लो!.......न हो सके, हमसे कहना। साली को घर से उठवा कर भगा देंगे। दोस्त का दिल तो रखेंगे।' सब लोग पुत्तूलाल के साथ ही उतर गये भावरिया इस हेठी से होंठ चबा कर रह गया।

भावरिया ने सामने देखा बगल में बटुआ दबाये गीता गाड़ी की प्रतीक्षा में बस के अड्डे पर खड़ी थी। चौपाटी के समुद्र पर उतरते सूर्य की किरणें उसके चेहरे पर पड़ उसके गेहुआँ रंग को भड़का रहीं थीं। समुद्र की चंचल और वेगवान तरंगों की संगति से प्रचंड हुई

वायु उसकी साड़ी को छीनने के प्रयत्न में शरीर से और सटाकर लिपटाये दे रही थी। इससे शरीर की आकृति की रेखायें अधिक स्पष्ट हो रही थीं। भावरिया ने पल भर गहरे सोच में उसकी ओर देखा। औरत की ऐसी मजाल तो न थी कि उसे धत्ता बता जाय; परन्तु गीता ने उस दिन झपाटे से रसीद काट उसे झेंपा दिया था। और उसके साथी भी जाने इस लड़की को क्या समझते हैं।

भावरिया ने मोटर को घुमा बसस्टैण्ड पर फुटपाथ के साथ मिला कर बिलकुल गीता के सामने खड़ा कर दिया। खिड़की से झुककर उसने गीता को सम्बोधन किया—'नमस्ते, कहाँ जायेगी? ' ···बसमें तो देर होगी। गाड़ी है। उधर ही जा रहे हैं। आइये, पहुँचा दें।'

गीता ने पहचाना और सकपका गई परन्तु आशंका प्रकट न कर उसने उत्तर दिया—'अभी आजायगी बस·······जल्दी नहीं है। आप क्यों तकलीफ़ करेंगे।'

'नहीं कुछ तकलीफ़ नहीं है। उधर ही जा रहे हैं। आपको गाड़ी की प्रतीक्षा में देखा।'—भावरिया ने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया।

असमंजस में गीता की आँखों के सामने सड़क और चौपाटी का मैदान समुद्र की लहरों की भाँति चंचल होगया। भावरिया के व्यवहार में कुचेष्टा का कोई संकेत न था। गीता इनकार करे तो किस बात पर? भय कैसे दिखाये?—'बहुत मेहरबानी है, धन्यवाद!'—वह गाड़ी में बैठ गई।

दोनों एक साथ आगे की सीटों पर बैठे थे। दोनों चुप। गीता अब भी सोच रही थी—'क्या ठीक हुआ?·········आखिर कोई

क्या कर लेगा ? उसके सोचते-सोचते गाड़ी चर्चगेट पहुँच गई। भावरिया ने गाड़ी धीमी कर पूछा—'कहाँ जाइयेगा ?'

'जहाँ चाहे रोक दीजिये। मुझे उधर कैपिटल के पीछे दो एक जगह जाना है। आगे पैदल चली जाऊँगी। कुछ जल्दी नहीं है।'—गीता ने उत्तर दिया।

'आज आप अखबार नहीं साथ लाई ? आपका अखबार बहुत अच्छा था।'—भावरिया का चेहरा बिलकुल शान्त और गम्भीर था।

'आपको अच्छा लगा ?'—उत्साह से गीता ने उसकी ओर देखा—'पढ़ियेगा तो दूँगी आपको।.......कहाँ पहुँचा दूँ ?'

'हमारा मकान तो उधर दूर है फोरास रोड की तरफ़। ऐसे ही फिर मिलियेगा तो लेलेंगे। आपको जल्दी नहीं है तो एक प्याला चाय पीलें, यहाँ 'पुरोहित' में ? फिर जहाँ कहिये, गाड़ी में पहुँचा देंगे।'

गीता कह चुकी थी जल्दी नहीं है। इनकार कैसे करती ? उसने अनुमति प्रकट की। पुरोहित रेस्टोराँ के सामने गाड़ी रोक भावरिया दाहिने दरवाज़े से उतरा और गीता के लिये बांया दरवाज़ा खोल दिया। इस शिष्टता से गीता क्या भय दिखाती ? परन्तु मज़हर की बात निरंतर मन में थी कि भावरिया खतरनाक गुण्डा है। गीता अपना बटुआ बगल में दबाये भावरिया के साथ-साथ चल दी।

सफ़ेद वेस्ट और पतलून पहने, काली नेकटाई लगाये बॉय ने आकर सलाम किया। 'प्राइवेट' भावरिया ने बाय को उत्तर दिया। उस नई जगह में वह शब्द सुन गीता को कुछ आशंका सी हुई। उसने आसपास नज़र दौड़ाई, चारों ओर कुर्सियों पर भले और अमीर व्यापारी

बैठे थे। जीने पर लिखा था, 'परिवारों के लिये' (For Families) बॉय के पीछे-पीछे वे ऊपर गये। भावरिया एक कोने की मेज़ की ओर बढ़ा। बॉय ने पर्दा खींच दिया। पर्दे के दूसरी ओर ही और भलेमानुस भी बैठे थे। अन्तर या दूरी केवल पर्दे की थी।

कुछ नमकीन और मीठा आया और चाँदी की चायदानी में चाय। यों बम्बई में हर चौथी दूकान रेस्टोराँ और होटल है। गुजराती, मराठी विश्राम गृहों और उपहारगृहों में और ईरानी रेस्टोराँ में गीता ने पचासों दफ़े चाय पी थी। वहाँ के कोलाहल, ठोस मजबूत प्यालों और कढ़ी हुई गाढ़ी चाय से वह परिचित थी। वहाँ साथियों से गप्प लगाती हुई या बहस करती हुई वह घण्टे भर निश्चिन्त बैठी रहती। लेकिन इस अमीर आदमियों के होटल की शान्ति में उसे विश्राम न मिल रहा था। स्वयम भावरिया ही उसे उस स्थान पर बेमौक़ा जान पड़ रहा था।

भावरिया भी चुप और गम्भीर था। कारण चाहे उस स्थान का कायदा हो या यह नई संगति। स्त्रियों के सम्बन्ध में उसका ज्ञान और अनुभव कम न था। परन्तु यह कुछ नये ढंग की लड़की जान पड़ी। उसने अब तक चालाक स्त्रियाँ देखी थीं। पहले लुभाकर संकोच और भय दिखाने वाली। जिनकी संगति एक सौदा थी और वे उसका अधिक से अधिक मूल्य चाहती थीं। गीता कुछ दूसरे ढंग की जान पड़ी। बाँह उठा कर सड़क पर अखबार बेचनेवाली परन्तु ऐसा ओछा काम करने की दीनता उसमें न थी। स्त्री का वह संकोच और कातरता जो पुरुष को उसके पुरुषत्व की याद दिलाती है, वह भी नहीं। चेहरे पर

ऐसा सौन्दर्य भी नहीं कि तस्वीर उतार लें परन्तु देखने को मन ज़रूर चाहता था। भावरिया मन ही मन दूसरी स्त्रियों से उसकी तुलना कर मानसिक दाँवपेंच में उलझा चुप था। उसे चुप देख गीता ही बोली—

'आपका मकान कहाँ है ?······आपके यहाँ क्या रोजगार है ?' आदि आदि !

भावरिया ने भी पूछा—'आपका मकान कहाँ है ?'

—'छोटा गणेशबाड़ी में'

—'आप कालेज में पढ़ती हैं ?'

—'जी हाँ और राजनैतिक काम भी करती हूँ।'

—'कैसा काम ?'

—'जैसे कांग्रेस काम होता है'—अपने उत्तर को स्पष्ट अनुभव न कर उसने कहा—'हमारे अखबार में जैसी बातें हैं।'

—'कांग्रेस में भावाजी भी बहुत बड़े आदमी हैं। उनके यहाँ मिलों की एजेंसी है और मूँगफली का बहुत बड़ा काम है ? हमारे मिलने वाले हैं।'

गीता भावाजी के नाम से परिचित थी। अपनी बात स्पष्ट करने के लिये उसने कहा—'मैं कम्यूनिस्ट पार्टी में काम करती हूँ।'

'आज कल बहुत लड़कियाँ भले घरों की हस्पताल में, दफ्तर में, फौज में काम करती हैं।'—भावरिया ने जानकारी दिखाने के लिये कहा—'आज बहुत लड़कियाँ रेस देखने आई थीं। आप भी रेस में जाती हैं ?'

नहीं कभी नहीं गई।'—मन की हँसी रोक गीता ने उत्तर दिया।

'रेस में बहुत बड़े-बड़े साहब और मेम लोग आते हैं'—भावरिया को एक प्रसंग मिल गया और वह उत्साह से सुनाने लगा—'ग्रीन प्रिंस घोड़ा बहुत अच्छा है 'गायकवाड़' भी अच्छा दौड़ता है। रेस का टोट उसे प्राय मालूम रहता है। आज उसने 'सालबी' पर दो विन लगाये थे। साढ़े तीन हज़ार जीता। ऐसे ही होता है, कभी जीता कभी हारा। लेकिन टोट अच्छा मालूम होने से कम हारता है।'

गीता सिर हिलाकर 'हूँ-हूँ' करती जा रही थी। जैसे कभी शामू जबरदस्ती उसे अपने फुटबाल के मैच की बात सुनाने लगे और वह बेमन सुनती जाय। मनसे गुण्डे भावरिया का भय उड़ता जा रहा था।

चाय के बाद नीचे आ गीता ने कहा—'अब वह पैदल ही चली जायगी। उसे दूर नहीं जाना है। परन्तु भावरिया ने गाड़ी का दरवाज़ा खोल पहुँचा देने की इच्छा प्रकट की। गीता फिर बैठ गई।

'मुझे कैपिटल सिनेमा के पीछे उतार दीजिये'—गीता ने कहा।

'आप सिनेमा देखती हैं ?'—भावरिया ने पूछा।

'बहुत कम ! ऐसे ही·······कभी !'

इस उत्तर से बात टालने के लिये भावरिया ने कहा—'अच्छा तो अखबार आपका कैसे मिलेगा ?'

'आपका घर तो बहुत दूर है। डाक से भिजवा देंगे·······आपका पता लिख लूँ ?'—गीता ने उसकी ओर देखा।

भावरिया गाड़ी चला रहा था इसलिये दृष्टि सड़क पर जमाये ही उसने उत्तर दिया—'डाक से क्या, यहीं कहीं मिलियेगा तब ले लेंगे ?

इधर आते ही रहते हैं। यहीं पुरोहित में आइये। चाय पियेंगे और अखबार ले लेंगे।'

'एक अखबार के लिये इतना खर्चा कीजियेगा ?'—दो छोटी-छोटी पुस्तकें अपने बटुए से निकाल उसने भावरिया की ओर बढ़ा दीं—'अभी इन्हें पढ़िये।'

किताबें ले भावरिया ने उत्तर दिया—'वह चिन्ता न कीजिये। आपको खर्च नहीं पड़ेगा। आपका भी तो कांग्रेस का काम है। कांग्रेस को भी तो देना होता है। भावाजी ने हमसे कहा—'तुम्हारे बाज़ार के जिम्मे पाँच हजार है। हमने करवा के दिया। यह तो अच्छा ही काम है।'

गीता ने अगले सोमवार अखबार लेकर संध्या ६ बजे पुरोहित में आने की बात मान ली।

* * *

सोमवार तक गीता ने कितनी ही बार भावरिया के विषय में सोचा, वह 'पुरोहित' में उसे अखबार देने और उसके साथ चाय पीने जाय अथवा नहीं। उसके आतंक की जैसी बात सुनी थी वैसी व्यवहार नहीं देखा। गुण्डे के प्रति घृणा एक सन्देह में बदल गई। यह आदमी क्या इतना उपद्रव करता होगा ?...क्या सभी से उपद्रव करता होगा ? देखने में तो गम्भीर है और कुछ बातें कैसी बच्चों जैसी करता है ? कुछ लोगों में उसका बहुत प्रभाव होगा.......। वह अपने साथियों से उसकी तुलना करने लगी। उसके साथियों को अपनी विद्या-बुद्धि का भरोसा है। अन्तरराष्ट्रीय दांव-पेंच की बातें करते हैं। जनता को

संगठित कर ब्रिटिश साम्राज्यशाही से शक्ति छीन लेने की बातें करते हैं। उनके पीले-पीले चेहरे, रूखी ज़ुलफ़ें; उन दुर्बल शरीरों से वे कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। लेकिन गली बाज़ार में उन्हें कोई पीट दे तो सिवाय एक वक्तव्य दे सकने के वे और कुछ नहीं कर सकते। परन्तु इस भावरिया के लिये सुना है कि बीस-पचास आदमियों को जब चाहे पीट दे या पिटवा दे यों संगठन की बात वह कुछ नहीं जानता। एक प्रकार का मानवी-पशु है। यदि इसे कोई भले काम की ओर लगा सके तो इसकी शक्ति उस काम में भी लग सकती है। आखिर है तो मनुष्य ही। अच्छा क्या और बुरा क्या? मजदूर की क्या सब अच्छे है?·······ताड़ी पीते हैं जुआ खेलते हैं और क्या नहीं करते? परन्तु क्या उनके सच्चरित्र बन जाने तक उनकी उपेक्षा की जा सकती है?

सोमवार के दिन गीता तीसरे पहर से 'धोबीतालाब' के आस-पास अपने परिचितों के यहाँ अखबार की कापियाँ और पार्टी का साहित्य बेचती फिर रही थी और मन में निरंतर भावरिया का ध्यान था। मन में एक चुभन भी थी, जैसे तीन बरस पहले तक साथ में पढ़नेवाली लड़कियों से बातें सुनकर लड़कों के विषय में हुआ करती थी। जब से कम्यूनिस्टों के चक्कर में पड़ी, वह बात जाती रही थी। मेघनाथ के व्यवहार से एक खीझ सी अवश्य उठती थी परन्तु आशंका के लिये कोई कारण न था।

उसने कलाई पर घड़ी देखी। छः बजने को थे। सोचा—जब कहा है तो इस दफ़े जाना ही चाहिये और वह पुरोहित की ओर चल दी।

दूर से ही उसने भावरिया की गाड़ी पहचानी। दोनों एक साथ पुरानी जगह जाकर बैठे। गीता ने ही बात आरम्भ की :—'आपने वे पुस्तकें पढ़ीं ?'

'अभी तो नहीं'—भावरिया ने उत्तर दिया—'इधर बहुत काम रहा'—और भावरिया फिर पहले की तरह चुप रह गया। दोनों के चुप रहने से असुविधा सी अनुभव होती थी। गीता भी सोच रही थी—क्या बात करें ? कम्युनिस्टों के स्टडीसर्कल में उसने सीखा था कि प्रत्येक व्यक्ति से उसके मतलब की बात करके उसका विश्वास पाने की चेष्टा करनी चाहिये। समस्यायें सभी घूम फिर कर आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की ओर आजाती हैं। कोई मिट्टी के तेल और चीनी की कठिनाई के कारण स्वराज्य की चिन्ता करता है और कोई स्वराज्य के उपाय से बेकारी की समस्या हल करना चाहता है। वह याद करके कि भावरिया के यहाँ गल्ले का और मकान किराये पर देने का व्यवसाय होता है उसने प्रसंग चलाना चाहा कि सरकार मकानों और गल्ले का कंट्रोल कर रही है परन्तु इससे जनता की असुविधा दूर नहीं होती।

'आपको मकान और गल्ले की तकलीफ़ है ?'—भावरिया ने आग्रह से पूछ कर कहा—'इंतज़ाम हो जायगा।'

'नहीं अपनी बात नहीं कह रही हूँ'—गीता ने उत्तर दिया—'सभी लोगों को तकलीफ़ है। गल्ले के व्योपारी से खरीद कर सरकार कण्ट्रोल और राशनिंग करेगी तो चोर बाज़ार ज़रूर चलेगा·········।'

'यह कम्यूनिस्ट लोग राशनिंग और कण्ट्रोल में सरकार की मदद

कर रहे हैं तो स्वराज्य कैसे होगा'—भावरिया ने बीच में टोका।

'कम्यूनिस्ट सरकार की मदद तो नहीं करते अपने आदमियों को भूखा मरने से बचाना चाहते हैं'—गीता ने उत्तर दिया और मनमें सोचा कि गल्ले के व्योपारी को राशनिंग और कण्ट्रोल की बात कैसे अच्छी लगे ? उसने बात बदली—'कम्यूनिस्ट तो अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से तुरंत निकाल देना चाहते हैं। इसीलिये तो कहते हैं कि मुस्लिम-लीग और कांग्रेस का समझौता हो जाय और सब मिल कर अँग्रेज़ों को निकाल दें और अपनी देसी सरकार हो !'

संतुष्ट न होकर भावरिया ने प्रश्न किया—'सुनते हैं, कम्यूनिस्ट अँग्रेज़ों और मुसलमानों से मिलकर कांग्रेस से लड़ते हैं। कहते हैं आधा हिन्दुस्तान मुसलमानों को देदो !······ऐसे कहीं हो सकता है !'

हँसकर गीता ने समझाया—'नहीं ऐसा नहीं कहते कम्यूनिस्ट। हम तो कहते हैं, जहाँ मुसलमानों की बस्ती ज़्यादा है वहाँ उन्हें अपनी राय से चलने दो। किसी को जबरन पकड़े रहने से एकता थोड़े ही होती है ? मुसलमानों को अपना भला बुरा करने दो। वो अपनी इच्छा से अपना नफ़ा देकर आपसे खुद मिलेंगे तभी एकता होगी। उन्हें जबरन पकड़ कर रखोगे तो तुम से लड़ते रहेंगे और वक्त पर धोखा दे जायँगे। बस यही है पाकिस्तान !—गीता ने बहुत धीमे-धीमे सोचकर पाकिस्तान और आत्मनिर्णय के अधिकार के कठिन शब्दों की राजनीति भावरिया को समझानी चाही पर वह संतुष्ट न हुआ—'ऐसे कहीं होता है !'—उसने अविश्वास से कहा।

'तो फिर कैसे होगा !'—गीता ने उसकी आँखों में देखा।

'मुसलमान बिना मार खाये सीधे नहीं होंगे ?'—अपनी मूँछ पा हाथ रख नज़र छत की ओर उठा उसने निराशा प्रकट की।

'तो फिर एकता कैसे होगी ?...स्वराज्य कैसे मिलेगा ?'—गीता ने पूछा।

'एकता हो कैसे सकती है ?'—भावरिया ने पूछा—'हिन्दू पूरब की ओर मुख कर भजन करता है, मुसलमान पच्छिम की ओर मुँह करके। हिन्दू सीधे तवे पर रोटी सेकता है मुसलमान उलटे तवे पर !'

ऐसी राजनीति पर कठिनता से हँसी दबा, गीता ने मस्तिष्क पर ज़ोर दे सोचा, ऐसे आदमी को क्या युक्ति दे ?—'तो भगवान ने क्या हिन्दू और मुसलानों को आपस में लड़ने के लिये ही बनाया है ?'—उसने पूछा।

'अरे भगवान की बात भगवान जानें'—एक लम्बी सांस ले भावरिया ने उत्तर दिया—'और जैसा 'वे' चाहेंगे होगा। हमारे आपके किये क्या होता है ?'

तो कांग्रेस सब मेहनत यों ही कर रही है ?'—गीता ने उसके मस्तिष्क को उकसाने के लिये प्रश्न किया।

'और क्या जी; अपना-अपना रोज़गार है। कोई ऐसे खाता है, कोई वैसे खाता है'—भावरिया ने बात टाल दी। ऐसी बातें उसने कभी की न थीं।

'तो फिर चलें !'—गीता ने एक अखबार उसकी ओर बढ़ा कर पूछा—'पढ़ियेगा न ; बहुत सी बातें मालूम होंगी।'

'हाँ हाँ'—भावरिया ने अखबार लेलिया। गीता गीता सोच रही थी

पिछली पुस्तकों और अखबारों के दाम माँगे या नहीं ! मन में यह भी खयाल था--'नौ रुपये चौदह आने दे चुका है। परन्तु उसकी तो रसीद वह दे चुकी थी। भावरिया ने पूछ लिया—'आज किताब बेचने किधर जाइयेगा ?'

'कहीं नहीं अब घर लौटूँगी।'

'फुर्सत है तो थोड़ा घूम कर चलें ?'—भावरिया ने प्रस्ताव किया।

'कहाँ ?'—कुछ आशंका से गीता ने उसकी ओर देखा।

'ऐसे ही इधर मैरीन-ड्राइव और चौपाटी तक फिर आपको घर पर उतार देंगे।'

इन निरापद स्थानों का नाम सुन गीता को अपनी आशंका के प्रति झेंप अनुभव हुई। मर्द के साथ से ही भय लगे, ऐसी वह न थी। कितनी ही बार पार्टी के इक्के-दुक्के साथियों के साथ नौ-दस बजे रात में परेल और मदनपुरा से लौट चुकी थी। 'चलिये'—उसने अनुमति देदी।

बहुत धीमे गाड़ी चलाता हुआ भावरिया चौपाटी तक पहुंचा। समुद्रतल से उठते बाष्प में सूर्य अपना तेज खो धूमिल हो रहा था और लज्जा से सागर के नीले आँचल में छिप जाना चाहता था। समुद्रतल को छूकर शीतल, फरफराती वायु ताज़गी दे रही थी। चंचल लहरों पर फेन नाच रहा था। दोनों बिलकुल चुप थे। गीता को बहुत शांति और विश्राम अनुभव हो रहा था। चौपाटी के चौराहे के समीप पहुंच भावरिया ने कहा—'अभी दिन है, कहिये तो गिरगाम को घूमें नहीं तो मालाबार-हिल के ऊपर होकर आजायें !'

संध्या के समय सब ओर की रसोइयों से उठते धुयें और मसाले के छौंक की गंध से घुटते मकान में जाकर बन्द हो जाने की इच्छा और उत्साह गीता को न हुआ—'हो आयें'--उसने हामी भरी।

मालाबार-हिल का चक्कर लगा कर भावरिया फिर चौपाटी पर उतर आया। अब सब ओर बिजली का प्रकाश चौंधिया रहा था। फिर उसने पूछा कि इधर बाहर-बाहर ही चलें--'हाँ-हाँ'--गीता ने अनुमति देदी।

चर्चगेट से फोर्ट की राह वे लोग बढ़ रहे थे। भीड़ के कारण गाड़ी बहुत धीमी चल रही थी। एक दूकान के सामने भावरिया ने गाड़ी रोक दी। "क्या हुआ ?'--देखने के लिये गीता ने गर्दन ऊँची की। भावरिया उसकी ओर देखकर कह रहा था—

'ज्यूलरी की यह बहुत अच्छी दूकान है। बहुत अच्छे डिज़ाइन की चीज़ें हैं। एक-आध चीज़ देखिये तो……'

गीता के चेहरे पर सुर्खी दौड़ गई—'जी नहीं।'

—'क्या हर्ज है ?'

'जी नहीं--' दृढ़ता से गीता ने उत्तर दिया।

'अच्छा देखिये तो! भावरिया के इस आग्रह पर गीता की इच्छा कड़वा उत्तर देने की हुई परन्तु भावरिया की ओर से कोई कुसंकेत न देख अपने आपको दबा गई--'ज्यूलरी मैं पहनती नहीं क्यों व्यर्थ पैसा फेंकियेगा ?'

'नहीं पैसा फेंकना नहीं है। आप लेंगी तो हमें खुशी होगी।'—भावरिया की बात सुन गीता ने चाहा कि कह दे—'वाह जी, तुम्हारी

खुशी से हमें मतलब ? परंतु भावरिया बोल उठा—'आपने किताब और अखबार हमको दिया तो हमने लिया कि नहीं ?"""""अपनी जान पहचान में सब लोग लेते-देते हैं ।'

गीता चुप रह गई और उसे याद आया—आग से पार्टी के प्रेस को हुआ नुक़सान पूरा करने के लिये उसने दो सौ रुपया इकट्ठा करने का वायदा किया था । अभी हुआ था केवल पचपन ?—'ऐसा है तो आप नक़द रुपया दे दीजिये ।"""हमारी पार्टी को ज़रूरत है ।'

—'जैसे आपको खुशी हो !'

'अच्छा दो सौ रुपया दीजिये !'—अधिकार के स्वर में गीता ने मुस्कराकर आग्रह किया ।

'आप जैसा कहें ! आपका हक़ है । चाहे जैसे करें ।'—कोट के भीतर के पाकेट में हाथ डाल भावरिया ने नोट निकाले और सौ-सौ के दो नोट गीता की ओर बढ़ा दिये । गीता नोटों को हाथ में थामे रही । रक्त में एक तेज़ी अनुभव हो रही थी जैसे गाड़ी से ऊपर उठ हवा में उड़ जाय ।

गीता के बताये रास्ते से गाड़ी लाकर भावरिया ने उसके मकान के नीचे खड़ी करदी । गीता गाड़ी से उतरी । नोट अब भी उसके हाथ में थे । नोट मुट्ठी में थामे ही उसने नमस्कार कर धन्यवाद दिया ।

'माँ को हमारा नमस्कार कहिये'—भावरिया ने कहा और पूछा—'अब फिर कब मिलियेगा ?"""बृहस्पत के दिन आइये !'

'अच्छा !'—गीता ने फिर नमस्कार किया और ज़ीना चढ़ गई ।

ज़ीना चढ़ते समय हाथ में थमे नोटों की उत्तेजना से गीता चाहती थी, उछल कर ऊपर पहुँच जाय।

'आ गई ?'--माँ का बड़बड़ाना सुनाई दिया—'क्या ढंग है, बाबा ? दोपहर में घर से निकली और रात में लौटी ? लड़की है कि सिपाही ? और आज-कल रोज़ ही दंगा और मारपीट चलती है और लड़का अभी तक नहीं लौटा……!'

अपने मनके उत्साह में डूबी गीता कुछ समझ नहीं पाई और उत्तर दिया—'हाँ माँ !'

हाथ के पसीने से नोट सीज से गये थे। ऐसी जगह कहाँ रखे जहाँ शामू या माँ की नज़र न पड़े ? पूछेंगे तो क्या उत्तर देगी ? सुबह पार्टी के दफ्तर में जा मज़हर भाई को देकर बतायेगी। जिस गुण्डे से उसने इतना डराया था, यह नोट उसी पर विजय का प्रमाण थे। नोट उसने जम्पर के भीतर खोंस लिये और झूठ मूठ चिल्लाकर माँ से भूख लगने की शिकायत की।

'बड़ा अचरज है जो भूख लगी है !……सुबह का खाया है और बारह बीघे घूम आई ! क्या हवा पर जीना चाहती है ?'--माँ ने क्रोध दिखाया। गीता का का मन वात्सल्य के इस क्रोध से उमग उठा। भोजन के स्वाद की ओर उसका ध्यान न था परन्तु उसने खाने की विशेष प्रशंसा की। मन में उसके केवल एक ख्याल था—'माँ क्या जाने पार्टी के लिये उसने आज कितना बड़ा काम किया है ?'

शामू आया तो गीता ने उसे स्वयम् छेड़ा—'खबरदार, आज शोर किया तो ?……मुझे पढ़ना है।'

शरारत के इस निमंत्रण को शामू भला कैसे अनसुना कर देता ? बहन का सिर दोनों हाथों में थाम, उसके कान से मुँह लगा उसने चिल्लाया—'क्लिक्लिकरी बाँम !' धमा चौकड़ी हुई। शामू ने बहन के दोनों हाथ अपने मर्दाने हाथों में काबू कर चुनौती दी--'अब······?'

गीता सचमुच घबरा रही थी-हाय अगर कहीं नोट गले से खिसक कर बाहर आ जायँ ? वह झूंझला उठी।

माँ को धमकाना पड़ा--'मैं दोनों को ही पीटूँगी। क्या पागल हैं ? ····तू गीता इतनी बड़ी हुई ? और यह गधा बड़ी बहिन पर हाथ उठाता है·······शरम नहीं आती ?'

'बेन तो पहले छेड़ती हैं'—शामू ने विरोध किया।

गीता मुँह फुलाकर लेट गई ताकि नोट अपनी जगह सुरक्षित रहें।

* * *

पदमलाल भावरिया ने दो सौ रुपये जेब से निकाल कर दिये थे और गीता ने पाये थे। गीता अपनी इस विजय से किलक उठी थी परन्तु भावरिया ने इसे अपनी सफलता समझा।

गीता को उसके घर पहुंचाने के बहाने उसका मकान देख भावरिया ने गाड़ी घुमा ली। भीड़ से बचने के लिये गलियों से होता हुआ वह लैमिंगटन रोड पर आया और तेज़ी से माटुंगा की ओर चल दिया। वह जानता था—पुत्तूलाल, रेवती, उबेद सब माटुंगा-क्लब में जुटे होंगे। अपनी विजय की घोषणा करने के लिये उसका मन छटपटा रहा था।

भावरिया को मालूम था, उबेद ने सिनेमावाली पठानन को बुलाया

हैं। परन्तु वहाँ पहुँच कर देखा तो पुत्तूलाल 'कोंकणी' छोकरी को भी लेकर पहुँचा था। वह लड़की कुछ संकुचितसी उसी के समीप बैठी थी। पहला पेग एक सांस में खींच कर पुत्तूलाल को सुनाने के लिये भावरिया ने अशफ़ाक पंजाबी को सम्बोधन किया—'पंजाबी दोस्त, आज तो उस अखबारवाली को बियाना पुजा दिया''''''कहो दोस्त ! उसने पंजाबी की ओर हाथ बढ़ा दिया।'

'मेरी कसम ?''''''सच्च कहना सेठ ?'—प्रशंसा और विस्मय में आँखें फैला पंजाबी ने भावरिया का बढ़ा हुआ हाथ अपने दोनों हाथों में ले पूछा—'उतर आई छतरी पर कबूतरी ? मान गये भई सेठ को !'—उसने सुकुल की ओर देखा—'लेकिन है भाई कैड़े की ; चुगेगी बहुत !'

'अरे भाई तो हम क्या कहते हैं ? हम तो जब जानें कोई यहाँ ले आवे; चार दोस्त देख लें ? क्यों पण्डित !''''''क्यों सेठ !'—पुत्तूलाल ने पहले रेवाचन्द की ओर और फिर सुकुल की ओर समर्थन के लिये हाथ बढ़ाया।

'भाई लाला कहते तो ठीक है'—रेवाचन्द ने पुत्तूलाल का हाथ थामे ही आँखें फैलाकर कहा—'हाथ कंगन को आरसी क्या ?'''''' अब देखो बेगम साहब खान साहब की बदौलत मौजूद हैं !'—उसने पठानन की ओर संकेत किया। खान जाने कितनी खुशामद से लाये हैं। भाई, हमें तो यह गिलास में अपने तलुये धोकर दे दें तो भिस्की से बढ़कर है''''''क्यों पण्डित ?'—और वह ठहटहा कर हंस दिया।

पठानन उबेदख कि कहने से भावरिया को एक पेग अपने हाथ से

देने के लिये उठी थी। रेवाचन्द की बात पर संकोच प्रकट करने के लिये उसने दोहरी होकर कहा—'हाय, अब ऐसा मज़ाक न करो लाला !'

'अरे तो हम कुछ और थोड़े ही कह रहे हैं। और भी फूल खिलें चमन में तो और बहार हो ! क्यों सेट ?' हंसी से तोंद हिलाते हुये रेवाचन्द ने भावरिया को सम्बोधन किया।'

'हाँ तो क्या ?—कोई घरवाली है जो सेठ अटारी में मूँदकर रखेंगे !'—मुकुल बोला।

'रही'—दूसरा पेग समाप्त कर भावरिया ने चुनौती स्वीकार कर ली।

× × ×

पार्टी के दफ़्तर में मंगलवार रिपोर्टिङ्ग का दिन था। सब फ्रण्टों (मोर्चों) के कॉमरेड अपने-अपने क्षेत्र से चुनाव के काम की रिपोर्ट देने आते थे। उस काम में समय बहुत लग जाता था। सभी कॉमरेड लम्बा चौड़ा किस्सा सुनाते। गीता ने सोचा, ज़रा जल्दी जाये तो ठीक होगा। वह पार्टी दफ़्तर पहुँची तब भी कई कॉमरेड रंगा, श्री निवास मेघनाथ, पद्मा मालेकर और माया पवानी बैठे थे। मज़हर एक कोने में कागज़ पेंसिल लिये बैठा कुछ लिख रहा था।

शेष लोगों को न सुनाने के अभिप्राय से गीता ने धीमे स्वर में मज़हर से बात कर, तहाये हुये नोट उसके हाथ में दे दिये। मर्दन उठा और आगे लटक आई रूखी लटें पेंसिल से एक ओर समेट मज़हर बोला—'बहुत बड़ी बात की तुमने ! उसे पार्टी का सिम्पेथाइज़र (सहायक) बना लिया क्या ?'

'आहिस्ता, आहिस्ता हो जायगा'—हाथ की पुस्तक के पन्ने फर-फराते हुए गीता ने उत्तर दिया—'अभी तो यह रुपया दिया है उसने।'

'रसीद दे दी तुमने ?'—मज़हर ने गीता की आँखों में देखा।

'नहीं, अभी नहीं दी'—उसने मुझे रुपया पर्सनली (व्यक्तिगत) दिया है।'—गीता के चेहरे पर कुछ लाली झलक आई।

'क्या मतलब ?—मज़हर की भवों के सिकुड़न गहरे हो गये।

'ऐज़े फ्रैण्ड' (मित्र के तौर पर)—पुस्तक के पन्ने फर-फराते हुये गीता के मुख की लाली और बढ़ गई। क्योंकि मज़हर का स्वर ऊँचा हो जाने से और साथियों के कान भी इस बात-चीत की ओर आकृष्ट हो गये थे।

नोटों को हाथ में वैसे ही थामे और पेंसिल से कान खुजाते हुये मज़हर बोला—'यू मस्ट बी केअरफुल (तुम्हें सावधानी से चलना चाहिये) ! पार्टी से उसे सहानुभूति है तो एक बात है। पर्सनली रुपया लेना तो ठीक नहीं। ··वह आदमी अच्छा नहीं।'

'यू नीडंट बौदर अबाउट दैट (उसकी तुम चिंता न करो)। मैं उसे अब समझ गई हूँ।'....स्वर ऊँचा कर गीता बोली परन्तु दृष्टि दूसरे साथियों की ओर न उठा सकी।

'नहीं-नहीं'—मज़हर ने और ऊँचे स्वर में चेतावनी दी—'पार्टी की स्थिति पर हर एक बात का असर पड़ता है। पार्टी के लिये रुपया कैसे आता है, कहाँ से आता है, यह बात ध्यान देने की है। भावरिया-मामूली आदमी नहीं है।'

'भावरिया क्या भोला बच्चा है'—श्रीनिवास ने गर्दन उठाकर

पूछा—'जो उसे कॉमरेड ने ठग लिया ? महात्मा गांधी और कांग्रेस को हज़ारों आदमी रुपया देते हैं, क्या सब गांधीजी और कांग्रेस के सिद्धान्तों को समझ कर रुपया देते हैं ?'

'रुपया तो सब तरह के आदमियों से लेना होता है'—पद्मा मालेकर ने श्रीनिवास का समर्थन किया—'केवल पार्टी के मेम्बर कितना दे सकते हैं ? लोग हमारा काम देखते हैं तो विश्वास से रुपया देते हैं।'

'तो इंस्टीच्यूशन को देते हैं कांशियसली (वे समझ बूझ कर संस्था को देते हैं)।'—मेघनाथ ने बीच में टोका—'पर्सनली तो नहीं। ऐसे रुपया लेने से पार्टी के मेम्बर की पोज़ीशन ऑकवर्ड हो (स्थिति उलझन में पड़) सकती है।'

बात बढ़ने से पहले गीता ने संकोच अनुभव किया था परन्तु अब वह निसंकोच बोली—'पोज़ीशन आकवर्ड कैसे हो सकती है ? जब मैं कह देती हूँ कि मुझे रुपया पार्टी के लिये चाहिये।'

'दैन इट्स डिफ़रेण्ट मैटर, क्वाइट डिफ़रेण्ट मैटर ! (तो बात ही दूसरी है, बिलकुल दूसरी बात है) फिर उसे रसीद दे दो !'—चिंता से मुक्ति का श्वास ले मज़हर ने कहा—'तुम पर विश्वास करके वह पार्टी को सहायता देता है तो तुम्हारी पार्टी को देता है। उसमें कुछ ऑकवर्ड नहीं !'

'हाँ तो रसीद मैं दे दूँगी'—गीता ने ऊँचे स्वर में उत्तर दिया—मेरे पर्सनली रुपया लेने का मतलब ही क्या ?'

'अजी उससे रुपया लेने में हर्ज़ ही क्या है ? हमें यही समझ नहीं

आता'— सबसे ऊँचे स्वर में रंगा बोला—'ऐसे बेईमानों से रुपया लेना चाहिये मार-मार कर रुपया लेना चाहिये। वह रुपया उस साले का है ? दूसरों का रुपया उसने चुराकर रखा है। वह छीनना तो हमारा हक होना चाहिये।'

'लेना चाहिये, यह ठीक कहा'—मेघनाथ ने हाथ उठा कर एतराज किया—'परन्तु पार्टी की स्थिति और रुपया लेने के तरीके पर भी तो विचार करना होगा, या ऐसे ही, जहाँ से चाहा उठा लिया। तब तो हम रुपया इकट्ठा करने के प्रयत्न में ही मिट भी जा सकते हैं।'

'क्या खामुख्वाह फिलासफ़ी झाड़ रहे हो जी'—श्रीनिवास नेटो का—'क्या होगया तरीके में ? कॉमरेड ने डकैती करली है क्या ? भावरिया पुलिस में रिपोर्ट कर जेल करवा देगा ?'

मेघनाथ का पीला चेहरा उत्तेजित हो गया। हाथ उठा उसने कहा —'इस बारे में आप पार्टी की इंस्ट्रक्शन (हिदायत) देखिये ? केन्द्रीय दफ़्तर इस बात की रिपोर्ट चाहता है कि किस श्रेणी के आदमियों से कितना-कितना रुपया लिया गया। रुपया देने वालों का पार्टी के प्रति क्या विचार है ? उनकी क्या भावना है ? इसका स्पष्ट अर्थ है कि रुपया सोच समझकर लेना चाहिये। फ़र्ज़ कीजिये कहाँ से रुपया लेकर पार्टी किसी झंझट में फंसजाय ? रुपया लेने-देने में इंटेंशन (इरादे) का भी सवाल होता है। सेल्फ़िश मोटिव (स्वार्थ की भावना) हो सकता है। मैं ऐसे रुपये को पोलिटिकली इम्मोरल मनी (राजनैतिक दृष्टि से अनुचित रुपया) समझता हूँ। माया पवानी स्टूडेंट-फ्रंट पर काम करती थी। इस बहस से संकोच दिखा हाथ हिलाते हुये उसने कहा—

'भाई, आई कांट डू ऑल दिस ? (मुझसे यह सब नहीं हो सकता) ।'

'दिसइज़ नानसेन्स' (यह बकवास है)'—खीझ कर मज़हर ने टोका—'जब कामरेड ने कहा कि पार्टी को रुपया चाहिये और रुपया लाकर सब के सामने रखदिया तो इसमें इम्मोरल क्या हो सकता है ? सिर्फ़ सेल्फ़िशनेस इम्मोरल है ।'

माया सहम गई परन्तु मेघनाथ ने विरोध किया—'नहीं, नहीं मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं है······।'

'पत्थर है तुम्हारा मतलब !'—ऊँचे स्वर में रंगा भड़क उठा—'किसी कॉमरेड के बारे में ऐसी बात कहने का तुम्हें क्या हक़ है जी ? तुम्हें इसका जवाब देना होगा !'

मेघनाथ ने सफ़ाई दी—'यह बिलकुल उल्टा मतलब निकाल रहे हो तुम ? गीता का मैं उतना ही रिस्पेक्ट (आदर-विश्वास) करता हूँ जितना कोई दूसरा कॉमरेड । इंटेशंन से मेरा मतलब भावरिया से है । अगर कांग्रेस वालों को मालूम हो कि हमारे एक कामरेड ने भावरिया से रुपया लिया है तो क्या कहेंगे ?'

श्री निवास अब तक क्रोध में घूर रहा था । ठुड्डी उठाकर बोला—'ऐसी-तैसी कहने वालों की !·············कांग्रेसवाले किससे रुपया लेते हैं ?······

'भावरिया कांग्रेस को भी तो देता है । भावा जी उससे लेते हैं । गीता बोल उठी ।

'अरे एक भावरिया'—श्रीनिवास कहता गया—'कांग्रेस विदेशी माल का बायकाट करती है और विदेशी माल के व्योपार से कमाया

रुपया लेती हैं ? यह जो कांग्रेस के इलेक्शन-फण्ड में बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर से लाखों की रक़में चढ़ी हैं, यह ब्लैक मार्केट की कमाई है कि नहीं ? बंगाल का दुर्भिक्ष पैदा करनेवालों का रुपया है या नहीं ? कांग्रेस ने 'वार का बायकाट किया और 'वार' की सप्लाई करने वालों का बायकाट नहीं किया। क्योंकि वहाँ से लाखों रुपया जो मिल रहा था। यह सब इम्मोरल मनी नहीं हुआ ? कांग्रेस वाले कहेंगे ?...बड़े आये कहने वाले !'

इस बीच में चार कॉमरेड और आ चुके थे। श्रीनिवास को टोक कर मज़हर ने कहा—'अब इस फिज़ूल बहस को बन्द करो जी! रिपोर्टिङ्ग शुरू हो। गीता तुम उस रुपये की रसीद दे देना और कुछ पार्टी लिटरेचर भी देना, समझीं !...हां तो अब आगे रिपोर्टिङ्ग शुरू हो!'

'लिटरेचर मैंने पहले भी दिया है'—गीता ने कहा—'और रसीद तो मैं दूँगी ही। कल मेरे बटुये में रसीद-बुक नहीं थी इसलिये नहीं दे सकी।'

श्रीनिवास ने चमड़ा बनानेवाले मज़दूरों में काम की रिपोर्ट दी। तीन घण्टे तक रिपोर्टिङ्ग होता रहा। सब कॉमरेड बारी-बारी से अपने अपने काम की रिपोर्ट दे रहे थे और दूसरे कॉमरेड उसमें सुधार के उपाय बता रहे थे। गीता सुनती रही परन्तु उसका ध्यान बार-बार भावरिया के सम्बन्ध में हुई बहस की ओर चला जाता और कभी भावरिया से हुई बातें याद आने लगतीं। कल्पना में वह सोचती रही, किस प्रकार वह उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदल सकती है !

× × ×

पिछले बृहस्पतवार भावरिया को 'जनयुग' देने गीता पुरोहित मे गई तो सबसे पहले उसने दो सौ रुपये की रसीद उसके सामने रख कर कहा—'यह है आपके रुपये की रसीद।'

'वाह यह क्या कहती हैं आप!'—भावरिया ने रसीद की ओर से दृष्टि हटा कर कहा—'आपसे रसीद का सवाल ? आपके हाथ मे दिया इसी में तसल्ली है। आप जो चाहे करें। आपकी खुशी में हमारी खुशी है।' उसने रसीद को नोच कर डाल दिया।

चाय पीते-पीते गीता ने कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी की नीति में अन्तर बताने का यत्न किया तो भावरिया ने कहा—'वह सब समझता है। जहाँ दो बर्तन होते हैं, खटकते ही हैं। भाइयों-भाइयों में झगड़ा होता है तो और लोगों को क्या ? ऐसे ही कांग्रेसियों में झगड़ा हो गया है। एक तरफ़ तिरंगे झण्डे वाले हैं दूसरी तरफ़ लाल बावटा (लाल झण्डा)। लाल बावटा वालों की सफ़ेदपोश शरीफ़ आदमियों में नहीं चलती इसलिये वे मज़दूरों को साथ लेते हैं। कांग्रेस में सब बड़े-बड़े आदमी हैं, इसलिये आम लोग उन्हीं की तरफ जाते है।'

गीता ने यही उचित समझा कि पहले भावरिया को छोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ने को दे। उसके मन में जिज्ञासा पैदा हो जाने पर फिर बात करे। उसने उसे कम्यूनिस्ट पार्टी का चुनाव का कार्य-क्रम पढ़ने को दिया। उस दिन भी सूर्यास्त के समय समुद्र-तल से आती फरफराती वायु मे भावरिया गीता को मोटर में 'बैकवे' की ओर ले गया। मोटर में दोनों पहले की ही भाँति चुप रहे। पुरोहित ने चाय पीते समय और मोटर में भी कई बार गीता को अल्कोहल (शराब) की गंध जान पड़ी

सन्देह हुआ कि भावरिया ने शायद शराब पी है। इस विचार से भावरिया के गुण्डे होने का ध्यान आ गया परन्तु उसके व्यवहार में उच्छृङ्खलता या उद्दण्डता बिलकुल जान नहीं पड़ी। सोचा—हो सकता है इसे आदत हो। आदमी जैसी संगति और वातावरण में रहता है वैसी ही आदतें पड़ जाती हैं। अपने कई कामरेड किस तरह सिगरेट फूंकते हैं। चाचा को भांग की कैसी आदत है? वे उसे भगवान का प्रसाद कह उसका दोष दूर कर लेते हैं। लेकिन वह अभी इसे मना करे तो किस अधिकार से? 'मैट्रो' सिनेमा के सामने से लौटते समय भावरिया ने पूछा—'जल्दी न हो तो सिनेमा देखें?'

'नहीं' आज नहीं, मां से कह कर नहीं आई देर हो जायगी।'—गीता ने उत्तर दिया और सोचने लगी—'ऐसा तो नहीं जान पड़ता कि किसी विशेष प्रयोजन से बात कही हो?·······देखा जायगा।'

दूसरे सोमवार को जब वह भावरिया को 'जनयुग' देने और उससे राजनैतिक बात बढ़ाने के उद्देश्य से चली तो घर में कह गई—'शायद आज सिनेमा जाऊँ माँ, बहुत दिन हो गये। नौ बजे तक लौटूंगी।' —उसने पाँच रुपये माँ से मांग लिये।

भावरिया शायद आज फिर सिनेमा जाने के लिये कहे। इस सम्भावना में अपने बटुए में पाँच रुपये रख लेने से गीता को संतोष था, सिनेमा का टिकिट वह स्वयम खरीदेगी। उसके लड़की होने से ही मर्द उसके लिये टिकट क्यों खरीदें? यदि खर्च का बोझ उठाना मर्द की जिम्मेवारी है तो मर्द से ऐसी सहायता पाने के मूल्य में मर्द के प्रति स्त्री की भी जिम्मेवारी हो जायगी।···वह यदि सिनेमा जायगी

तो किसी दूसरे को खुश करने के लिये नहीं, अपने संतोष के लिये। भावरिया तीन बेर चाय के पैसे दे चुका है। वह उसकी मोटर में सैर कर चुकी है। भावरिया के संतोष के लिये या अपने? ऐसे ही व्यवहार के कारण समाज में स्त्री को दबना पड़ता है। और फिर पुरोहित की ओर जाती हुई वह सोचने लगी—आज किस प्रसंग पर वह बात करे कि भावरिया के मन में समस्याओं के लिये जिज्ञासा पैदा हो,···क्यों वह गुण्डा बना रहे? गुण्डेपन से उसे संतोष शायद इसीलिये होता है कि कोई दूसरी बात वह जानता ही नहीं।·········कितनी लड़कियां ऐसी हैं जिन्हें लिपस्टिक लगाकर सिनेमा जा सकने में ही जीवन की सफलता जान पड़ती है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व का अनुभव करने का संतोष कभी पाया नहीं, वे दूसरे का खिलौना बनने में ही सफलता समझती हैं। भावरिया में साहस है। जो कुछ जनता है वही तो करेगा? कम से कम कमीना नहीं है।······और बिना जाने तो कोई भी कुछ नहीं कर सकता। सभी के जीवन में परिवर्तन आता है······।

गीता ने नया 'जनयुग' भावरिया को देते देते हुये कहा—'इसे पढ़ियेगा···असेम्बली के चुनाव के कारण कितनी धांधली मच रही है?'

भावरिया को कुछ कहने का अवसर देने के लिये वह चाय का एक घूंट लेने के लिये रुकी। भावरिया ने भी कुछ उत्तर न दे, चाय का प्याला उठा लिया। गीता को अल्कोहल की गन्ध का सन्देह हुआ। उसने यह भी देखा कि पहले की तरह साधारण सिगरेट न पीकर भावरिया एक मोटा सिगार पी रहा है जिसके धुयें के गहरे-गहरे बादल

उसके मुख से निकल रहे हैं। आसपास सिगार के धुयें की गंध रच गई है। गीता ने सोचा—शायद अल्कोहल की गंध को दबा देने के लिये भावरिया ज़्यादा सिगार पी रहा है। भावरिया बहुत गम्भीर और चुप जान पड़ा। शायद शराब पीने के कारण वह स्वयम संकोच अनुभव कर रहा है परन्तु आदत से मजबूर हो जाता है।......बुरा बनने या समझे जाने की इच्छा किसी को भी नहीं होती। एक सहानुभूति सी गीता ने अनुभव की। भावरिया उसके व्यवहार में सन्देह देख लज्जा या संकोच अनुभव न करे इसलिये फिर अपनी बात कहने लगी—'चुनाव का कैसा झगड़ा चल रहा है और सब लोग अपने को सही समझते हैं।........दूसरों का भला करने के लिये उनका सिर फोड़ने के लिये तैयार हैं, कांग्रेस लीग का, लीग कांग्रेस का और दोनों गिरनी-कामगार यूनियन का!'

एक लम्बा कश खींच भावरिया बोला—'आप लोग तो कांग्रेस के खिलाफ़ हैं।'

'नहीं तो हम लोग न कांग्रेस के खिलाफ़ हैं न लीग के। हम तो कहते हैं, सब लोग अपना अपना ऐसा आदमी चुनें जिस पर उन्हें विश्वास हो। कांग्रेस स्वराज इसलिये ही तो माँगती है कि हिन्दुस्तानियों को हक़ हो कि अपने लिये जैसा फैसला मुनासिब समझें करें? तो मज़दूरों-किसानों को भी हक़ होना चाहिये कि जिसे उनकी सभा चुने, वही उनका मेम्बर हो। कांग्रेस ने किसानों-मज़दूरों की सभा को तो पूछा नहीं कि तुम किसे चाहते हो? अपनी राय का आदमी ऊपर से लाद दिया। जैसे अंग्रेज़ जिसे चाहे लाट या अफ़सर बनाकर

भेज देते हैं। कांग्रेस वैसा करती तो कम्युनिस्ट पार्टी उसका मुकाबिला क्यों करती?......वही बात लीग और पाकिस्तान के बारे में है।'

भावरिया को उत्तर देने का अवसर देने के लिये गीता ने फिर चाय का प्याला उठा होंठों से लगा उसकी ओर देखा।

एक लम्बा कश सिगार से खींच, हाथ हिला भावरिया ने उत्तर दिया—'अजी झगड़ा तो होता ही है। क्या है.......भाई-भाई में ऐसा झगड़ा होता है!......यह तो क्या है।'

भावरिया की ओर से जिज्ञासा का कोई संकेत न पाकर भी गीता बोलती गई—'कम्युनिस्ट-पार्टी बहुत जगह कांग्रेस के आदमियों का और बहुत सी जगह लीग के आदमियों का समर्थन कर रही है। वह तो दोनों को ही अपनी-अपनी जगह मानती है। इसके इलावा किसानों और मज़दूरों की सभाओं का भी हक़ मानती है। एकता तो सब के संतुष्ट होने से ही हो सकती है। किसी को दबाने से थोड़े ही एकता होगी?'

सिगार का धुआं सीने में भर कुर्सी पर सम्भलते हुये और हाथ की मुट्ठी बांध भावरिया बोला—'ऐसे क्या होता है? एक आदमी ऐसा हो कि सब को ठीक कर दे। तभी कुछ हो सकता है।'

'वह कैसे?'—गीता ने उकसाया।

'अब यह आप ही लोग जानें!'—खिड़की से बाहर देख भावरिया ने कहा—'ज़रा घूमने चलें? क्या राय है आपकी?'

भावरिया ने सिनेमा जाने का प्रस्ताव नहीं दोहराया। भावरिया के लिये टिकिट खरीद कर मर्द से बराबरी का व्यवहार दिखाने का

अरमान गीता के मन में ही घुटकर रह गया 'अच्छा'। अनुमति दे वह उसके साथ नीचे उतर आयी।

मोटर में दोनों चुपचाप बैठे समुद्र के किनारे-किनारे चौपाटी की ओर जा रहे थे। भावरिया की दृष्टि सड़क पर थी। जाने क्या सोचता अधमुँदी आँखों और सधे हुये हाथों से वह गाड़ी चलाये जा रहा था। गीता भी ताज़ी हवा से ताज़गी पाकर मस्तिष्क में विचारों की गाड़ी चलाये जा रही थी, सोचा :—सिनेमा के लिये इसने फिर नहीं कहा। संगति और परिस्थितियों के कारण यह आदमी गुण्डा या बदमाश हो, चाहे कितनी ही बुरी आदतें भी हों, लेकिन आत्म-सम्मान है इसमें। सिनेमा के लिये एक बार मना कर दिया तो फिर नहीं कहा।'

'आज उधर दूसरी तरफ़ चलें ?'—सामने नजर किये ही भावरिया ने पूछा। गीता के मुख से 'हाँ' सुनकर उसने मोटर महालक्ष्मी के मन्दिर की ओर घुमा दी। 'नेपियर-सी-फेस' रोड पर समुद्र के किनारे-किनारे वे दादर की ओर जा रहे थे। शिवाजी-पार्क से मोटर घूमी और माटुंगा के घने कुंजों से घिरे बँगलों के बीच से जाती एक सड़क पर से गुज़र रही थी। वृक्ष सड़क के ऊपर तक छा गये थे इसलिये समय से पूर्व ही कुछ अँधेरा हो रहा था।

'थोड़ी देर के लिये यहाँ चलें !'—एक बँगले में मोटर घुमाते हुये भावरिया ने कहा।

'कहाँ ?'—गीता के पूछ सकने से पहले ही, समीप खड़ी दो मोटरों के साथ भावरिया की भी मोटर खड़ी हो गई।

'ऐसे, अपने लोग हैं। आइये दो मिनिट को!'—भावरिया ने मोटर का इंजन रोकते हुये कहा।

असमंजस में गीता सोच रही थी—क्या अपने किसी सम्बन्धी से मिलने आया है; मैं मोटर में ही प्रतीक्षा करूँ? परन्तु भावरिया ने गाड़ी से उतर उसके लिये दरवाज़ा खोल दिया।

'मैं तो यहाँ के लोगों से परिचित नहीं हूँ; किसी को जानती नहीं।'—संकोच से कहते हुये गीता मोटर से उतर गई।

'देखने से जान जाइयेगा।'—आगे बढ़ते हुये भावरिया ने निश्चिन्तता का आश्वासन देनेके स्वर में कहा।

वर्दी पहने एक नौकर ने बराम्दे में बढ़कर सलाम किया और दरवाजे का पर्दा उठा दिया।

'इधर आइये'—कमरे में आगे जा और बाईं ओर के दरवाजे की ओर मुड़ते हुये भावरिया ने मार्ग दिखाया। अनजान स्थान से मन में सहमती हुयी भी गीता चली जा रही थी। इस कमरे का पर्दा उठा। गीता को आगे कर उसके पीछे भावरिया कमरे में आया।

कमरे की दीवारों के साथ चारों ओर काउच लगे हुये थे और बीच में कालीन बिछा था। एक ओर वर्दी पहने नौकर खड़ा था। गीता को दिखाई दिया—बेहूदा या मतवाले से छः सात आदमी और बीच में एक औरत बैठी है। पहले ही श्वास में शराब की तीखी गंध मस्तिष्क में भर गई। गीता धक्क से रह गई। वह कुछ समझ या निश्चय कर पाये, इतने में कोई पुकार उठा—'वाह भाई वाह, सेठ हमारा जीत गया! मान गये, भाई मान गये। कहो लाला?''''''अब कहो!'

एक दूसरा आदमी काउच से उठा। भावरिया के गले में बाँह डाल उसने अपने हाथ का गिलास भावरिया के मुख से लगा दिया। भावरिया हाथ से रोकने का इशारा करता हुआ कुछ कहने के प्रयत्न में गिलास के भीतर बुड़बुड़ा गया। वह आदमी बहुत बेहूदा ढंग से कहता गया—'हायरे क़ुर्बान जाऊँ, बात रखली मेरे सेठ ने।'

माथा घूम जाने से गीता को ऐसा जान पड़ रहा था कि उसके पाँव तले धरती कट गई है···समुद्र के ज्वार की प्रबल और झाग से उफ़नाती लहरों ने सहसा उसे खींच कर भँवर में फँसा लिया है। उसने सुना—'हटो भाई हटो, बाई को बैठने दो!'—फिर किसी ने उसे ही सम्बोधन किया—'बैठो, बाई बैठो—अरे ओ छोकरा—एक गिलास में खूब ठण्डा करके बाई के वास्ते लाओ!'

जबरदस्ती मुख से लगा दिया गया। गिलास समाप्त कर भावरिया ने गीता की ओर देखा। वह कुछ कहना ही चाहता था कि गीता ने धीमी परन्तु अत्यन्त दृढ़ आवाज़ में कहा—'इधर आइये!' और वह जिस राह आई थी उसी राह लौट पड़ी। बीच का कमरा लाँघ वह बराम्दे में जाकर रुकी। भावरिया विस्मित सा उसके पीछे-पीछे लौटा।

गीता की आँखों में मोटे-मोटे आँसू भर आये थे। क्रोध से लाल आँखें भावरिया की आँखों में डाल, आँसुओं से रुँधे गले से झुँझला कर उसने कहा—'किस लिये आप मुझे यहाँ लाये?·········यह किसी भले आदमी के आने लायक जगह है?······मैं तो आपको ऐसा नहीं समझती थी'—रुलाई का वेग रोकने के लिये गीता ने होठ दाँतों से

काट लिये परन्तु आँसुओं की धारायें गालों पर बह गईं और आँसू अब भी पलकों में छलक रहे थे।

'लौटिये अभी !'—साड़ी का आँचल मुट्ठी में मींचते हुये गीता ने अनिवार्य स्वर में आज्ञा दी—'यह आपको शोभा देता है ?'—और दाँतों से ओंठ दबाये वह गाड़ी की ओर चल दी। कुछ जड़ सा कुछ किंकर्तव्य विमूढ़ सा खड़ा भावरिया गीता की ओर देखता रहा और फिर लम्बे कदम बढ़ा, गाड़ी में आ उसे तुरंत चला दिया। इसये पहले कि भीतर के लोग तमाशा देखने बाहर आयें, गाड़ी बँगले से बाहर निकल गई।

मोटर काफ़ी तेज चाल से लौट रही थी। रास्ते भर दोनों ही अत्यन्त विक्षिप्त थे। आघात के कारण उत्पन्न हुई उत्तेजना में अपने आपको वश में रखने के लिये भावरिया होंठ और दाँत भींचे था, उसकी भवें पलकों पर झुक आई थीं। उसी अवस्था में संध्या समय की भीड़ में से गाड़ी को तेज़ी से निकालते हुये उसने छोटा गणेशवाड़ी में गीता के मकान के नीचे ला खड़ा कर दिया।

गीता मुख से कुछ बोली नहीं, नमस्कार नहीं किया, चुपचाप गाड़ी से उतर जीना चढ़ गई।

× × ×

गीता को उसके मकान पर पहुँचा देने के बाद भावरिया के लिये 'माटुंगा-क्लब' लौट जाना सम्भव न रहा। अपने साथियों के सामने यों अपमानित होने की ज्वाला से उसका रक्त खौल रहा था। उस गरमी का

भाप सिर में चढ़ मस्तिष्क धुंधला हो रहा था। उन लोगों के सामने वह किस मुँह से जाय? उसके कानों में पंजाबी और रेवती की किलकारियाँ अब भी गूँज रही थीं—'मान गये भाई सेठ को !....सेठ हमारा बाजी जीत गया !' और ऐसा घोर अपमान करने वाली के प्रति वह कुछ कर भी न सका। क्रोध से गुलाबी, आँसुओं से छलछलायी आँखों से गालों पर बहती मोटी धार; गीता का वह चेहरा बार-बार उसकी आँखों के सामने आ जाता। स्त्री को रोते उसने इससे पहले भी देखा था। शिकायत से रोते और रोकर प्रतिहिंसा से गाली देते भी देखा था स्वयम् उसकी अपनी ही स्त्री कई बार सिर नोचकर उसके सामने रोई थी और अब निराश होकर बेपरवाह हो चुकी थी। स्त्रियों के ऐसे व्यवहार को उसने केवल छल समझा था। गीता वैसे दिखाकर नहीं रोयी। वह रोना नहीं विवशता थी लेकिन भावरिया के साथ भी धोखा हुआ था।

भावरिया को अपने मकान में जाकर लेट जाना पड़ा। संध्या के आठ बजे मकान पर लेट रहना उसके लिये असाधारण घटना थी। ऐसे समय वह केवल दो दफ़ा बीमारी की हालत में घर पर लेटा था। अकेले लेट रहना उसे सोचने के लिये मजबूर कर रहा था। सोचना किसी उपाय के विषय में विचार नहीं, जिसमें करने की उमंग हो। सोच था, पश्चाताप के रूप में या अपनी विवशता का ! सोच वह यही रहा था कि उसका कितना अपमान हुआ ! अपमान के प्रतिकार में वह जान की बाजी लगाए बिना न रहता। परन्तु गीता ने अपमान किया इस ढंग से कि वह विवश था—'यह आपको शोभा देता है ?....

में आपको ऐसा नहीं समझती थी.......। बेर-बेर यह शब्द उसकी स्मृति में घूम जाते थे।

सहसा ऐसा जान पड़ा उमड़ा हुआ मेघ छंटकर उजली चाँदनी छिटक आई :—इन शब्दों में धमकी और गाली नहीं थी। आदर और विश्वास था। इस प्रकार कभी किसी ने उसे सम्बोधन नहीं किया था। गीता ने उसे इज्जतदार भला आदमी समझा था इसलिये विश्वास कर जहाँ कहीं साथ जाने के लिये तैयार थी.......गीता का यह विश्वास बना रहता तो अच्छा था, या पुत्तूलाल से शरत जीत लेना अच्छा था ? उसने गीता की नज़रों में आदर और विश्वास खो दिया.......एक वेदना सी अनुभव हुई। पहला आघात मस्तिष्क पर हुआ था। अब विचार के बाद हृदय पर चोट लगी। वह और भी शिथिल हो गया।

भावरिया और भी गहरे विचार में डूब गया। ऐसे काम तो वह नित्य ही करता रहा है। यह काम न कर पाने की असफलता से ही उसका अपमान हुआ। अब दुख उस असफलता का न था। दुख था—क्यों उसने ऐसा करने का प्रयत्न किया ? ऐसा वह सदा से करता आया है।.......ऐसा काम करने के लिये उसे पहले भी रोका गया था। ऐसा काम अच्छा नहीं, यह वह सदा से जानता था और जान कर भी करता रहा। पिता ने उसे धर्मात्मा बनाने के लिये कौन प्रयत्न नहीं किया ? पाप के परिणाम में मिलने वाली यातनाओं की कहानियाँ दिमाग में घूमने लगीं। अपने मन्दिर में परिक्रमा के स्थान में बने नरक की यातनाओं के चित्र उसकी आँखों के सामने घूमने लगे। इन

यातनाओं का भय भी उसे उन सब पापों से न बचा सका ...... आज ही उसे इसके लिये पश्चाताप हुआ।

पाप और बुरे काम के लिये पश्चात्ताप से मन खिन्न हो जाने पर उस संध्या कहीं जा सकना उसके लिये सम्भव न रहा और अभ्यास के विरुद्ध लेटे रहने से भी विकलता हो रही थी। लेटे रहने की थकावट से अनुभव हो रहा था जैसे रोग-शैया पर पड़े उसे कई मास बीत गये परन्तु घड़ी में केवल साढ़े ग्यारह ही बजा था। वह उठ कर मन्दिर की ओर चला। मन्दिर की सीढ़ी चढ़ते समय पुजारी जी की कोठड़ी से सुलफ़े की मीठी सी और मादक गंध आई। ठाकुर जी का अन्तिम भोग लगने को अभी शेष था। परिक्रमा के स्थान में जा वह स्वर्ग नरक के चित्रों को देखने लगा:—स्वर्ग के चित्रों में स्वर्ण के सिंहासन पर बैठे देवताओं और पुण्यात्माओं को अप्सरायें अमृत अर्पण कर रही थीं। उसकी स्मृति में बीसियों ऐसे अवसरों के चित्र फिर गये जब इस संसार की अप्सराओं ने उसे बिल्लौरी गिलासों में मद अर्पण किया था। जीवन भर भय से दबे रह कर, धार्मिक जीवन की तपस्या से मिलनेवाले सुखों को वह कुछ रुपये खर्च कर पा चुका था। उन सुखों के लिये उसे कुछ प्रलोभन न हुआ।

एक कदम आगे बढ़ वह नरक की महायातनाओं के चित्रों के सामने जा खड़ा हुआ:—माथे पर सींग उगे, हाथ भर लम्बी जीभ लटकाये यम के गणों द्वारा पापियों का ऊखल में डाल कर कूटे जाना, खौलते तेल की कढ़ाई में डुबकी देना, गला हुआ सीसा मुख में डाला जाना और आरे से चीरा जाना ...... इन सब परिणामों और भयों को

वह आरम्भ से ही जानता था, परन्तु यह सब भय उसे पाप से दूर न रख सके। इन सब भयों से निराश होकर ही उसने इस जन्म में अधिक से अधिक सुख पा लेने का यत्न किया। वह कहाँ तक भयभीत रहता ? भय उसे पाप से दूर न रख सका।······ परन्तु आज उसे पाप से घृणा हुई ! दण्ड के भय से नहीं, केवल आदर पाने की इच्छा से ····गीता के शब्द उसे याद आने लगे—'मैं तो आपको ऐसा नहीं समझती थी···क्या यह आपको शोभा देता है ?'······जैसे भीख माँगना मुझे शोभा नहीं देता, किसी की चीज़ उठा लेना शोभा नहीं देता। पर दण्ड के भय से नहीं। केवल आत्मसम्मान के विचार से। खड़े-खड़े वह सोचता रहा यदि ऐसा ही विचार आरम्भ से होता, वह सब बुरे काम क्यों किये होते ? परन्तु वैसे कभी सोचा नहीं; किसी ने उस तरह सुझाया भी नहीं।

उसी समय भीतर से भगवान की अंतिम आरती की घण्टी सुनाई दी। अचानक उसे ध्यान आया—निरंतर भगवान की पूजा उसके मन्दिर में होती रही और भगवान ने इतना भी नहीं सुझाया जैसा आज इस लड़की ने ! ··इसके साथ ही याद आया, जब गीता ने एकता से अँग्रेजों के खिलाफ़ लड़कर स्वराज्य लेने की बात कही थी तब उसने कहा था—भगवान की इच्छा बिना कुछ हो नहीं सकता। तब गीता हँस दी थीं।··· शायद वह भगवान से नहीं डरती ?······उन्हें नहीं मानती ?······केवल अपने साहस और इज्जत के ख्याल से ही जो उचित समझती है, करती है।

पुजारीजी आरती समाप्त कर मन्दिर में ताला लगा देंगे कि रात में

कोई भगवान को हानि न पहुँचाये। भगवान के साथ बन्द होकर रात बिताने की इच्छा न थी इसलिये भावरिया मन्दिर से निकल फिर अपने कमरे में आ गया।

कितने बरस उसे उस कमरे में बीत गये थे परन्तु आज उसे वह कमरा अपरिचित सा लग रहा था। यों जाग कर रात के समय उसने इस कमरे में कभी कोई विचार न किया था। प्रायः ही आधी रात बीते वह लौटता था। शराब पिये रहने से एक मूढ़ता सी छाई रहती। आते ही वह सो जाता। इतना अधिक सोचने की थकावट के कारण और नित्य के अभ्यास से बार-बार इच्छा हो रही थी कि थोड़ी पीले तो नींद आ जाय। परन्तु मन से एक फटकार सी उठती, अब क्या पीना ?

पीये या न पीये ; यह सोचते-सोचते खयाल आया—इस समय न पियेगा सही परन्तु बाद में जब लोग पीने को कहेंगे···? इस प्रसंग में क्लब से अपमानित होकर आने की बात फिर ध्यान में आ गई। सोचा—उन लोगों के सम्मुख वह जायगा किस मुँह से ?······मन ने विरोध और उपेक्षा से कहा—ऐसे आदमियों में जाने की ज़रूरत ही क्या ? और दुनियां नहीं है क्या ? मुझे क्या यह शोभा देता है। मैं क्या इसी लायक हूं ? उसने सोचा—अच्छा ही हुआ, भगवान जो करते हैं, भलाई के लिये ! भगवान की दया से यह घटना आज हो गई और जैसे वह कीचड़ से निकल आया।

यह सब निश्चय कर लेने पर भी शरीर में कुछ अस्वाभाविक शैथिल्य सा लग रहा था और जिह्वा पर बार-बार शराब के स्वाद का

अभाव याद आ जाता था। वक्त ज़रूरत के लिये, युद्ध के समय मौके से मिल गई, बढ़िया विलायती शराब की दो बोतलें जिस आलमारी में रखी थीं, वह कल्पना में बार-बार दिखाई दे जाती। इस बात से स्वयम अपने ऊपर ही खीझ उठती—उठाकर उन बोतलों को फेंक दे! मन ने तर्क किया—नुक़सान करने से क्या लाभ?·· किसी को दे दी जा सकती हैं। फिर ख़याल आया—दे देने से किसी का क्या भला होगा? आख़िर वह उठा। आलमारी खोली। बोतलें ले, डाट खोलने का पेंच ढूँडा। बोतलें खोलीं और दाँत भींचकर नाबदान में उड़ेल दीं और स्वयम अपनी प्रतारणा कर कहा—बस?

भावरिया को कई दिन आते न देख पुत्तूलाल, रेवती, सुकुल, पंजाबी वग़ैरा उसके यहाँ आये। पदमलाल को संकुचित और निस्तेज देख उन्होंने मित्रता के अधिकार से प्रतारणा की—क्या हो सेठ तुम भी; बच्चों की सी बातें करते हो? एक दिल बहलावे की चीज़ के पीछे इतनी परेशानी? अरे कहो, एक क्या, कालिज की ऐसी बीसियों लौण्डियाँ हाज़िर कर दें!·······न हो, उसी का पता दो।···साली को उठा न लायें तो कहना किसी के पेशाब से मूँछ मुंडवा दें! यह रांडों का सा बिसूरना छोड़ो! मर्द बच्चे हो······। परन्तु भावरिया ने उन्हें टाल दिया। पुरानी राह से उसका मन उचाट हो चुका था।

वह संगति छूट जाने पर दिन और आधी रात तक का लम्बा समय काटना भावरिया के लिये दूभर हो जाता। बहुत सा समय वह दुकान की गद्दी पर बैठ कारोबार देखने का यत्न करता। शेष समय में उसने गीता की दी हुई चार पाँच छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ डालीं। पढ़ने

का उसे अभ्यास न था। छपा हुआ प्रत्येक अक्षर उसके लिये सत्य था। उसने उन पुस्तकों और 'जनयुग' की प्रत्येक कापी को दो-दो बेर पढ़ा और उसे वह सब सत्य जान पड़ा! सोचा, ऐसे काम में सहयोग देकर उसे संतोष हो सकता है। और अधिक पढ़ने और जानने की इच्छा हुई। इस प्रकार की पुस्तकें गीता से ही मिल सकती थीं। गीता का घर उसे मालूम था परन्तु वहाँ जाने में संकोच अनुभव होता········· उसकी नज़रों में वह आदर-विश्वास खो चुका था।

वह बाज़ार से अखबार ले पढ़ने लगा। शनिवार के दिन बाज़ार से जनयुग, लेकर भी पढ़ता। देश भर में प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव का संघर्ष चल रहा था। अखबारों में प्रायः परस्पर विरोधी बातें रहतीं। उसे विस्मय होता था जैसे लोग घर-बार और बाजार में मैं-मैं, तू-तू कर झगड़ते हैं, वैसे ही अखबार भी कर रहे थे। अधिकांश अखबारों में कम्युनिस्टों के विरुद्ध बातें और उनकी निन्दा रहती। कम्युनिस्टों की बातों में उसे सचाई मालूम हुई थी। उन बातों का इतना विरोध देख उसका मस्तिष्क चकरा गया। इन अखबारों में कम्युनिस्टों के खिलाफ़ ऐसे-ऐसे लांछन और आरोप रहते कि भावरिया विस्मित रह जाता। उनमें छपा रहता :—कम्यूनिस्ट, मुस्लिमलीग और सरकार से पैसा लेकर देशद्रोह करते हैं, गोमांस खाते हैं और अपनी पार्टी की लड़कियों को किराये पर देते हैं। गीता को अच्छी तरह जान लेने के बाद उसे इन बातों पर विश्वास न होता था परन्तु वह सोचता—यदि यह सब सच नहीं तो अखबार में छप कैसे रहा है? परिणामस्वरूप, अखबारों की प्रत्येक बात को वह सन्देह की दृष्टि से देखने लगा।

राजनैतिक व्याख्यानों की खबर या नेताओं के मुख से सच बात जानने के लिये वह उनका व्याख्यान सुनने चौपाटी पहुँचता। पं० जवाहरलाल और सरदार पटेल के मुख से उसने सुना कि कम्यूनिस्ट अंग्रेज़ों से मिले हुये हैं और देश से ग़द्दारी कर रहे हैं। ऐसे नेताओं की बात वह अविश्वास न कर सका। देश के प्रति विश्वासघात करनेवालों से घृणा करने के लिये वह मजबूर हो गया।

कम्यूनिस्टों का खयाल आते ही गीता की भी बात याद आ जाती। सोच-सोच कर उसने निश्चय किया—यह जनता और सरकार को धोखा देकर पैसा उड़ानेवाले लोगों का गिरोह है। उसने यह भी सुना था कि कम्युनिस्ट लोग रूस से भी पैसा पाते हैं। मन में शंका होती आखिर इतना पैसा बटोर कर लोग करते क्या हैं? गीता के व्यवहार में पैसे का उपयोग करने या जमा करने की कोई बात दिखाई न दी थी। सोचा—आपस में बाँट लेते हों या मज़दूरों में बाँट देते हैं। इन्हें इससे क्या मिलता है? परन्तु कांग्रेस से क्यों लड़ते हैं? गीता इन लोगों में कैसे फँस गइ? और फिर सोचने लगता—वह भी घुटी हुई छोकरी है! जबान उसकी कैंची की तरह कच-कच चलती है। कैसा चकमा दे गई। गीता के प्रति घृणा सी हुई परन्तु साथ ही वह बात याद आई—'क्या आपको यह शोभा देता है? मैं तो आपको ऐसा नहीं समझती थी!' वह गीता के प्रति क्रोध न कर सका—उस भली लड़की को कम्युनिस्टों ने जाने कैसे फँसा लिया है। वह दो सौ रुपया भी उसने उन्हीं लोगों के हाथ में जा रखा।······जाने क्या करते हैं रुपये का?

लेबर-फ्रंट (मज़दूर मोर्चे) पर काम करनेवाले कामरेड श्रीनिवास, पद्मा मालेकर और मुरारी कई दिन से कह रहे थे कि कांग्रेस के प्रचार से मज़दूर बस्तियों में उनकी स्थिति कमज़ोर हो रही है उनकी सहायता के लिये और कॉमरेड भेजे जायँ। मज़हर और मेघनाथ शहर के दूसरे मोर्चों पर ढील करने के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था—अभी तक स्थिति ऐसी है कि उनके केडर (कार्यकर्ता) मध्यम; शिक्षित श्रेणी से ही मिल सकते हैं। इस लिये मध्यवर्ग से सम्बन्ध स्थापित करनेवाले कल्चरलफ्रन्ट (सांस्कृतिक मोर्चे) और स्टूडेण्ट-फ्रन्ट (विद्यार्थी मोर्चे) की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त उन्हें मजदूरों में किये गये पार्टी के ठोस काम पर भरोसा था। मज़दूर के आड़े समय में सदा हम ही उनके साथ खड़े हुये हैं। हमने ही उनकी हड़तालों को सफल बनाया है। हमें छोड़ वे अपना वोट किसी और को न देंगे। अधिक प्रदर्शन से लाभ क्या ?

परन्तु केन्द्रीय-दफ़्तर से हिदायत मिली कि चुनाव के समय तक सब फोर्सेस (शक्तियाँ) लेबर फ्रण्ट पर कन्सन्ट्रेट (केन्द्रित) कर दी जांय। केवल मज़दूरों की आर्थिक माँगों पर ही बल देना पर्याप्त नहीं। मज़दूर की राष्ट्रीय भावना की सहानुभूति पाना भी आवश्यक है, तो उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं की नियुक्ति मज़दूर क्षेत्र में कर दी।

गीता को भी गिरगाम, धोबीतालाओ और फोर्ट छोड़ कर नित्य ट्राम से परेल जाना पड़ता और संध्या साढ़े-आठ से पहले वह लौट न पाती। मज़दूर क्षेत्र में कम्युनिस्टों का दल बढ़ने पर कांग्रेसवालों का दल भी बढ़ा। चुनाव के दंगल में केवल अपना प्रचार करना ही पर्याप्त

न था। विरोधी दल के प्रचार को रोकना, उनके प्रचार को विफल करना और भी आवश्यक था। विचारों का ऐसा संघर्ष शब्दों की सीमा लांघ कर हाथ-पाँव से भी प्रकट होने लगता है। अपने विरोधी की ईमानदारी पर भी विश्वास करना या दूसरे की बात को बेईमानी समझकर भी उसे सहते जाना, सीधे और साधारण व्यक्ति की संस्कृति के बश की बात नहीं। इसलिये जुलूस निकाल कर और नारे लगाकर प्रचार करनेवाले दलों में प्रायः भिड़न्त होजाती और परिणाम में सिर फुटव्वल की नौबत आजाती।

कांग्रेस का समर्थन सभी अखबार कर रहे थे। कम्युनिस्टों का अपना एक ही अखबार था—'जनयुग'। कामरेड लोग उसे घर-घर पहुंचाने में पूरी ताकत लगा रहे थे। सभी मेम्बर युवक और युवतियाँ अखबार बेचने जाते। अधिक अखबार बेच सकना कॉमरेडों में योग्यता का प्रमाण हो गया।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं और कांग्रेस समर्थकों को 'जनयुग' का प्रचार कांग्रेस-विरोध और देशद्रोह के विष से भरा जान पड़ता। भोली-भाली जनता को इस विष से बचाने के लिये 'जनयुग' न पढ़ने के, उसे जला देने के नारे लगाये जाते। 'जनयुग' बेचने वालों को गाली और मारपीट की धमकी दी जाती। कांग्रेस के स्थानीय नेता व्याख्यानों में 'जनयुग' की निन्दा करके और उसे बेचनेवाले कॉमरेडों को विशेष कर अखबार बेचनेवाली कॉमरेड लड़कियों को दुश्चरित्र कहकर 'जन-युग' के विरुद्ध घृणा फैलाने का यत्न करते।

इस विरोध से कॉमरेडों में अखबार बेचने की उत्तेजना और

बढ़रही थी। 'जनयुग' के विरोधियों की उत्तेजना भी बढ़ रही थी। कई जगह 'जनयुग' छीनकर जला दिया गया ; कई जगह कामरेड पिट गये उस उत्तेजना में स्त्रियों और लड़कियों के प्रति सज्जनता और उदारता का विचार भी न रह सका। कई जगह कॉमरेड लड़कियाँ भी पिट गईं। उनको साड़ियाँ नोचने का यत्न किया गया। अखबार का बंडल छीना जाने पर भी पद्मा मालेकर ने छोड़ा नहीं और परिणाम में उसकी कलाई पर चोट पड़ने से हड्डी टूट गई। मेघनाथ के माथे पर ढेला लगने से खून आ गया था। वह पट्टी बाँध कर व्याख्यान देने और अखबार बेचने पहुँचता।

ऐसे सब समाचारों को कम्यूनिस्ट अपने पत्र 'जनयुग' में मोटे-मोटे अक्षरों में छापते। पिटनेवाले या ज्यादती सहनेवाले कॉमरेडों के चित्र छापे जाते। परिणाम में कॉमरेड लोग और अधिक संख्या में गाली-गलौज़ और मारपीट का सामना करने के लिये आगे बढ़ते।

कॉमरेडों का विचार था कि गाली और मार खाना ही उनकी विजय में सहायक होगा। जनता की सहानुभूति स्वयम ही पीड़ितों की ओर हो जायगी। परन्तु कॉमरेडों के न डरने पर भी उनके समर्थक मज़दूर डरने लगे। ऐसी निर्बल पार्टी से सहानुभूति प्रकट करना, या ऐसी पार्टी से अपने उद्धार की आशा करना मज़दूरों को निरर्थक जान पड़ने लगा। केन्द्रीय दफ्तर से हिदायत दी गई—कोई कॉमरेड चुप चाप मार खा कर न लौटे। मार का बदला मार से दो! कम्यूनिस्ट पार्टी की लाल-सेना (स्वयम सेवक-दल) के आदमी लाल झण्डे

लिये प्रचार करनेवाले कॉमरेडों के साथ रहने लगे। इन झण्डों में कमची के स्थान में काम लायक डण्डे रखे जाते।

केन्द्रिय-दफ्तर से पिटकर न आने की हिदायत मिलजाने से श्रीनिवास, रंगा और फ़ज़ल जैसे कॉमरेडों ने अपनी बाहों के पट्ठे मल कर कहा—'अब देखा जायगा!' लाल सेना के कई सैनिक जो विरोधियों की गालियों से परास्त हो गये थे; उनकी गर्दनें फिर ऊँची हो गयीं। उन्होंने विरोधी की चोट की प्रतीक्षा न कर, गाली के जवाब में ही उन्हें बिछा दिया। वे इस प्रतीक्षा में रहते कि कोई उन्हें गाली दे!

अगले दिन राष्ट्रीय-अखबारों में कम्युनिस्टों के अत्याचार के कांड की खबरें घायलों के चित्रों सहित छापी गईं। केन्द्रीय-दफ़्तर ने फिर एक बार सिर खुजाया। फिर नई हिदायत कॉमरेडों को दी गई—केवल उत्तेजना से विरोधी पर प्रहार करना अनुचित है। केवल मार का जवाब ही मार से दिया जाना चाहिये। सरमायादारों और साम्राज्यवादियों के छलिया दूत इस प्रकार के कुचक्र से हमारे और कांग्रेस के विरोध को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न करेंगे। ध्यान रहे, किसी भी झगड़े में किसी जाने पहचाने कांग्रेसी व्यक्ति या नेता को चोट न आये। ऐसी घटना से जनता को हमारे विरुद्ध भड़काया जा सकता है। हमारा विरोध करने वाले केवल कांग्रेसी नहीं हैं। कांग्रेस की आड़ लेकर इस समय देश के दूसरे शत्रु, सरमायादार गुर्गे हमारा विरोध कर रहे हैं।

विदेशी सरकार और पुलिस को सदा परेशान करनेवाले कांग्रेसी और कम्यूनिस्ट इन्क़लाब-जिन्दाबाद, आज़ादी लेकर रहेंगे, साम्राज्यवाद

और ब्रिटिश सरकार के नाश के नारे लगाते हुये निकलते और यह नारे आपस में एक दूसरे के नाश के नारों में बदल जाते। वे लोग आपस में सिर फुटव्वल करते। पुलिस और सरकार उन्हें आपस में झगड़ने की पूरी स्वतंत्रता दे हथेली की ओट हँसती। और जब भारत की स्वतंत्रता के लिये प्राण देने के लिये आतुर इन दोनों दलों का झगड़ा बहुत बढ़ जाता, पुलिस के रूप में विदेशी सरकार की शक्ति आगे बढ़ती। विदेशी सरकार दोनों को डांट-फटकार कर शान्त रहने का उपदेश देती और दफ़ा १४४ का अनुशासन लगा देती।

× × ×

माटुंगा-क्लब की घटना को अभी दो सप्ताह नहीं बीते थे। पदमलाल दस बजे आकर दूकान की गद्दी पर बैठा था कि 'सिवाजी' और 'हिंगाटन' मिलों के आढ़ती भावाजी आते दिखाई दिये। भावरिया ने उन्हें सत्कार से गद्दी पर बैठाया और कष्ट करने का कारण पूछा।

भावरिया के कंधे पर स्नेह से हाथ रख भावाजी बोले—'अरे कुछ नहीं, ऐसे ही कितने दिन से दिखाई नहीं दिये? खयाल आया जाकर देख आयें, क्या हाल है!'—भावरिया की कुशल पूछ लेने और दूसरी अनेक बातें हो जाने के पश्चात् भावाजी ने धीमे स्वर में बात की—'भाई, इलेक्शन का झगड़ा है न? कांग्रेस के काम से फ़ुर्सत ही नहीं होती। आने की तो कब से सोच रहे थे। और भाई कांग्रेस तो आपही लोगों की है। कांग्रेस का काम तो सबके सहयोग से ही होता है।'

भावाजी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के आने से भावरिया को उत्साह हुआ ही था। उसने अनुमान किया—चन्दे का सवाल होगा। इससे पहले भी भावा जी की बात उसने नहीं टाली थी। इस समय दुष्कर्म से मन उचटा हुआ था। भले काम का अवसर आने से उसे और भी अधिक उत्साह हुआ। 'जैसे आज्ञा कीजिये'—विनय से हाथ जोड़ भावरिया बोला—'सब तरह से तैयार हैं। आपसे कुछ दूर थोड़े ही हैं।'

भावाजी ने स्नेह से भावरिया के हाथ थाम लिये—'अरे भाई तुमतो अपने ही हो। अब तक तो मुसलमान कांग्रेस के दुश्मन थे ही, अब इन लाल-बावटा वाले कम्युनिस्टों को देखो। कम्यूनिस्ट क्या कौमनष्ठ हैं।·······अंग्रेजों से पैसा खाते हैं। लाट साहब की कौन्सिल में खुद कबूल लिया सरकार ने,* मुस्लिम-लीग से पैसा खाते हैं। नहीं, तुम ही कहो, भला हिन्दू होकर तुम पाकिस्तान का समर्थन कर सकते हो? अरे भाई, अपने देश के ही दो टुकड़े कर दिये तो स्वराज्य क्या पत्थर लोगे? अब देखो चुनाव में कांग्रेस के मुकाबिले खड़े हो रहे हैं। गरीब मजदूरों के हिमायती बनते हैं। अरे भाई, तुम गरीब मजदूर की क्या सहायता करोगे?···नंगा नहाए तो निचोड़े क्या? उल्टे उन्हीं का तो पैसा खाते हो? अरे सन बयालीस में तो सरकार से मिल गये! अब आये हैं गरीबों की मदद करने! अरे

* केन्द्रीय असेम्बली में सरकार ने श्री एम० एन० राय की रैडिकल डैमोक्रेटिक पार्टी को १३ हजार रुपया मासिक सहायता देने की बात स्वीकार की थी।

ग़रीबों का मददगार भला महात्मा गांधी से बढ़ कर कौन ? जिसने ग़रीबों की ख़ातिर राजपाट त्याग दिया ! ग़रीबों का कुछ बनेगा तो सेठ साहूकारों की मदद से कि इन ग़रीबों का पैसा खाने वालों से ?'

भावरिया ध्यान से भावाजी की बात सुन रहा था और उसे बात ठीक जंच रही थी । भावाजी कहते गये—'...लेकिन वो तूफ़ान मचाया है बदमाशों ने । पुलिस तो उनकी मददगार है ही और मवालियों को पैसा दे, ताड़ी पिला कर ले आते हैं.....मिलों के बदमाश मज़दूर जिनके न घर का पता न घाट का उन्हें ला शहर के भले आदमियों के लड़कों को परेशान करते हैं । परेल में कांग्रेस वालंटियर जाते हैं तो बदमाश उन्हें पीट देते हैं । कांग्रेस के झण्डे छीनकर जला देते हैं !......और तुमसे क्या कहें ? अब क्या कांग्रेस वाले बेचारे पुलिस के यहाँ जाय?—आपस के लोगों को ही करना है, भैय्या !' भावरिया की पीठ पर हाथ रख उन्होंने कहा—'इसका इंतज़ाम करना है । अब कांग्रेसी सरकार कायम होगी तो अपने ही लोगों का फायदा है । 'सिवाजी' मिलवाले तो यों ही इन बदमाशों से परेशान हैं । कह रहे थे, तुम्हारे आदमियों के लिये जो कहो भिजवा दें ! हमने कहा—'अरे भावरिया और और पुत्तूलाल कोई बेगाने नहीं हैं ?'

कुछ कर न पाने से शरीर की शिथिलता और मन की उदासी में भावरिया ने कुछ करने के अवसर की स्फूर्ति अनुभव की । इतने बड़े आदमी भावा जी उसकी दूकान पर इतना कहने आये ! उसने नम्रता से आश्वासन दिया—'आपने यहाँ तक आने का कष्ट व्यर्थ किया । कहला भेजते मैं कोठी पर हाज़िर हो जाता । आपके हुकुम से कौन बाहर है ?

सब ठीक हो जायगा। देख लेंगे कितनी हिमायत है पुलिस की और कौन बदमाश मवाली हैं। आपको चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। क्या पुत्तूलाल भाई के यहाँ भी कहला दिया था?···उनसे ज़रा कष्ट कर अपने मुँह से कह देते···यह न समझें कि हमें गिना नहीं। आप जानते हैं, भैया तनिक-तनिक पर तुनकते हैं। परेल में उनके आदमी भी हैं। और वैसे हमतो आपके और 'सिवाजीवालों' के हुकुम से बाहर नहीं। हम तो रहेंगे ही। जब भी याद किया, हाज़िर ही रहे।'

भावरिया ने मलखान, पंजाबी और टीका को बुलवा भेजा। अपनी आस्तीनें समेटते हुये पंजाबी ने कहा—'हुकुम मिला, दौड़े आये। हम तो कहते थे—भाई सेठ को जाने क्या फकीरी लग गई कि सब लोगों को भुला दिया!'

मलखान और टीका ने चलते समय 'आदमियों' के कुछ 'खाने-पीने' की बात का इशारा किया। भावरिया खुद तो कसम ले चुका था परन्तु दूसरे का हक़ कैसे मारता? मन में उसने कहा—'अपने को क्या सिवाजीवाले 'जिनका काम है, जानें!' पचास रुपये उसने मुनीम से टीका को दिलवा दिये और कहा—'पाँच बजे तक सब लोग सकलिया के यहाँ पहुँच जायँ।'

सेना का संचालन करने वाले सेनापतियों की भाँति 'सरदार' लोगों को घटनास्थल पर स्वयम जाने की ज़रूरत नहीं रहती। इशारा पाकर उनके आदमी सब कुछ कर सकते हैं। 'सरदारों' का काम अवसर के अनुकूल आदमी छाँट कर काम में लगाना और अपने आदमियों की परवरिश करते रहना है। परन्तु पुत्तूलाल को खबर मिली

तो उसने भावरिया को कहला भेजा कि हम भी चलेंगे, सेठ भी आयें। एक तरफ़ से देखते रहेंगे। बहुत दिन से मिले नहीं, मुलाकात हो जायगी। पुत्तूलाल से मुलाकात के लिये विशेष उत्साह न होने पर भी संदेश मिलने पर टाल देना भावरिया को उचित न जँचा। इससे मनमुटाव बढ़ जाता।

भावरिया अपनी कार में परेल पहुचा तो एक टोली हंसिया-हथौड़े के चिन्हवाले लाल झण्डे लिये ट्राम स्टेंड के समीप 'धोबी-बावड़ी' में घूम रही थी। उनके सांवले चेहरों पर पसीना चमक रहा था। वे बाहें उठा-उठा कर नारे लगा रहे थे:—'इन्कलाब ज़िन्दाबाद! साम्राज्यवाद का नाश हो! अंग्रेज़ी राज का नाश हो! सरमायादारी का नाश हो! हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई!' टोली का नेता घूमकर पुकारता—'वोट किसको दोगे?' टोली उत्तर देती—'गिरनी कामगार यूनियन को!' वह फिर बांह उठा कर पूछता—'वोट किसको दोगे?' टोली उत्तर देती 'कॉमरेड डांगे को!' नारे लगाते-लगाते यह टोली एक गली में चली गई।

भावरिया अपनी मोटर की चाल धीमी कर सोच रहा था—पुत्तूलाल अभी आया या नहीं; आया है तो जाने किस जगह हो? 'धोबी-बावड़ी के चक्कर की गोलाई में बनी चाय की दूकानों में झाँकता वह चला जा रहा था। चक्कर के आखीरी ईरानी होटल में अशफ़ाक पंजाबी दिखाई दिया।

भावरिया की मोटर का हार्न सुन पंजाबी सिगरेट फूँकता हुआ बाहर निकल आया। दुकान से उतर मोटर की खिड़की के समीप

आ उसने कहा—'सेठ सब लोग आ गये हैं। लाला के आदमी भी आ गये हैं। अभी तो झण्डे वालों का कुछ जमाव नहीं बँधा।

'लाला नहीं आये ?'—भावरिया ने पूछा।

'नहीं अभी तो नहीं, मुकुल आये हैं। उधर होटल में हैं। पंजाबी ने हाथ से संकेत कर बताया।—'यहाँ अपने वतन का एक आदमी मिल गया। उससे बात कर रहे थे। आओ बैठो।'

भावरिया भीतर जा ऐसी जगह बैठ गया कि अपनी गाड़ी और सड़क दिखाई देती रहे। दूकान के छोकरे ने आकर पूछा और उसने एक प्याला चाय के लिये कह दिया। पंजाबी अपने परिचित के पास जा बैठा। सिगरेट सुलगा भावरिया प्रतीक्षा करने लगा।

बगल से एक दूसरी टोली निकली—प्रायः लड़के थे, आठ से पन्द्रह बरस की आयु के। बहुत ऊँचे स्वर में नारे लगाने के कारण उनकी आवाज़ चेंचिया जाती थी—'इन्क़लाब जिन्दाबाद! अंग्रेज़ी राज का नाश हो! जय हिन्द! वोट किसको दोगे? कांग्रेस को! कौमी ग़द्दारों का नाश हो। कम्युनिस्टों का नाश हो!······एक-दो, लाल झण्डा फेंक दो!'—भावरिया ने देखा, उसके लिये दोनों टोलियों में अन्तर न था। वह सोच रहा था, पुत्तूलाल क्यों नहीं आया?

भावरिया दूसरा सिगरेट लगाने जा रहा था कि ट्राम-स्टैण्ड की ओर से सहसा कनस्तर बजने की आवाज़ सुनकर उसकी आँखें उस ओर उठ गईं, देखा—ट्राम से उतर कर आती एक जवान लड़की और उसके साथ लाल झण्डा लिये कॉमरेड को लड़कों की भीड़ ने घेर लिया। लड़के शोर मचा रहे थे। लड़की और कॉमरेड भीड़ से निकल

जाने का यत्न कर रहे थे। इतने में उस ओर, भीड़ के समीप चाय की एक दूकान से निकल तीन-चार आदमी भीड़ में जा शामिल हुये। भावरिया को जान पड़ा जैसे वह लड़की गीता ही है। वह ध्यान से देख रहा था कि बगल से पञ्जाबी बोल उठा—'वह हैं तो सुकुल के साथ आये लाला के आदमी।'

भावरिया ने देखा—सुकुल के साथ का आदमी हँस कर लड़की से कुछ कह रहा है और लड़के ताली बजा-बजा कर हो-हो कर रहे हैं। और ज़ोर-ज़ोर से गालियों के नारे लगा रहे हैं। कॉमरेड भल्ला रहा और गीता परेशान हो रही है।

भावरिया होठों में सिगरेट दबाये दूकान से उतर लम्बे कदम रखता हुआ घटनास्थल की ओर चला। यह देख पंजाबी उससे लम्बे-लम्बे कदम रखता आस्तीनें समेटता उसके पीछे-पीछे चला। पुत्तूलाल का आदमी मुख से पुचकारने का शब्द करता हुआ गीता को सम्बोधन कर रहा था—'ए बाई, इधर को आओ!' एक आठ नौ बरस का लड़का भीड़ में घुस कर कॉमरेड के थैले से कुछ कागज़ खींच रहा था। दूसरा लड़का गीता की बगल में बटुआ छीनने लगा।

भावरिया ने पुचकारने वाले आदमी को घूरकर डाँटा—'क्यों परेशान करता है बे औरत को?'

वह आदमी भावरिया की डाँट से सहमा नहीं। उसने भावरिया की ओर नज़र उठाई। उसकी आँखें लाल हो रही थीं। भावरिया को वह पहचानता न था। मूँछ की नोक मरोड़ उसने उपेक्षा से उत्तर दिया—'तू कौन होता है बे, तेरी क्या माँ-बहन लगती है।'

'क्या ?'—भावरिया की आँखें फैल गईं और कन्धे पीछे को तन गये और कदम आगे उठ गया ।

आदमी डरा नहीं । उसी मुद्रा में उसने भी उत्तर दिया—'क्या; कैसी ?'

भावरिया का तमाचा तड़ाक से उस आदमी के उठे हुये गाल पर आ पड़ा । उत्तर में उठा उसके हाथ का प्रहार भावरिया पर पड़ता परंतु इसी बीच में भावरिया के पीछे से पंजाबी ने उस आदमी के सीने पर दोनों हाथ रख उसे धकेल दिया । वह लड़खड़ा कर पीछे जा गिरा परन्तु उसके साथ के दूसरे आदमी ने पंजाबी की कमर में हाथ डाल दिया और दोनों भिड़ गये । समीप की दुकानों से दोनों ओर के आदमी दौड़ पड़े ।

भावरिया को भीड़ के समीप आते देख सुकुल अपनी जगह से उठ लपका आ रहा था परन्तु उसके पहुँचने से पहले, पाँच-छः सेकण्ड में इतना काण्ड हो गया । आते ही सुकुल ने अपने आदमियों को डाँट कर पंजाबी को छुड़ाया । बड़ी कठिनाई से उसने परिस्थिति सम्भाली । दोनों ओर के आदमी गुर्राते हुये अलग-अलग हो गये । सुकुल भावरिया का हाथ थामे अपने आदमियों को गाली दे उनकी ओर से मुआफ़ी माँगने लगा—'सेठ जाने दो, साले पहचानते जो नहीं······' भावरिया को ले वह उसकी मोटर की ओर चला । इस काण्ड में लड़कों की भीड़ तुरन्त छंट गई । गीता और उसका साथी कॉमरेड अवसर पाते ही खिसक चुके थे ।

भावरिया फिर दुकान में जा पाँच-सात मिनिट बैठा रहा । सुकुल समीप बैठा उसकी खुशामद कर रहा था परन्तु भावरिया के लिये बैठना

कठिन हो रहा था। उसका मन उबल रहा था। वह लौटने के लिये अपनी कार में आ गया। वह 'पोआ-बावड़ी' के चक्कर से सड़क पर मुड़ रहा था तभी एक गली से लाल झण्डे लिये बीस-पच्चीस जवान आदमियों की टोली चक्कर में आती दिखाई दी। सोचा—रुके कि खबर पा यह लड़ने आये हैं, पर उसका मन रुकने को न हुआ।

× × ×

जैसी घटना गीता के साथ पिछली संध्या ट्राम स्टैण्ड के समीप 'पोआबावड़ी' में हुई थी; चुनाव के कारण फैली उत्तेजना और वैमनस्य में उसका विशेष महत्व न था। होना भी क्या; जब भारत माता की जय के स्थान विरोधियों का नाम लेकर माँ-बहन की गाली के नारे लगाये जाते थे। अश्लीलता और उच्छृङ्खला राजनैतिक जोश प्रकट करने के साधन बन रहे थे। गली-कूचों और सड़क पर गेरू, कोयले और चूने से विरोधियों के लिये अश्लील से अश्लील गालियाँ लिख दी गई थीं। एक मामूली सी बात को लेकर गीता क्या दुख मनाने बैठती और किसके पास शिकायत लेकर जाती? स्वयम उस पर भी चुनाव की उत्तेजना का उन्माद था; किसी विरोध से न दब कर, सबका सामना करके जनता के लिये आत्मनिर्णय की पुकार को सबल बनाने का। इस उन्माद में वह और सब कुछ भूली हुई थी।

पड़ोस से माँ के समीप कौन आती-जाती है, क्या चर्चा होता है; इसकी चिन्ता उसने पहले भी कभी न की थी और अब तो करती ही क्या? सुबह ही पड़ोसन बानू-मौसी और गिरजा की माँ को उसने

अपने घर देखा था परन्तु वह खामुखा उनसे क्या बात करती। आठ बजे ही नहा धोकर बाहर चलने के लिये तैयार हो उसने पुकारा—'माँ खाने को कुछ देती हो तो दो, नहीं तो मैं जाऊँ ?……मुझे आज बहुत काम है।'

लाड के इस उलाहने के जवाब में माँ रसोई से कुछ बोली नहीं। गीता दुबारा पुकारना चाहती थी कि माँ सामने दिखाई दी—जैसे शरीर का सम्पूर्ण रक्त किसी पिचकारी से खींच लिया जा कर चेहरा पीला पड़ गया था और आँखें क्रोध में गुलाबी हो रही थीं। आवाज़ दबाकर और दाँत चबाकर वे बोलीं—'अब अगर ज़ीने की तरफ़ कदम बढ़ाया तो पाँव काट दूँगी।………मालूम होता ऐसा ही जस लायेगी तो जनमती के गले में अंगूठा दे खत्म कर देती। क्या मालूम था छाती का दूध पिला कर साँप पाल रही हूँ ?……अभी और क्या करने को बाकी है जो बाहर जायगी ?…बहुत नाम तो कर दिया अखबारों में।' आगे माँ का गला रुँध गया और आँखों से आँसू बह गये। खड़े रहना कठिन था इसलिये वे सामने से हट गईं।

कल्पना और अनुमान के क्षितिज के कहीं बहुत परे से आ सहसा यह बिजली इतनी ज़ोर से गीता की आँखों पर कड़क गई कि अच्छी भली आँखें खोले खड़ी रहने पर भी वह चेतना शून्य हो गई। कुछ देर तो वह दरवाज़े की चौखट पकड़े ही खड़ी रही फिर जाकर बिस्तर पर लेट गई। पहले तो वह कुछ सोच ही न पायी और फिर सोचने लगी तो जान न पायी कि यह हुआ क्या ?………इसका मतलब क्या ?……किसने आकर माँ से क्या कहा ?……'बहुत नाम तो कर

दिया अखबारों में !' गिरजा की माँ और बानू-मौसी के सुबह आने की बात याद आई।

गीता उठ बैठी। बराम्दे में हो पड़ोस में बानू-मौसी के यहाँ जा उसने सीधे ही पूछा—'मौसी क्या बात है ?······क्या हुआ ?'

'कुछ भी तो नहीं बेटी !'—बानू-मौसी ने भयभीत आँखों से उत्तर दिया—'मैंने तो नहीं कहा बेटी······रामू के पिता जी ने अखबार देखकर बताया तो मैंने बेन से पूछा—'हाय नासपीटों ने यह क्या छाप डाला ! इनके सब कोई मर जाँय ! इनके क्या बेटी-बहन नहीं है अपने घर में ? बेटी, मुझे रामू की कसम जो मैंने कुछ कहा हो ! सुबह से मुँह में पानी का घूँट नहीं लिया है, झूठ बोलूँ तो भगवान करे मेरे मुँह में अन्न का दाना न जाय······—' बानू मौसी कातर दृष्टि से गीता की ओर देखती रही।

इतना सुन कर भी गीता कुछ समझ न पाई। पूछती भी क्या ? 'ज़रा अखबार तो देखूँ ?'—उसने सोचकर कहा।

'मरा जाने कहाँ पड़ा है ?····वे ही पढ़ते हैं'—इधर-उधर नजर दौड़ाकर बाबू ने कहा—'रामू ही नहीं छोड़ता, फाड़ डालता है। मैंने तो देखा भी नहीं'—वह इधर उधर अखबार ढूँढ़ने लगी। गीता को टलते न देखा तो उसने तहाकर रखा हुआ गुजराती का दैनिक एक ओर से उठा दिया—'यह है तो, मुझे क्या मालूम था यहीं रखा है।'

गीता अखबार ले लौटी। खड़े ही खड़े लेकर देखने लगी। पहले ही पन्ने पर मोटे अक्षरों में समाचार था :—

'कम्यूनिस्ट-सखी गीता के लिये गुण्डों के दलों में मारपीट !

कम्यूनिस्ट सखियाँ शृङ्गार करके मनचले जवानों को 'जनयुग' पढ़ाने निकलती हैं। इसके परिणाम में होनेवाली घटनाओं का यह उदाहरण है। जनता ऐसे अनाचार की उपेक्षा कब तक करेगा......?'

गीता की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। बड़ी कठिनाई से वह अपने बिस्तर तक पहुँच पाई। अखबार उसके हाथ से गिर गया और वह आँखें मूँदे लेट गई। ऐसा जान पड़ा श्वास रुक रहा है।

प्रवल आघात से आजाने वाली जड़ता कुछ देर में दूर हो जाने पर उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। पर्याप्त आँसू बहजाने के बाद उसके हृदय से पुकार उठी—क्या झूठ अन्याय और अत्याचार की इससे भी आगे कोई और सीमा है? कुछ और आँसू बहने के बाद हृदय ने विरोध किया—क्या माँ को भी मुझ पर विश्वास नहीं। सीना फाड़कर कैसे दिखा दूँ? आखिर दुनिया को किस बात से विश्वास होगा कि मैंने कुछ नहीं किया! ऐसा अत्याचार करने वालों के लिये क्या कोई दण्ड नहीं?......पार्टी वाले तो सब कुछ समझते हैं। वे क्या इसे यों सह जायंगे? स्त्री का शोषण करने वाला समाज भला क्या न्याय करेगा? पार्टी तो सब कुछ समझती है? परन्तु अब पार्टी तक वह पहुँचे कैसे? इलेक्शन के झंझट में उन्हें फुर्सत कहाँ? शायद यह बात उनकी नजरों में ही न आये? मज़हर क्या कुछ नहीं करेगा? श्री निवास तो मारने पीटने के लिये तैयार हो जायगा परन्तु यहाँ तो बुद्धि से काम लेने की ज़रूरत है। पर वह उनसे कहे किस तरह?.........किसी तरह एक पर्चा वह जनरल सेक्रेटरी को लिख दे?......कैसे? वह छिछली हँडिया में कैद मछली की भाँति तड़प रही थी। दिन भर उसी तरह

पड़ी तड़पती रही। दिन के बाद वैसी ही तड़पन की रात और अगला दिन। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा था, जड़ता दूर हो बेचैनी बढ़ रही थी। चिन्ता और सोच-विचार की उधेड़बुन में मस्तिष्क चकरा कर व्याकुलता और भी असह्य होती जा रही थी। कमरे के बाहर से अनेक प्रकार के शोर-गुल की मिली जुली गूंज कमरे में भर रही थी। निरंतर ट्राम की घंटी की टनाटन और मोटरों के भोंपुओं की विचित्र आवाज़ें कान में आरही थीं परन्तु गीता के लिये विकट सूनापन था। छत्तीस घण्टे बीतने को आरहे थे, किसी ने एक भी शब्द गीता के प्रति सम्बोधन नहीं किया। श्यामू भी मुँह लटकाये इधर उधर निकल गया। छोटे भाई का परेशान करने वाला मारपीट का लाड-प्यार गीता के लिये एक अतीत स्मृति बन गया। दुनिया ही बदल गई। माँ उससे क्या बोलती?······उसका दुख क्या कम था?

गिरिजा की माँ और बानू से गीता की माँ ने अखबार की बात सुनी तो उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। आँखों के पलक झपकना भूल गई। मस्तिष्क में एक ज्वाला सी उठकर, वह जले काठ की तरह अचेतन हो गया। इतने बड़े दुर्भाग्य को वह सहसा समझ भी न पाई। जब समझ पाई तो यही इच्छा हुई कि उस बड़े मकान की तीनों मंजिलों की छतें फट जांय, नीचे जमीन फट जाय और उसमें वह सदा के लिये समाजाय, कोई उसका मुख न देख सके। जिस लड़की के आचरण पर गर्व सेसीना फुला वह दुनिया भर को चुनौती देती फिरती थी, उसी के लिये यह कलंक? यदि उसकी लड़की कलंकिनी होती, वह अपने हाथ से स्वयम उसके और अपने

कलेजे में छुरी भोंक, उसके अपराध का प्रायश्चित कर देती। और फिर क्रोध का आवेग कहता---ऐसा मिथ्या कलंक लगाने वाले का सीना फाड़ उसका खून पी जाय।···परन्तु वह प्रतिकार करने जाय तो कहाँ ? और प्रतिकार करे तो किससे ? जो बात अखबार में छप गई। उसे तो दुनिया मानेगी। वह कलंक तो बम्बई के हर एक आदमी की ज़बान पर है, बम्बई की ईंट-ईंट उसे पुकार रही है। कोई एक नहीं कह रहा है जिसकी वह जबान पकड़ ले ! किससे और कहाँ वह प्रतिकार करने जाय ? उसका श्वास श्वास आर्तनाद कर रहा था झूठ है, झूठ है, अन्याय है ! क्रोध में उसका रोम-रोम जल रहा था। वह अपना क्रोध प्रकट भी किस पर करती ? लड़की पर बरस पड़ी थी—'अगर अब ज़ीने की तरफ़ कदम बढ़ाया तो पाँव काट लूँगी······ अपने ही शरीर के अंश और हृदय के टुकड़े को उसने कितने ही श्राप दिये। और फिर निस्सहाय और बेबस हो रसोई में बैठी रोती रही। कौन था उसका ? एक लड़की और एक सोलह बरस का बालक ! गीता के पिता की याद में रोई—वे जिन्दा रहते तो क्या मुझे अबला विधवा जान कोई ऐसा अत्याचार कर सकता था ?······जिसे ओट देने वाला मर्द नहीं, उसका दुनिया में कौन है ? वह रोती ही रही ; किसी से कुछ कहने के लिये न उठी। घर में चूल्हा भी न जला।

दूसरे दिन संध्या समय शामू गीता की खाट के समीप आया। आंखें उठाये बिना ही गम्भीर चेहरे और भारी स्वर में बोला—'माँ कह रही है, जीम लो !' और चला गया। गीता के रुके हुये आँसू फिर बह आये-हाय, क्या यह लड़का भी मुझे कलंकिनी समझता है ?

उसके सामने वह अपने कलंक की क्या सफ़ाई दे सकती है ? वह जीमने के लिये उठ न सकी। माँ ने कुछ समय प्रतीक्षा की और लड़की को उठते न देख स्वयम् भी बिन खाये, रसोई समेट कर उठ गई और खाट पर जा लेटीं।

संध्या रात बन गई। बाहर से आने वाला शोर-गुल कम हो होकर सन्नाटा छा रहा था। अपनी खाट पर सिसकते-सिसकते गीता को उंघाई आ रही थी। आहट सुन उसकी पलकें उघड़ीं, देखा—शामू बहुत गम्भीर मुख बनाये उसकी खाट की पाटी से लगा खड़ा है।

सूने में शामू को अपने समीप आया देख गीता का मन उमड़ आया—'क्या है भैया ?'—उसने शामू की बांह थाम ली। शामू खाट पर बैठ गया।

'बेन, बम पिक्रिक ऐसिड से बनता है ?'–सिर झुकाये शामू ने पूछा–

'क्यों ?'—विस्मय से गीता की आँखें फैल गईं।

'बेन यह झूठी खबर कांग्रेसवालों ने छापी है। मेरे साथ लड़का पढ़ता है उसका भाई तुम्हारी पार्टी में है। उसने बताया है। बदमाशों से बदला लूँगा, चाहे जान चली जाय।'

'नहीं भैया'—गीता ने शामू को बाँह में ले अपनी ओर खींच लिया—'हमारी पार्टीवाले ऐसे बदला नहीं लेते। हम कांग्रेस से लड़ेंगे तो अंग्रेजों से कौन लड़ेगा ? यह तो अंग्रेजों के एजेण्ट पूँजीपति हैं जो कांग्रेस में घुसकर ऐसी हरकतें करते हैं। उन्होंने कांग्रेस को बहका रखा है। कांग्रेस तो देश की राष्ट्रीय संस्था है। देश की आज़ादी के लिये विदेशी सरकार से लड़ने वाली संस्था, हमारी पार्टी कांग्रेस से

लड़ती नहीं, उन्हें समझाती है। भाई-भाई लड़ेंगे तो विदेशी लुटेरा ही राज करेगा······! नहीं क्या ?'

शामू को संतोष न हुआ। उसकी आँखों में आँसू आ गये—'यह साले दूसरों की माँ-बहनों को गाली देते हैं और सत्य-अहिंसा का पाखण्ड करते हैं। इनसे बदला लेना चाहिये।'

गीता ने उसे अपने और समीप समेट लिया और समझाती रही कि बदला लेने से तो झगड़ा और बढ़ेगा। हमें देश और देश की जनता के हित की नीति पर चलना है। उसके लिये चाहे मार खानी पड़े, जेल जाना पड़े या झूठी बदनामी भी सहनी पड़े। वह समझाती रही—स्वराज्य से पार्टी का क्या अभिप्राय है और वह स्वराज्य कैसे देश की जनता के सम्मिलित प्रयत्न के बिना नहीं मिल सकता। शामू को उसने कहा—'तुम पार्टी-दफ़्तर में मज़हर भाई से सब हाल कह आओ! मैं भी एक पत्र लिख दूँगी। जैसा वे लोग कहेंगे, वही हमें करना चाहिये।'

शामू ने बताया आज साँझ को कोई एक लम्बा-लम्बा साँवला सा पार्टी का आदमी आया था। तुम्हें पूछता था। माँ ने देख लिया और उससे बहुत बिगड़ीं। वह चुपके से चला गया।

अनुमान कर गीता ने पूछा—'क्या दाईं गाल पर चोटका चिह्न था ?'

'देखा नहीं'—शामू ने कहा—'दाँत बाहर निकले थे आगे को।'

'हूँ, रंगा होगा'—गीता ने कहा—'पार्टी कामरेड है।'

'और एक और आदमी आया था मोटर में'—शामू ने और बताया—'पदमलाल, तब मैं बाहर था। माँ ने नहीं देखा। मैंने सोचा माँ

देखेंगी तो बिगड़ेंगी। मैंने कह दिया—'बेन को बुखार है। लेटी हुई है।' चला गया कहता था—नमस्कार कहना, फिर आयेंगे।'

गीता सोचती रही। भावरिया ने उसके साथ छल किया था और उसके प्रति उसके मन में क्रोध भी था परन्तु परेल की घटना में उसी ने आकर उसे फजीहत से बचाया। अखबारवालों की इस शरारत में उसका क्या अपराध। गुण्डे की शरारत से तो कोई बेचारी लड़की शायद बच भी जाय परन्तु इन अखबारवाले सज्जनों से तो कहीं शरण नहीं। शायद इसी सम्बन्ध में बात करने आया हो कि क्या करना चाहिये। पर मुझे उससे क्या लेना है? बहुत भर पाई दूर ही रहे तो अच्छा है। रंगा को भी माँ ने मिलने नहीं दिया। सम्भव है कोई खास बात कहने आया हो! या मुझे ही बुलाने आया हो··· ···गीता को सन्तोष हुआ, पार्टी ने उसे भुला नहीं दिया। पार्टी किसी को भुला कैसे सकती है गर्व से उसने मन में कहा—वी आर वन फ़ैमिली (हम सब पार्टी के लोग एक ही परिवार के अंग हैं।)

शामू बहुत देर तक बहन की खाट पर उसके समीप बैठा रहा। वह पहली रात थी जब उसने अल्हड़पन और दगा छोड़ बहन से गम्भीरता से बात की। और भाई की भोली औ उत्तेजना पूर्ण बातें गीता के लिये कितनी संतोष का कारण थीं। उसने एक बाँह का सहारा अनुभव किया। वह बाँह देखने में कितनी दुबली-पतली कमज़ोर हो, है तो मर्द की बाँह! वह अकेले नहीं है। शामू छोटा है तो क्या? है तो लड़का;··· ··· ···मर्द! उसके सहारे वह खड़ी हो सकेगी।

परेल की घटना को एक सप्ताह बीता था। एक सप्ताह गीता ने कैद में बिताया, कुछ मां के आंतक से और कुछ लज्जा-संकोच से। सप्ताह भर में उसकी अवस्था ऐसी हो गई जैसे बेल से कटी कच्ची लौकी धूप में पड़ी रह सिकुड़ और पलक जाय। मां कुछ बोलती न थीं। सबकी निगाहों से बचकर किसी न किसी काम में उलझी रहतीं। यों गीता भी गुम-सुम बनी रही परन्तु मस्तिष्क उसका प्रतिक्षण चकराता रहता। इस बीच में शामू दो बेर गीता के कहने से पार्टी-दफ़्तर गया। गीता ने अखबार की खबर के कारण घर की स्थिति का का सब हाल मज़हर को लिख भेजा और कुछ दिन घर से बाहर निकलने में असमर्थता प्रकट की। मज़हर ने उसे धैर्य से काम लेने का परामर्श दिया। और परेल की घटना को ब्यौरेवार रिपोर्ट मांगी। गीता ने सब वृतान्त लिख भेजा।

दो दिन बाद शामू चेहरे पर गम्भीरता का भाव लिये आया और बोला—'मज़हर भाई ने खबर भेजी है, शाम को सात बजे आयेंगे। तुम से जरूरी मिलना है। मैं माँ से कहूँगा, बेन को डाक्टर के यहाँ ले जा रहा हूँ। तुम परवाह मत करो।

गीता ने स्नेह और भरोसे से शामू की ओर देखा—यह सोलह बरस का लड़का कितना साहस कर सकता है। मैं इससे इतनी बड़ी होकर भी असहाय हूँ। भाई के प्रति गीता ने अबतक केवल उसकी बीमारी में ही स्नेह और चिन्ता अनुभव की थी। इसके अतिरिक्त दोनों में परस्पर होड़ धौल-धप्पा और जली-कटी कहने का ही सम्बन्ध था। गीता उसे केवल माँ का लाड़ला और शरारती भाई ही सम-

भती थी जो शूरता की खोज में आई० एन० ए० का सिपाही बनने के सिवा और कोई बात न सोच सकता था। गीता की इस कठिनाई में वह छोटा सा, बेसमझ भाई सहसा उसका रक्षक बन कर खड़ा हो गया। गीता की पार्टी 'उसकी' पार्टी बन गई। दोनों में बिना किसी विचार परिवर्तन के उद्देश्य की एकता होगई। वे भाई बहिन ही नहीं 'कामरेड' बन गये। गीता ने अपने अपमान और यंत्रणा की अवस्था में भाई की दृष्टि और व्यवहार में अपने प्रति ममता, आदर और गौरव अनुभव किया और वह उसका हृदय का टुकड़ा 'छोटा कामरेड' बन गया।

संध्या सात बजे गीता शामू के साथ बाहर निकली। कुछ ही दूर जा 'फनास-बाड़ी' की गली में मज़ाहर अपने चमड़े का वस्ता बगल में दबाये मिल गया। गीता को देख मज़ाहर ने आँखें फैला, माथे की त्योरियाँ गहरी कर, विस्मय और उलाहने के स्वर में कहा—कामरेड ह्वाट इज़ दिस (यह क्या हुआ है तुम्हें) ?···क्या बीमार थी ?'

गीता सिर झुका, होठ काट कर रह गई।

गीता को चुप देख मज़ाहर बोला—'दिस इज़ नान सेंस। अगर बदमाश लोग हमें इस तरह डरा-धमका लें तो, तो फिर हो चुका; वाह! ऐसे तो, ऐसे तो किसी का भी नाम लेकर कोई भी खबर उड़ा दे तो, तो बस हो गया वाह, डू यू अंडरस्टैण्ड (समझती हो)?'

'बेन तो खाना भी नहीं खाती है'—शामू बीच में बोल दिया।

'तो तुम कैसे छोटे कामरेड हो·········अब तुम खयाल रखना।

अच्छा.........हाँ, मैं उसी अखबार की घटना के सम्बन्ध में आया था। पी० सी० (प्रान्तीय कमेटी) उस मामले को काफ़ी सीरियसली (महत्व देकर) ले रही है। मुझ से उन्होंने रिपोर्ट मांगी थी। मैंने लिख दिया था कि भावरिया ज़रूर बदमाश मशहूर है। उससे तुम्हारा परिचय कैसे हुआ, तुमने उससे रुपया पार्टी के नाम पर रसीद देकर लिया और पार्टी को सौंप दिया। तुम उसे 'जनयुग' और दूसरा साहित्य देती रही हो। कामरेड बागले तुम्हारे साथ था। उसका बयान भी मैंने लिख कर पी० सी० को भेज दिया है। भावरिया ने यदि परेल में किसी लड़की के प्रति ज़्यादती का विरोध किया तो कुछ बुरा नहीं किया। और सम्भव है, इतनी सज्जनता उसमें तुम्हारे ही प्रभाव से आई हो। परन्तु पी० सी० संतुष्ट नहीं हुई। उन्होंने इस मामले में अपने यहाँ से इंक्वायरी (जांच पड़ताल) कराई है और मुझे और तुम्हें कल तीन बजे प्रान्तीय-दफ़्तर में बुलाया है। वहाँ पहुँचना ज़रूरी है, डू यू अंडरस्टैण्ड (समझीं) ;

मज़हर की चिन्ता के प्रभाव से गीता भी न बच सकी परन्तु उसने साहस से कहा—'उन्होंने इंक्वायरी की है तो और भी अच्छा है। बात और भी साफ़ हो जाय। कामरेड बागले तो मेरे साथ था उसे नहीं बुलाया पी० सी० ने ?'

'नहीं'—सिर हिलाकर मज़हर ने इनकार किया—'बात साफ़ होने की उसमें बात क्या है ? राष्ट्रीय अखबार आज कल कितने अनस्क्रुपुलस (बेलगाम) हो रहे हैं, उसकी कोई सीमा नहीं। जाली चिट्ठियां छापने में, सच को दबाने में, झूठ का प्रचार करने में किसी बात में

उन्हें शरम नहीं। अब तक तुम्हारे वर्क (काम) की रिपोर्ट बहुत अच्छी रही है। लेकिन पार्टी का एटीच्यूट (रवैया) बहुत स्टिक्टनेस (अनुशासन) का हो रहा है। वे लोग मेम्बरों की प्राइवेट लाइफ़ (व्यक्तिगत जीवन) थौरोली पार्टी की लाइन पर (पूर्णतः पार्टी के अनुशासन में) चाहते हैं।'

चमड़े का अपना बस्ता दाईं बगल से बाईं बगल में लेते हुये मज़हर ने शामू को समीप पुकारा। शामू पार्टी का तरीका समझने लगा था। जो बात उससे नहीं कही जा रही थी, उसे सुनने की चेष्टा न कर वह मज़हर और गीता के पीछे-पीछे चला आ रहा था। पुकारे जाने पर वह समीप आ गया। उसकी पीठ पर हाथ रख मज़हर ने कहा—'देखो यंग-कॉमरेड बेन को कल तीन बजे प्रान्तीय-दफ्तर में ले आना समझे? समय पर आ जाना। और कामरेड तुम चुनाव में पार्टी का कुछ काम नहीं करोगे? देखो, बेन को अपने साथ ले आया करो। और बेन के खाने पीने का खयाल रखना, समझे! पार्टी कामरेडों का बीमार होना पसन्द नहीं करती...... समझे!'

मुख से कुछ न बोल, गर्दन अकड़ा शामू ने यह गम्भीर उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया। मज़हर के मुसकराकर मुट्ठी उठा लाल-सलाम करने पर उसने भी वैसे ही उत्तर दिया।

भाई बहिन घर लौटे तो गीता के मन का अवसाद आधे से अधिक दूर हो चुका था। बगल में चलते छोटे भाई की रक्षा में वह अभय अनुभव कर रही थी। पुरुष की तुलना में स्त्री को किसी भी प्रकार

असमर्थ या हेय समझ कर पुरुष की सहायता के प्रति घृणा और विरोध का भाव भाई के प्रति ममता में डूब गया था।

× × ×

मज़हर, गीता और शामू कम्युनिस्ट पार्टी की प्रान्तीय-कमेटी के दफ्तर में पौने तीन बजे पहुंच गये। दूसरे कई कामरेड भी प्रतीक्षा कर रहे थे। साथ के कमरे में प्रान्तीय कमेटी के लोग थे। कमरे का दरवाज़ा बन्द था। बारी-बारी से उस कमरे में लोगों को बुलाया जा रहा था। मज़हर और गीता के देखते-देखते तीन बेर दूसरे लोगों को बुलाया गया परन्तु उनकी बारी न आई। साढ़े चार बजे उन्हें बुलाया गया। मज़हर और गीता के भीतर जाने पर कमरे का दरवाज़ा बन्द हो गया। चार आदमी एक छोटी मेज़ के तीन ओर घिरे बैठे थे और सामने तीन कुर्सियाँ खाली थीं। कुर्सियाँ सब एक सी नहीं, जैसी मिल गईं बटोर कर जोड़ दी गई थीं। मेज़ पर फ़ाइलों का ढेर था।

दाईं ओर बैठा आदमी खद्दर की सफ़ेद कमीज़ और पतलून पहने था। उनके साथ का व्यक्ति खद्दर के कुरते-पायजामें में था। उनकी आँखों पर लगा मोटे शीशे का चश्मा, बोझ के कारण नीचे खिसक आता था। हजामत तीन दिन की बढ़ी हुई। तीसरा व्यक्ति केवल बनियान और निकर पहने था, हजामत उसकी भी बढ़ी हुई और चश्मे के पीछे आँखें नींद से बोझल। चौथा व्यक्ति कमीज़ और धोती पहरे था। उसके सिर के केश सेही कांटों की भाँति खड़े थे और आँखों में सन्देह भरा था।

मज़हर और गीता के भीतर आते ही दाईं ओर से दूसरे बैठे व्यक्ति

ने अँग्रेज़ी में सम्बोधन दिया—'हलो कॉमरेड्स ! मज़हर···'—गीता की ओर देख पहचानने के प्रयत्न में वह आँखें झपक कर रह गया परन्तु उसके साथ के व्यक्ति ने सहयोग दिया—'हल्लो गीता !' 'यस गीता !' उसने भी कहा। परिचय की मुस्कान उसकी सिकुड़ी हुई आँखों में दौड़ गई।

उन लोगों के कुर्सी पर बैठ जाने पर दाईं ओर से दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने अपने हाथ में लिये कागज़ पर दृष्टि दौड़ाई। एक क्षण जैसे कुछ सोच कर बोला—'हां' यह सब क्या तमाशा हो गया अखबारों में ?'—उसने गीता की आंखों में आँखें गड़ा दीं। मुस्कराहट उसके चेहरे से ऐसे मिट गई जैसे कभी थी ही नहीं।

गीता सहम गई—'जो कुछ हुआ, मैंने घटना का पूरा ब्योरा लिख कर दे दिया है।'

प्रान्तीय-कमेटी के कॉमरेडों ने गीता के उत्तर की उपेक्षा कर मज़हर की ओर देखा। मज़हर ने उत्तर दिया—'अखबारों का जैसे व्यवहार आज कल है, ऐसी बात किसी भी व्यक्ति के बारे में छापदी जा सकती है।'

'हूं'—पहले कामरेड ने असंतोष से अपने बाईं ओर बैठे व्यक्ति की ओर देखा।

'लेकिन पद्मलाल भावरिया से तुम्हारा परिचय और मेलजोल था ?'—इस कामरेड ने गीता को सम्बोधन किया।

'मेलजोल तो नहीं······चार या पांच दफ़े मुलाकात हुई होगी।

'जनयुग' और पार्टी साहित्य की कुछ पुस्तकें उसे दी थीं। इधर प्राय; एक मास से मैं उससे मिली भी नहीं।'

'तुमने पदमलाल से दो सौ रुपया लेकर पार्टी को दिया था?'

'हाँ, उसकी रसीद उसे दे दी थी'—गीता ने उत्तर दिया।

'रसीद की बात मालूम है। लेकिन क्या उसे पार्टी के उद्देश्य से सहानुभूति थी? नहीं तो किस सम्बन्ध से उससे रुपया लिया गया? और तुम्हें मज़हर ने सचेत कर दिया था कि उसका चाल-चलन ठीक नहीं है। पार्टी कामरेड्स को जानना चाहिये कि एक-एक पैसा लेने की जिम्मेवारी उनके कंधे पर है। तुम तो समझदार कामरेड हो। तुम्हारे काम की रिपोर्ट बहुत अच्छी रही है।.........अब ऐसा क्यों हुआ?'

गीता को चुप देख वही कामरेड फिर बोला—'पार्टी को रुपया उसने तुम्हें खुश करने के लिये दिया था, पार्टी से सहानुभूति के कारण नहीं,.........ठीक है यह बात?'

'मैंने पार्टी के लिये ही मांगा था और उससे कह दिया था कि पार्टी के लिये चाहिये,......पार्टी को दूँगी और रसीद भी दी थी।'

मोटे कांच का चश्मा लगाये कामरेड ने कुछ झुंझलाहट से कहा—'तुम्हारी इमान्दारी का सवाल नहीं है; परन्तु परिणाम क्या हुआ? और तुम बाद में भी उससे मिलती रही।

—केवल चार-पाँच-बार, 'जनयुग' और दूसरी पुस्तकें दी थीं।

'सब बातों की खबर तुमने अपने ग्रुप-सेक्रेटरी को नहीं दी। क्या तुम इसे निजी जीवन की बात समझती थी?'

'ऐसी तो कोई खास बात हुई नहीं।'—आशंका से गीता ने धीमे स्वर में कहा।

'हमें खबर मिली है कि जनवरी के दूसरे सप्ताह में तुम उस आदमी के साथ 'माटुंगा-क्लब' में गई थी। वहाँ शराब पी जारही थी और वेश्यायें भी थीं। क्या यह ठीक है ?'

गीता का चेहरा पीला पड़ गया और अनुभव हुआ कि सामने बैठे व्यक्तियों की आँखें उसके चेहरे पर चुभी जा रही हैं। एक क्षण दुविधा के बाद आँखें झुकाये ही उसने उत्तर दिया—'हाँ यह ठीक है। लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि वह मुझे ऐसी जगह ले जा रहा है। और मैं वहाँ ठहरी भी नहीं। और उसके बाद से मैं फिर उससे मिली भी नहीं।'

'लेकिन इस घटना का ज़िक्र तुमने अपने ग्रुप-सेक्रेटरी से नहीं किया ?' कॉमरेड ने मज़हर की ओर देखा।

'नहीं'—सिर हिलाकर मज़हर ने इनकार किया।

'यह मेरी निजी व्यक्तिगत भूल थी'—गीता का सिर झुक गया—'संकोच और लज्जा की ऐसी बात किसी से कहने की इच्छा न हुई। कोई लाभ भी न था। इसके बाद फिर मैं उससे मिली नहीं।'

'निजी और व्यक्तिगत क्या ?'—कॉमरेड का स्वर कठोर हो गया। नाक पर खिसक आये भारी चश्मे को ऊपर उठा उसने कहा—'तुम्हारा जीवन अपने लिये है या उद्देश्य के लिये ? तुम्हारे प्रत्येक व्यवहार का प्रभाव तुम्हारे उद्देश्य पर और पार्टी की स्थिति पर पड़ता है। अखबार में यह खबर इसीलिये छपी है कि तुम पार्टी-कॉमरेड हो। पार्टी पर

मिथ्या लांछन लगाने का अवसर देने की जिम्मेवारी किस पर है ?'

'एक मिनिट'—हाथ आगे बढ़ा मज़हर ने टोका—'बीच में बोलने के लिये क्षमा कीजिये। लेकिन बीच की घटनायें यदि न भी होतीं तब भी ऐसी खबर छप सकती थी। मेरे विचार में 'माटुंगा-क्लब' की घटना और अखबार की खबर का कोई सम्बन्ध नहीं! बीसियों झूठी खबरें छपती हैं। अखबार वालों को यदि 'माटुंगा-क्लब' की घटना मालूम होती तो पहले वे उसी को छापते! इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि 'माटुंगा-क्लब' की घटना का प्रभाव परेल की घटना छपने पर पड़ा है!'

तीसरा कॉमरेड अब तक चुप था। मज़हर की ओर उङ्गली उठा उसने कहा—देयर यू आर! (ठीक कहा तुमने) परन्तु अगर 'माटुंगा-क्लब' की घटना छपती तो क्या होता ?·······घटना घटी है तो छप भी सकती थी! यह हमारी खुश किस्मती है कि बदमाशों को यह घटना मालूम नहीं हुई। परन्तु कॉमरेड से भूल हुई, इस से तो हम इनकार नहीं कर सकते ?'

'कर सकते हैं ?' मोटे चश्मेवाले कामरेड ने प्रश्न किया।

'लेकिन कामरेड सेक्रेटरी, 'माटुंगा-क्लब' जानेका इरादा·········?'—मज़हर कहना चाहता था।

'डैम इरादा'—मज़हर को टोक कर सेक्रेटरी ने कहा—'भूल इरादे और घटना में ही नहीं होती। भूल होती है, व्यवहार और नीति निश्चित करने में एक संदिग्ध चरित्र के व्यक्ति से, उसके विषय में जान पहचान कर भी, मिलना-जुलना, सम्बन्ध रखना भूल है या नहीं ? ऐसी

बात का परिणाम और क्या होगा ?······पार्टी मेम्बर के ऐसे व्यवहार का प्रभाव पार्टी पर पड़ेगा या नहीं ?'

सिर झुकाये गीता ने उत्तर दिया—'मुझ से उसका व्यवहार अनुचित नहीं था। तीन दफ़े मैं उसके साथ घूमने गई थी। उस समय कोई अनुचित बात उसने नहीं की। मैं उससे पार्टी के सम्बन्ध में बात करती थी और वह कुछ समझने भी लगा था।'

गीता की इस सफ़ाई की उपेक्षा कर सेक्रेटरी ने अपने हाथ के काग़ज़ की ओर दृष्टि कर कहा—'कामरेड गीता, तुमने उचित सतर्कता से व्यवहार नहीं किया और फिर ऐसी घटना होने पर उसे छिपाया। दिस इज़ सीरियस ब्रीच आफ़ डिसीप्लिन (यह अनुशासन की भयंकर उपेक्षा है)। पार्टी-मेम्बर के साथ होनेवाली प्रत्येक घटना और मेम्बर का व्यवहार पार्टी को मालूम रहना चाहिए ताके उसके परिणाम और उपाय पर विचार किया जा सके। इस कमेटी ने इस मामले के सभी पहलुओं पर विचार कर और तुम्हारे पिछले बहुत अच्छे काम और व्यवहार पर विचार कर निश्चय किया है कि तुम्हें केवल तीन मास के लिये पार्टी की मेम्बरी से सस्पेण्ड (स्थगित) कर दिया जाय !······ तीन मास तक तुम्हें पार्टी पर कोई अधिकार न होगा परन्तु पार्टी के प्रति मेम्बर के सभी कर्तव्य तुम्हें पूरे करने होंगे।'

गीता ने सिर उठा प्रान्तीय कमेटी के कॉमरेड्स की ओर देखा। उसकी आँखों में दो बूंद आँसू छलक आये।

'दिस इज़ नान्सेंस (क्या पागलपन है)।'—सेक्रेटरी का स्वर रूखा हो गया—'तुम सबसे अच्छे कामरेड्स में गिनी जाती हो !·· ···

यह डिसीप्लिन (अनुशासन) की बात है।""""डू यू प्रोटेस्ट अगेंस्ट डिसीप्लिन (तुम अनुशासन का विरोध करती हो) ?'

'मैं एक बात कहना चाहता हूँ'--मज़हर ने कमेटी के कामरेड्स की ओर देख कर कहा--'इस अनुशासन से दूसरे कॉमरेड्स क्या समझेंगे?··· वे समझेंगे कि परेल की घटना के लिये कामरेड गीता दोषी है।'

तीसरे कामरेड ने मज़हर की ओर घूम और उंगली उठाकर पूछा—कामरेड गीता ने भूल की है या नहीं ?······तुमने भूल की है या नहीं ?'—गीता की ओर घूम कर उसने पूछा—'अनुशासन केवल ज़ाहिरा भूल के लिये नहीं, छिपी हुई भूलों के लिये भी होना चाहिये। पार्टी पाखण्ड में विश्वास नहीं करती। कामरेडस को अपने व्यवहार के लिये जिम्मेवारी समझनी चाहिये। पार्टी-कामरेड्स को ठीक बात कहो।······उन्हें ग़लत फ़हमी क्यों हो।'

सेक्रेटरी ने गीता को सम्बोधन किया—'तुम्हे कुछ एतराज़ है ?

गीता ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया।

'ठीक ! दैट्ज़ गुड······तुम्हें खुश होना चाहिये कि तुम दूसर कामरेड्स के लिये अनुशासन का उदाहरण बन कर उनकी सहायता कर रही हो !······अच्छा !'

गीता सिर झुकाये उठ गई। मज़हर भी खड़ा हो गया। बन्द मुट्ठी उठा उन्होंने लाल-सलाम किया और कमरे से बाहर जाने लगे। सेक्रेटरी ने पुकारा—'कामरेड मज़हर एक मिनिट और !'

गीता बाहर चली गई। मज़हर लौट आया। सेक्रेटरी ने पूछा—'मज़हर तुम्हारे ग्रुप में यह सब एडवें-ःर होते रहे और तुम्हें मालूम

नहीं ?……तुम कामरेड्स के व्यवहार पर नज़र नहीं रखते ? गीता का अब विशेष ध्यान रखना ।'

बीच की कुर्सी पर बैठे कामरेड ने पूछा—'वह बिरदेकर के बारे में क्या रिपोर्ट है तुम्हारी ?…… कुछ सम्भला ?'

'उसने कई जगह थोड़ा-थोड़ा कर्ज़ लिया है और अब दे नहीं पा रहा ।'

—'क्यों ? सिगरेट बहुत फूंकता है, चटोरा है या कुछ और ?'

—'हाँ सिगरेट और फ़िज़ूलखर्ची की आदत तो है ।'

'सिगरेट बड़ी फिज़ूल चीज़ है ।'—सेक्रेटरी ने बीच में कहा—'कॉमरेडस को इससे डिसकरेज करो (रोको) !…तुम पीते हो ?'

'छोड़ दिया ।'

'अच्छा किया । यंग (छोटे) कामरेडस पर इस का अच्छा असर नहीं पड़ता । तुम एक पीओगे, वे दस पीयेंगे ।…अच्छा ।'—सेक्रेटरी ने लाल-सलाम के लिये मुट्ठी ऊपर उठा दी। वैसे ही उत्तर दे मज़हर चला गया ।

× × ×

अखबार में गीता के नाम से परेल की घटना का वृतांत पढ़ पदमलाल भावरिया को बहुत घृणा और क्रोध हुआ । मनमें आया, जाकर अखबार वालों के दफ़्तर का पता कर उनकी खबर ले । बहुत देर तक वह उसी चिन्ता में उलझा रहा । सोचता रहा, जाकर कहेगा क्या ? खयाल आया, वहाँ उत्तर मिलेगा—हमने किसी का नाम तो

दिया नहीं। जिन्हें गुण्डा कहते हैं अखबार को उनका नाम छापने का तो साहस नहीं हुआ। गरीब लड़की के गले पर छुरी फेरदी। सोचा, क्यों न जाकर गीता से ही इस विषय में सलाह करे! जो कुछ उसकी पार्टी वाले कहेंगे, वही करना ठीक होगा। इस बदमाशी का कुछ तो जवाब होना चाहिये। कम्यूनिस्टों की जितनी निन्दा उसने इन अख-बारों में पढ़ी थी, या ऐसे लोगों से सुनी थी उस पर से उसका विश्वास हट गया। भावाजी और उनके साथियों के प्रति भी उसे अश्रद्धा होगयी।

उसी संध्या सूरज डूबते समय दूकान बढ़ने पर भावरिया छोटा गणेश बाड़ी में गीता के मकान पर पहुँचा। ज़ीने की ओर जाते एक सोलह-सत्रह बरस के लड़के को उसने पुकारा—'भैया, जरा सुनो, यहाँ गीता जी रहती है न? जो कम्यूनिस्ट-पार्टी में काम करती है, जानते हो?'

'हूँ,—लड़के ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

'हमारा नाम पद्मलाल है। ज़रा उन्हें खबर दे दोगे? हम मिलना चाहते हैं, कुछ काम है।'

'उनकी तबियत ठीक नहीं है। बुखार है।'—लड़के ने सिर खुजा-कर उत्तर दिया और प्रतीक्षा किये बिना जीना चढ़ने लगा।

लौट जाने के सिवा उपाय न था। राह में वह सोचता गया—देखो इन अखबार वालों का जुल्म! गरीब को कितना परेशान किया; बीमार कर दिया। खयाल आया, जाकर भावा जी से कहे—महाराज यह क्या करवा रहे हो? फिर खयाल आया—नहीं पहले इन लोगों

से बात कर लेना ठीक है। जाने क्या समझें ? कुछ और उत्पात खड़ा हो जाय! जाने अखबार में क्या और छाप दें ?. फिर अपने तो वारे न्यारे ही करनेवाले ठहरे।

आठ-नौ दिन उसे फ़ुर्सत न हो सकी। एक दिन फिर समय निकाल उसी समय पहुँचा। भाग्य से वही लड़का उसी समय जीना उतर नीचे आया। भावरिया के पुकारने से वह समीप आ गया।

—'भैया, गीता जी को जानते हो न ?'

—'हाँ, हमारी बेन है।'

—'भैया, कहना हम ज़रा बात करना चाहते हैं।'

—'कहाँ से आये हैं आप ?'

—'हमारा नाम पदमलाल है। गीता जी जानती हैं ?'

—'आप क्या पार्टी में हैं ?'

—'नहीं पार्टी में नहीं हैं। गीता जी हमें पहचानती हैं।'

लड़के ने सिर हिला दिया—'नहीं जी, हम लोग दूसरे लोगों से नहीं मिलते!'—भावरिया की उपेक्षा कर वह अपने मतलब से चला गया।

भावरिया को बहुत बुरा लगा। कोई और जगह होती तो ऐसे गुस्ताख़ लड़के का कान पकड़ वह एक थप्पड़ लगा देता परन्तु परिस्थिति के कारण चुप लौट आया। लौटते-लौटते उसकी भावना भी बदल गई—जाने क्या समझते है अपने आपको !......मरने दो जी! हमारा क्या जाता है ? जायें भाड़ में। अपने को इन झंझटों से क्या मतलब ?

भावरिया की आढ़त से कुछ माल एक विलायती कम्पनी की मार्फ़त

जहाज़ी गोदामों में भी जाता था। उसका कुछ हिसाब लटका पड़ा था। उसी सम्बन्ध में बात-चीत करने वह 'फोर्ट' में उस कम्पनी के दफ़्तर की ओर जा रहा था। बाजार में कुछ सनसनी सी जान पड़ी और फिर एक जुलूस सामने आया। कांग्रेस मुस्लिम-लीग और मज़दूर-पार्टी के जुलूस उसने देखे थे। पर यह जुलूस अपने ही ढंग का था—जहाजी सिपाही नीले कालर की सफेद वर्दियां पहने फ़ौजी ढंग से मार्च करते हुये और उनके साथ फ़ौजी लारियां जिन पर कांग्रेस के तिरंगे, मुस्लिम लीग के हरे और कम्यूनिस्ट पार्टी के लाल झण्डे फहरा रहे थे और नारे लगा रहे थे—'इनक़लाब ज़िन्दाबाद! जय हिन्द! हिन्दुस्तान को आज़ाद करो! आज़ाद-हिन्द फ़ौज को रिहा करो! हिन्दू मुस्लिम एक हो! ब्रिटिश साम्राज्य का नाश हो! अल्लाहो-अकबर! महावीर जी की जय!' उनके संगठन में, व्यवहारमें नियंत्रण और शक्ति का आभास था।

इस दृश्य से हवा ही बदल गई जान पड़ती थी। जिस सैनिक शक्ति से कुचले जा कर भारतवासियों ने सदा विवशता और निर्बलता अनुभव की है वही सैनिक-शक्ति देश की पुकार को लेकर आज़ादी के युद्ध-क्षेत्र में उतर रही थी। ब्रिटिश सरकार की बनाई लोहे की जो जंजीर हमें गुलामी में जकड़कर असमर्थ किये थी, लोहे की वही जंजीर हमारे शत्रु ब्रिटिश-शक्ति की पीठ पर पड़ने के लिये, उसे तोड़ कर हमें स्वतंत्र कर देने के लिये, हवा में खनखना रही थी। लाठीबंद पुलिस और हथियारबंद पुलिस जो सब जुलूसों और सभाओं को कुचल कर रख देती थी, इस संगठित शक्ति के प्रदर्शन के सामने भय-

भीत कुत्ते की तरह टाँगों में दुम दबाये इधर-उधर कतरा रही थी। भावरिया एक ओर खड़ा इस जुलूस को देखता रहा। उत्साह से उसका सीना उभर आया और आँखों में सरुर छा गया। सोचा—अब अंग्रेज़ खत्म हुये। साथ ही खयाल आया, विलायती कम्पनी में बाकी उसकी उगाही भी गई।……गई तो क्या ?

आगे जाना व्यर्थ था। जुलूस निकल जाने पर वह लौटने के लिये समीप की गली से घूम कर चला। फोर्ट की गलियों में बड़ी-बड़ी विलायती कम्पनियों के अंग्रेज़ साहब लोग दफ्तर बन्द कर उतावली में भागे जा रहे थे। कहीं-कहीं दिखाई पड़नेवाले गोरे सिपाहियों के चेहरे उतरे हुये और आशंकित थे। भावरिया उमङ्ग और उत्साह अनुभव कर रहा था। उसे दो महीने पहले की घटनायें याद आने लगीं :—नेताजी की जयंती के अवसर पर जुलूस निकाला था। पुलिस जगह-जगह गोली चलाकर जुलूस को यों भगा देती थी जैसे जूठे पत्तों पर घिर आई मक्खियों को उड़ा दिया जाय। अब उसी पुलिस के मालिक कैसे सहमे हुये थे।

दुकान पर लौट उसने खबर सुनाई और पल भर में बात बाज़ार में फैल गई। आस पास के लोग जुट आये और ब्योरा पूछने लगे। चेहरे और आँखें उत्साह से चमक उठीं। अंग्रेज़ों के अधिकार में भारतीय फ़ौज ही देश से बेगानी हो, देश को अंग्रेज़ों के हाथ में बाँध कर रखे थी। अब सेना के लोग अपनों से आ मिले तो अपने राज में कसर क्या ? कोई बढ़कर कह रहा था—'आखिर अपना ही तो खून है।' कोई कह रहा था—'भाई घुटने पेट को ही मुड़ते हैं।'

चुनाव के संघर्ष की पेचीदा राजनीति बाज़ार के जन-साधारण को छू न पाती थी। उनकी समझ से वह स्वराज्य की लड़ाई नहीं आपस की लड़ाई थी। परंतु अपने देश को ग़ैरों से वापिस लेने की बात, अपने आदमियों के गैरों से हटकर अपनों से आ मिलने की बात सबको समझ आ रही थी।

जो खबर आती, पहले से बढ़कर आती :—देशी जहाज़ी सिपाहियों ने बम्बई को घेर लिया है। जहाजी सिपाहियों ने वायरलेस लगाकर कराची, मद्रास और कलकत्ता सब जगह अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई की खबर भेज दी है। सब छावनियों में देशी सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ हो गये। हिंदुस्तानी हवाई-फ़ौजों ने हवाई-जहाजों पर कब्जा कर लिया। सब हिंदुस्तानी एक हो गये। मुट्ठी भर अंग्रेज बम्बई से भागने की तैयारी कर रहे हैं। अंग्रेजों के दफ्तरों और मकानों पर अंग्रेजी फौज पहरा दे रही है……।

दूसरे दिन भावरिया दुकान पर आ रहा था कि बाजार में उसने सुना कि सरकार ने जहाजी सिपाहियों का राशन-पानी बन्द कर दिया है। पर वे अपनी हड़ताल पर डटे हैं।……'—गाली दे भावरिया ने कहा—'जब तक देशी सिपाही सालों की जंजीर के कुत्ते बनकर अपनों को काटने दौड़ते थे तब तक तो खूब चराते रहे। अब काहे को खाना देंगे? राशन-पानी बंद करके डराना चाहते हैं ग़रीबों को? और इन'—उसने फिर गाली दी'……अंग्रेजों को ही हिन्दुस्तानी अनाज न दें तो देखेंगे, कितने दिन मक्खन-बिसकुट खालेंगे?

समीप ही वह तनवरिया, बोमनजी और उसमान भाई की कोठियों

में गया। कुछ ही देर में तनवरिया, बोमन जी, भावरिया और उसमान भाई के यहाँ के आदमी 'अपोलो' की तरफ़ चल दिये। रास्ते में फल, मिठाई, बिस्कुट जो कुछ मिला, लेकर टोकरे भर लिये। बन्दर पर जाकर देखा हजारों आदमियों की भीड़ थी। जगह-जगह तिरंगे, हरे और लाल झण्डे एक साथ फहरा रहे थे। जयहिन्द, इन्कलाब जिन्दाबाद और अंग्रेजी सरकार के नाश के नारे लग रहे थे। वरदी पहरे जवान सिपाही सर्व-साधारण जनता में ऐसे घुल-मिल रहे थे जैसे जनता के ही अंग हों, भेद केवल कपड़ों का था। बोमनजी ने उत्साह से कहा—अब तब ठीक हो जो कोई हिन्दुस्तानी किसी अंग्रेज़ को एक दाना अनाज नहीं दे।......अपने भाई का पेट भरने को तो सब मुल्क है। अंग्रेज़ इसको कैसे भूखा मारेगा ?'

भावरिया लौट कर दुकान पर आया परन्तु परिस्थिति की उत्तेजना और उत्सुकता बनी रही। संध्या समय दुकान बढ़ाई जा रही थी कि 'खड़ा पारसी की चौमुहानी की ओर से लाउड-स्पीकर की आवाज सुनाई दी। उधर नजर गई तो एक लारी पर तिरंगा, हरा और लाल झण्डे फहरा रहे थे। लारी पर लाउड-स्पीकर बोल रहा था—'इन्क़लाब जिन्दाबाद ! भाइयो, आपके देश के जहाजी सिपाहियों ने सरकार के ज़ुल्म के खिलाफ़ हड़ताल की है।'—भावरिया उत्सुकता से चौमुहानी की ओर बढ़ चला। लाउड-स्पीकर की आवाज़ स्पष्ट होती जा रही थी। समीप पहुँच भीड़ के परे से उसने देखा, लारी में गीता लाल-सलाम में मुट्ठी उठाये माइक्रो-फ़ोन के चमकदार डण्डे के सामने खड़ी बोल रही थी। उसका चेहरा लाल होकर पसीना बह रहा था। वह

कह रही थी—'यह हिन्दुस्तानी जहाज़ी सिपाही आपके ही भाई और बेटे हैं। उन्हें आपकी ही सहायता का भरोसा है। भूख और अपमान से ऊबकर उन्होंने न्याय की माँग की है। उनका अपमान देश का अपमान है। उनकी भूख देश की भूख है। आज वे गुलामी की जंजीरें तोड़ कर आज़ादी की लड़ाई लड़ने के लिये आपकी ओर मिलाप और सहायता का हाथ बढ़ा रहे हैं। इन सिपाहियों की न्याय पूर्ण माँग को दबा देने के लिये, उनमें आज़ादी की भावना को कुचल देने के लिये निर्दय विदेशी सरकार पूरी शक्ति से बन्दूक की गोलिय और तोपों के गोले बरसा रही है। आपके भाई और बेटे उसका जवाब बहादुरी से दे रहे हैं। सरकार के जुल्म से भूखे मरते अपने बेटों और भाइयों को खाना देने के अपराध में हमारी जनता पर आज तीसरे पहर कालबादेवी रोड पर गोली चलाई गई। अपने भूखे-भाई बेटों को भोजन देने के कारण हम पर गोली चलाई जाती है, इससे बड़ा अत्याचार संसार में और क्या होगा? बम्बई का बच्चा-बच्चा, हर एक मर्द और औरत, हिन्दू और मुसलमान, ईसाई और पारसी जान देकर भी सरकार के इस जुल्म का मुकाबिला करेगा। हिन्दुस्तान की कम्यूनिस्ट-पार्टी आप से अपील करती है कि इस अत्याचार का विरोध करने के लिये आप कल बम्बई में पूरी हड़ताल करें। हर एक दूकान, मिल, दफ्तर, ट्राम मोटर-बस सब कुछ बन्द रहेगा। हम किसी किस्म का दंगा और लूट मार नहीं होने देंगे। हमारी नाराज़ी और विरोध अंग्रेज सरकार के ज़ुल्म के खिलाफ है और हम विदेशी सरकार को चेतावनी देते हैं कि अपने शहीद होनेवाले प्रत्येक नौजवान के ख़ून का बदला हम ख़ून से लेंगे!'

गीता आंचल से चेहरे का पसीना पोंछती हुई माइक के सामने से हट गई। उसके स्थान पर दूसरा कॉमरेड खड़ा हो वही बात कहने लगा। लारी 'लालबाग' की ओर चल दी। भावरिया काठ के पुतले की भाँति निश्चल यह सब सुन रहा था। लारी चल देने पर उसने जो अनुभव किया, उसके शरीर का रोम-रोम खड़ा हो गया है। पीठ पीछे रीढ़ पर पसीने की एक धारा बह गई है। धोती के छोर से पसीना पोंछ वह कुछ क्षण लारी की ओर देखता रहा और फिर लौट पड़ा।

× × ×

सुबह आँख खुलते ही भावरिया ने नीचे गली में अखबार वाले की पुकार सुनी। छोकरे को बुलाकर तुरंत अखबार लाने के लिये कहा और प्रतीक्षा में खिड़की से झाँकता रहा। पहले पन्ने पर ही देखा—'सरदार पटेल की अपील :—

जनता इस नाजुक परिस्थिति में सब प्रकार शांत रहे! Shame!

हड़ताल आदि द्वारा नगर में किसी प्रकार की अशांति का कारण न होना चाहिये।

जहाजी सिपाहियों ने नेताओं से सलाह लिये बिना सेना का अनुशासन भङ्ग किया है। उनके इस काम में किसी प्रकार का सहयोग जनता को न देना चाहिये·······।

भावरिया को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। मस्तिष्क पर प्रबल आघात सा लगा। कुल्ला, दातुन और स्नान भूल कर वह उसी प्रकार बैठा रह गया। फिर उठकर स्नान भोजन करते समय भी ख़याल

आता रहा—अच्छा स्वराज यह नेता दिला रहे हैं कि अपने भूखे मरने देशवालों की मदद करने को मना कर रहे हैं।………कैसी राजनीति है यह ? आँखों के सामने पिछले दिन दोपहर में देखे जहाज़ी सिपाहियों के चेहरे फिर गये और खयाल आया, सरकार उन्हें भूखा मार रही है, वे आकर अपने आदमियों से मिलना चाहते हैं और हम उनकी मदद न करें ?………जाने राजनीति की यह क्या सांठगांठ है ? कल शाम 'वो' बेचारे गला फाड़ रहे थे कि गोली चली है हड़ताल करो ! यह कह रहे हैं हड़ताल मत करो।………खूब रही ? हड़ताल कैसे नहीं होगी ?'

छोटे मुनीम ने आकर पूछा—'सेठजी, दूकान खुलेगी ?'

सिर हिला इनकार कर भावरिया ने पूछा—'बाज़ार, में कैसी हवा है ?

'लोग तो कह रहे हैं जैसे आप, तनवरिया, और बोमनजी कहें। अभी तो बाज़ार बन्द है। लोग राह देख रहे हैं।'

'बन्द रहेगा बाज़ार'—भावरिया ने उठने का विचार न दिखा कह दिया।

'भावा जी और बाबू रामगोपाल बाज़ार में घूम रहे हैं। कह रहे हैं हड़ताल नहीं होनी चाहिये, सरदार पटेल का हुक्म है। कांग्रेस ने हड़ताल की मनाई की है। यह सब झगड़ा लाल-बावटा वालों ने कराया है।'—सिर और गर्दन खुजाते हुये मुनीम ने कहा।

'कहने दो ?'—मन के क्रोध को उपेक्षा का रूप देने के लिये भावरिया बोला।

'जरा दुकान तक चले चलते,'……भावाजी खड़े थे। कह रहे थे—सेठ जी से जय गोपाल जी कहने आये थे।'

मुनीम की ओर देख अनिच्छा से भावरिया ने उत्तर दिया—'अच्छा' और छोकरे से कपड़े मंगा पहनने लगा।

भावरिया ने देखा, बन्द बाज़ार में एक ओर मोटर खड़ी थी और भावाजी और बाबू रामगोपाल चटक सफ़ेद, खद्दर का कुर्ता, धोती, टोपी पहने बाज़ार के बीच खड़े लोगों से बात कर रहे थे। भावरिया को देख उन्होंने दूर से ही दोनों हाथ उठा कुशल पूछा। उनके सदा प्रसन्न चेहरे पर क्षोभ अथवा उत्तेजना का चिह्न न था। उस विनय और शान्ति के सामने भावरिया को अपने मन की उत्तेजना के प्रति संकोच सा अनुभव हुआ उसने भी मुस्कराने का यत्न कर उत्तर दिया—'अरे आपने काहे कष्ट किया। कहला भेजते। मैं मकान पर आ जाता।…आज्ञा कीजिये?'

भावा जी ने स्नेह से भावरिया के दोनों हाथ थाम लिये–'अरे भैया' कैसी बात कर ते हो, आज्ञा क्या? ऐसे ही बाज़ार की हालत देखते चले आये मिलने! दुकानें नहीं खुलवा रहे क्या?'–विस्मय से उन्होंने पूछा।

भावरिया की उत्तेजना फिर भड़क उठी. उसे वश कर, भावा जी से आँखें चुरा उसने उत्तर दिया—'अब जैसेबाज़ार वालों की राय हो। हम तो सब के साथ हैं। कौन खा-मुखा अपनी दुकान में आग लगवा ले!'

भावा जी ने हँस दिया—'अरे भाई सेठ, क्या कह रहे हो?……किसकी हिम्मत है ऐसी बम्बई में?'—भावरिया के हाथ थामे ही वे बोले—'समझाने से सब होता है। लोग क्या जानते हैं। यह सब

हिंसा-हत्या के काम अपने कांग्रेस के नहीं हैं। सरकार की अपनी फौज और सरकार के झगड़े में अपने को क्या ? अपने पेट के लिये ये लोग हड़ताल कर रहे हैं तो अपने को क्या ?'

समीप खड़ा एक आदमी बोल उठा—'अरे पेट के लिये ही तो स्वराज चाहिये, नहीं तो किस लिये ?'

भावा जी ने उसकी ओर देखा और उपेक्षा कर भावरिया का हाथ थामे कहते गये—'कल तक यही लोग तो अपने ऊपर गोली चलाते थे, क्यों ? और ऐसे समय यह उपद्रव खड़ा कर दिया इन लोगों ने। भड़काने वाले जो हैं उन्हें तो जानते ही हो ?······सन ब्यालिस में तो सरकार की बग़ल में जा छिपे थे। और क्या गांधी जी, सरदार पटेल और नेहरू जी से भी ज़्यादा राजनीति समझते हैं यह लोग ? इस वक्त सरकार झुक रही है, समझौते की बात हो रही है, पर इन्हें तो देश का नुक़सान जो करना है।···लोग तो समझाने से समझते हैं सेठ जी ! और फिर तुम्हारी बात कौन टाल सकता है ?—अपने हाथों में थमे भावरिया के हाथों को उन्होंने आन्तरिकता से दबा दिया।

'महाराज अपने तो इतने धर्मात्मा हैं नहीं'—भावा जी की ओर बिना देखे भावरिया ने उत्तर दिया—'कि कोई अन्न-पानी बन्द करदे सोने पर गोली चलाये और हम हाथ जोड़े बैठे रहें। और फिर जो सबकी राय हो, अपनी दुकान तो महाराज खुलेगी नहीं।'

'अच्छा-अच्छा भाई, जैसा समझो !—भावा जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया। उनके स्वर में असंतोष का कोई चिन्ह न था—'अरे भाई, इन अखबारवालों ने उस दिन क्या बत्तमीजी की ! सालों को बुला-

कर धमकाया, ऐसा करोगे तो हम नहीं जानते, अगर यह छापेखाने का सब टंडीरा फुकफुका जाय ! क्या समझते हैं अपने आपको………? अच्छा तो सेठ जी, कोई दंगा-वंगा न होने पाये। यहाँ तो आप ही हैं ! देखे रहियेगा। बड़े नाजुक वक्त हैं राजनीति के !'

भावरिया ने अब भी भावाजी से आँख नहीं मिलाई—'महाराज, अपने पास कौन तोप बन्दूक रखी है जो किसी को धमकाने मारने जायँगे। और कोई कुचल ही डालने आये तो चैंटा भी चकोटी काटता है।'

भावाजी अब भी प्रसन्न और शान्त थे। भावरिया का हाथ थामे ही रहे, भावरिया के लड़के की बाबत पूछते रहे—'बहुत दिनों से देखा ही नहीं लड़के को ! क्या दुकान पर नहीं आता ? ……अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है न ? बड़ा अच्छा है। अच्छा, अब चलें !'

भावरिया का हाथ छोड़ रामगोपाल की बाँह उन्होंने थाम ली और जयगोपालजी कह कर मोटर की ओर चल दिये।

इन लोगों के चले जाने के बाद बाज़ार के लोगों ने भावरिया को घेर लिया—'पूरी हड़ताल होगी जी !' उसने कहा—'बड़े-बड़े स्वराज के लेक्चर देते रहे। अब जब मौका आया, तोप-बन्दूक देखी तो कांछ खोलने लगे……'

'सब मिलों में पूरी हड़ताल है'—समीप खड़े लोगों ने बताया—'लाल-बावटा वाले सब झण्डे लेकर बड़े जोरों का जुलूस निकाल रहे हैं। सब लोग साथ हैं। परेल से इधर ही आ रहा है जुलूस।'

दुकानों पर लगे तिरंगे झण्डे लोगों ने हाथों में ले लिये। तनवरिया

के यहाँ से एक बड़ा तिरंगा झण्डा ऊँचे बाँस पर आ गया। भावरिया ने कहा—'सब झण्डे रहेंगे !...सब झण्डे लाओ !' समीप ही चमड़ेवाले सैय्यद की दूकान से हरा झण्डा आगया। लाल झण्डा नही मिला। हरे और तिरंगे झण्डे लेकर भीड़ चल दी। सब तरफ़ से लोग ऐसे आ-आ कर जमा होने लगे जैसे बर्सात में संध्या समय चिराग़ पर पतंगे आ जुटते हैं। नारे लगाने लगे—'जय हिन्द ! इनकलाब जिन्दाबाद ! अंग्रेजी राज का नाश हो ! सिपाहियों के साथ न्याय हो ! अपने भाइयों को भूखा नहीं मरने देंगे ! हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई !' जुलूस के आगे-आगे बच्चों की भीड़ नारे लगाती चलने लगी। दुकानों के ऊपर मकानों की तीसरी-चौथी मंजिल तक सब खिड़कियों से स्त्रियाँ झुक-झुक कर भीड़ को देखने लगीं।

जुलूस की भीड़ 'खड़ा पारसी' की चौमुहानी तक पहुँची थी कि 'लाल-बाग़' की ओर से गोरों से भरी फौजी लारियाँ आती दिखाई दीं। लारियों को देख भीड़ ने ऊँचे स्वर में नारे लगाये। गोरों ने मशीन गन घुमा गोलियों की दो बौछारें कर दीं। गोलियाँ ऐसे आईं जैसे टोकरी भर-भर कर कंकड़ फेंके गये हों। भीड़ तितर-बितर हो गई। भावरिया एक खम्भे की आड़ हो गया। गोलियाँ केवल भीड़ पर ही नहीं, चौतरफ़ा मकानों के छज्जों और खिड़कियों की ओर भी चलाई गई थीं। भीड़ के आगे कूद-कूद कर नारे लगाने वाले तीन लड़के छटपटा कर गिर पड़े। कुछ चोट खाकर चीखने लगे। लारियाँ अपने काम का परिणाम देखने के लिये रुकी नहीं, तेज़ी से निकल गईं।

भावरिया का दिल धक-धक कर रहा था। खम्भे की आड़ से निकल

उसने देखा सामने की चाल की दूसरी मंजिल से एक औरत चीख मार कर कूद पड़ी। गोली की बौछार से डर कर भाग गई भीड़ फिर सिमिटने लगी। भावरिया लम्बे कदम उठाता खिड़की से कूद पड़ी स्त्री के पास पहुँचा। औरत बेहोश हो गई थी। उसके समीप ही चार बरस की एक बच्ची गोलियों से बिंधी पड़ी थी।

बच्ची जुलूस देखने के लिये मकान के छज्जे पर आ बाहर झुक गई थी; गोलियों से बिंध कर नीचे आ गिरी। यह देख, उसे बचाने के लिये उसकी माँ चीख कर ऊपर से कूद पड़ी। चोट खाये और भी आदमी इधर-उधर चीख रहे थे। भयभीत लोग बता रहे थे, कहाँ-कहाँ गोलियाँ पड़ी हैं। गोलियों से जगह-जगह दीवारों का पलस्तर उखड़ गया था।

गोरों की गोलियों से ज़ख्मी बच्चे और दूसरे लोगों का रोना और खून बहता देख भावरिया का मन भय और विरोध से व्याकुल हो गया। परेल का जुलूस देखने का ध्यान न रहा। वह घायलों को उनके घर पहुँचाने की व्यवस्था करने लगा। भीतर मन उबाल खा रहा था—'आखिर गोरों ने गोली चलाई किस बात पर?·······क्यों,··· किस बात पर? भीड़ में से तो किसी ने एक कंकरी भी नहीं फेंकी! यह सब हमारे सीने पर हथियार बाँधे धड़धड़ाते फिरने का ही गुमान है।' दोमंज़िले से गिरी औरत को होश नहीं आरहा था। उसे वैसे ही उठा कर ऊपर पहुँचाया।

'परेल' और 'मदनपुरा' से भाग कर आये आदमियों से पता लगा सभी जगह ऐसा ही हाल गोरी फौज कर रही है। परेल की ओर से

हँसिया-हथौड़े का लाल बिल्ला लगाये कुछ स्वयमसेवक एक ज़ख्मी को कंधों पर उठाये को उसके घर छोड़ने जा रहे थे। भावरिया भी जख्मियों को उठवा कर भेज रहा था।

फौजी-लारी की गड़गड़ाहट फिर सुनाई दी। लोग तितर-बितर होने लगे। जख्मियों को छोड़कर आड़ में भागने लगे। लारी आ पहुँची। और फिर उन्होंने जहाँ भी आदमी देखे, गोली चला दी। इस बेर कोई नारे भी नहीं लगा रहा था। दो आदमी और जख्मी हो गये।

'क्या सबको मार डालेंगे?'—भावरिया ने अपने साथ के आदमियों से कहा—'क्या खून सवार हुआ है इनके सिर पर। समीप खड़े, नुक्कड़ के होटल वाले शेरमखाँ ने कहा—'वहाँ बन्दर में सिपाहियों के पास भी तोप बन्दूक है, वहाँ तो बस चलता नहीं। हम निहत्थे लोगों को मार रहे हैं साले। मोटर में छिपे सबको मारते चले जाते हैं। सड़क पर आयें तो देखें!'

साथ के आदमियों की ओर देखकर भावरिया ने कहा—'दोनों तरफ़ से सड़क रोक दो। यह लारी फिर आयेगी। यह लोग शाम तक सब को खत्म कर जायँगे।'

सब लोग जो कुछ हाथ लगा खाली ड्रम, टीन की चादर, पटड़े, शहतीर, पत्थर घसीट-घसीट कर सड़क पर बाँध लगाने लगे। बाँध अभी मोटर को रोकने लायक बन नहीं पाया था कि फिर एक लारी आगई। लोग भागने लगे। भावरिया ने गाली दे चिल्लाकर कहा—,भाग कर कहाँ जाओगे? अगर बम फेंक कर घरों को ही आग लगा

देंगे तो कहां जाओगे ? वो भी माई के लाल हैं जो समुद्र में तोपों की चोट खा रहे हैं। जो अपने बाप की औलाद है डटकर लड़े। लानत है भागने वाले पर !'--उसने लोहे का एक भारी गर्वेला उठा लिया और समीप आती हुई लारी की ओर लपका और उसके पीछे दूसरे आठ-दस आदमी। लारी वालों ने चढ़ आते लोगों की ओर मशीनगन घुमा दी परन्तु स्वयम् गाड़ी की तेज़ चाल और इन लोगों के लारी की ओर ही बढ़ जाने से ऊँचे पर जमी हुई मशीनगन की गोलियाँ इनके सिरों पर से निकल गईं।

भावरिया ने लोहे का गर्वेला पूरी शक्ति से गाड़ी के बोनट पर दे मारा। भयभीत गोरे ड्राइवर के हाथ कांप गये। गाड़ी एक बड़े ढोंके और फुटपाथ पर बने खम्भे से टकरा गई। गोरों ने रिवाल्वर निकाल लिये। भावरिया ने लोहे का गर्वेला फिर से उठाकर ड्राइवर पर दे मारा। मैशीनगन चुप हो गई। लोग लपक कर लारी पर चढ़ दौड़े। इतने में दूसरी लारी उल्टी ओर से आ गई। यह कांड देख लारी फांसले पर ही रुक गई। दूर से ही गोरों ने मैशीमगन खूब देर तक घुमाघुमा कर भीड़ पर चलाई। जब सड़क पर कोई भी आदमी अपने पैरों पर खड़ा न रह गया, उन्होंने टूटी हुई लारी को लोहे की सांकल से अपनी लारी के पीछे बांधा और खींच ले गये।

दो घण्टे बाद 'खड़ा पारसी' की चौमुहानी के काण्ड का समाचार 'मदनपुरा' पहुँचा। ज़ख्मियों और मुर्दों को उठाने के लिये लाल सेना के स्वयम् सेवक आये। उन्होंने छः लाशें और तेरह ज़ख्मी हस्पताल पचाये। इन ज़ख्मियों में अर्ध-मूर्छित अवस्था में पदमलाल भावरिया

भी था। उसके शरीर में पांच गोलियां लगी थीं। शरीर से निरंतर रक्त बह रहा था।

डाक्टरों को भावरिया के बचने की आशा न थी। दवाई की सुइयां उसके शरीर में लगाई गईं। एक घण्टे बाद उसने आंखें खोलीं। कागज पेंसिल लिये एक वालंटियर ने उसके कान के समीप झुक कर धीमे स्वर में पूछा—'आप अपने घर का पता दीजिये। हम खबर भेज देंगे। आपके घर के लोग आपसे मिल सकेंगे।'

× × ×

गीता की मां का कलेजा धक-धक कर रहा था। भय के मारे पेट की आँतें ऐंठ-ऐंठ कर रह जातीं। बार बार सोचती :—मेरे भाग्य से दोनों ही आग बगोले पैदा हुये। अपने आप तो जो थी, लड़के को भी चौपट किया। ऐसे भय के समय लोगों के बच्चे आराम से घर बैठते हैं परन्तु इन दोनों को मैदान सर करने की फ़िक्र है। मुट्ठी भर के जिस्म नहीं हैं, रत्ती भर अक्ल नहीं स्वराज्य लेंगे। यह सत्यानासी पार्टी दोनों बच्चों को उसकी गोद से छीन ले गई। दोपहर में बाज़ार में धड़ाके की आवाज़ें आईं तो वह कभी छज्जे पर दौड़ती, कभी नीचे, कभी ऊपर। क्रोध और उद्विग्नता से मन चाहता, सिर दीवार से टकराकर फोड़ले। वह मर जाय तो फिर यह कलमुँहे जो चाहें करें।

तीसरे पहर शामू आया। भला चंगा केवल भौंवें पसीने से चिपकी हुई थीं। माँ ने डांटा तो उसने जवाब में क्रोध दिखाया—'तुम क्या जानती हो, शहर में क्या हो रहा है? मशीनगनें चल रही

हैं। कांग्रेस के लीडर चूहों की तरह बिलों में घुस गये। हमारी पार्टी लीड दे रही है। हिन्दू-मुसलमान और कांग्रेसी भी सब हमारे साथ हैं। तीनों झण्डे एक साथ चलते हैं, जानती हो ? सैकड़ों को हस्पताल पहुँचाया। बेन की ड्यूटी हस्पताल में है। मैं भी वहीं था। वहीं मूँगफली और गुड़ पार्टी वालों ने दिया। बेन ने मुझे भेज दिया कि तुम घबरा रही होगी। इसलिये आया हूँ।......वहाँ इतना काम है ! तुम बड़ी डरपोक हो। हमारे तो सिर पर से गोलियाँ निकल गईं...। शामू की माँ के मुँह से निकल गया—हाय ! और उसने लड़के का सिर छाती से लगा लिया। वह तैयार हुई कि चलकर गीता को अपने साथ लिवा लाये परन्तु शामू घर के मालिक मर्द की स्थिति से बिगड़ उठा—'क्या अकल मारी गई है तुम्हारी ? खबारदार बैठो यहीं।' मां ने कातरता से उसकी ओर देखा और लड़के के अधिकार को स्वीकार कर चुप रह गई।

शामू ने कहा—'रात को कर्फ्यू आर्डर हो जायगा। जो बाहर निकलेगा, उसे गोली मार दी जायगी। तुम जल्दी से बेन और उसके साथियों के लिये पूरी-तरकारी बना दो। मैं हस्पताल दे आऊँगा। जल्दी करो। 'लाल-बाग' पैदल जाना होगा। ट्राम और बस बन्द हैं।

मां रसोई में थीं। एक कामरेड गीता को ढूंढता आया और शामू को गीता के लिये एक संदेस दे चला गया। कटोरदान में कई आदमियों के लायक खाना ले शामू के० जी० एम० हस्पताल जाने के लिये तैयार हुआ तो मां ने फिर गिड़गिड़ा कर बेटे की रक्षा के लिये साथ चलने की बात कही। माँ की ऐसी मूर्खता शामू के लिये असह्य हो

गई। वह बिगड़ उठा—'तुम कुछ समझती तो हो नहीं।······अगर कुछ हो गया तो मैं तुम्हें कहाँ बचाता फिरूँगा? बेन होती तो एक बात भी थी······दौड़ भाग तो लेती!······उल्टा मुझे मरवा देगी?'

× × ×

सुबह से ही कुछ दूसरे सिपाहियों के साथ गीता की ड्यूटी के० जी० एम० हस्पताल में फौजी-गोरों द्वारा जख़्मी किये गये लोगों की सेवा के लिये लगी हुई थी।

संध्या समय शामू खाना लेकर आया तो उसने बहिन को एक पुर्जा देकर कहा—'कॉमरेड जीतन जे० के० हस्पताल से यह संदेश लाया है। पुर्जे में लिखा था:—'पदमलाल भावरिया ज़ख्मी होकर आया है। उसे पाँच गोलियाँ लगी हैं। हालत खराब है। शायद ही बचे। उसने तुम्हें मिलने के लिये बुलाया है। जल्दी आओ।'

गीता को रोमांच हो आया—ऐसी अवस्था में कैसे न जाय? जाय तो कैसे? जब तक उसकी ड्यूटी सम्भालनेवाला न हो! परेशानी में कुछ निश्चय न कर पा रही थी। फिर ख़याल आया—पार्टी सेक्रेटरी से इजाजत लिये बिना जा कैसे सकती है? भावरिया से मिलने की उसे मनाही थी। सोचा—शामू के हाथ पर्चा लिखकर इजाजत मंगा ले और अभी चली जाय! कागज़ ले पर्चा लिखने लगी तो याद आया—सात बजे से कर्फ्यू हो जायगा।······लड़का कहाँ जायगा? कागज़ उसने हाथ में मरोड़कर फेंक दिया वैसे ही भीतर उसका हृदय मसक कर रह गया।

शामू के कंधे पर हाथ रख उसने उसे बहुत शीघ्र घर जाने के लिये कहा और समझाया कि मां से कह देना—कोई चिन्ता न करे। यहाँ किसी तरह का भय नहीं है। दांतों से ओठ दबा वह फिर काम में लग गई। विक्षिप्त मस्तिष्क के कारण आँखों के सामने बार-बार ज़ख्मी भावरिया का चित्र आ जाता। पट्टियों से सिर, हाथ, पाँव बंधे हुये, कराहता हुआ जैसे पचासों आदमी उसकी आँखों के सामने पलंगों पर पड़े छटपटा रहे थे। उसी समय किसी की चीख़ या कराहट सुन उसकी ओर वह चल देती। वह सोच भी न पा रही थी। रात भर प्रतीक्षा कर सुबह मज़हर से इजाज़त ले जे० जे० हस्पताल जाने के सिवा उपाय न था।

उलझन में दिन भर वह कुछ खा न पायी थी। अब संध्या को भी कुछ खा सकना असम्भव हो गया। समय बड़ी कठिनाइ से बीत रहा था। चारों ओर से ज़ख्मियों की चिल्लाहट और कराहट कानों में पड़ रही थी। किसी को खून की कै हो जाती, किसी को दूसरी कोई हाजत। गीता डाक्टरों और नर्सों के बताये ढंग पर मैशीन की तरह काम करती जा रही थी। कुछ बोलने की सामर्थ्य न थी। उसकी आँखों के सामने निरंतर ज़ख्मी पदमलाल भावरिया का रूप फिर रहा था। जिस मरीज़ के पास जाती सोचती, ऐसे ही 'वह' भी पड़ा होगा क्षत-विक्षत !

अगले दिन सुबह नौ बजे सहायता के लिये तीन कामरेड और पहुँच गये। जिन लोगों की ड्यूटी पर चौबीस घण्टे हो गये उन्हें कुछ समय के लिये घर जा कर नहा-धो आने के लिये छुट्टी दी गई। गीता

हस्पताल से निकल घर न जा, परेल में पार्टी-दफ्तर पहुंची। दफ्तर में पाँच छः कामरेड थकावट से निढाल, बेख़बर सोये हुये थे। एक ओर मेघनाथ भी सो रहा था। बेसुधी में उसकी ऐनक उतर गई थी, बाल फैल गये थे और मुख खुला हुआ था। असगर जाग रहा था और एक दूसरे साथी से धीमे-धीमे बात करता हुआ मूंगफली और गुड़ खा रहा था।

'मज़हर भाई कहां हैं ?'—गीता ने पूछा।

असगर ने मेघनाथ को खूब ठेल-ठेल कर जगाया। नींद खुलने पर उसने आँखें मल, ऐनक लगा और माथे से बाल समेट गीता की ओर देखा—'क्यों' क्या है ?'

'मज़हर भाई कहाँ हैं ?'

'शायद······हस्पताल में होंगे। छः मज़दूर कामरेड्स की डैथ (मृत्यु) हो गई है। उनके लिये सब इंतज़ाम करना था। वहीं होंगे। क्यों······तुम्हें यह क्या हो रहा है ?'—ध्यान से गीता के चेहरे की ओर देख उसने पूछा।

गीता से कुछ उत्तर देते न बना। एक लम्बी सांस ले, ज़ीना उतरने लगी। गीता के पांव लड़खड़ा रहे थे। सड़क पर किसी प्रकार की सवारी न थी। हस्पताल बहुत दूर था। एक घण्टे से अधिक चल कर वह हस्पताल पहुँची।

मज़हर हस्पताल के फाटक पर ही दिखाई दिया। साइकिल पर पीछे बहुत सा कोरा, सफेद कपड़ा बाँधे उसी समय पहुंचे एक कामरेड से वह कह रहा था—'कितनी देर कर दी तुमने ?' कामरेड का उत्तर

सुने बिना उसने गीता को सम्बोधन किया—'क्या है कॉमरेड ?' गीता के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह फिर कॉमरेड की ओर घूम गया—'भाई जल्दी करो। सब लोग इंतजार में हैं।' और वह भीतर की ड्योढ़ी की ओर चल दिया।

गीता मज़हर के पीछे-पीछे चली। हस्पताल की बग़ल में एक ओर बहुत से शव अर्थियों पर रखे हुये थे। कुछ शवों को घेर के बैठे और खड़े लोग सिसक-सिसक कर रो रहे थे। कुछ शवों के समीप लाल-सेना के स्वयम्-सेवक खड़े आपस में बात-चीत कर रहे थे। साइकिल पर कपड़ा आ गया देख स्वयम्-सेवक आगे बढ़े और कपड़ों के टुकड़े कर शवों को लपेटने लगे।

ड्योढ़ी के समीप प्रान्तीय-कमेटी के सेक्रेटरी दूसरे और दो मेम्बरों के साथ खड़े दो और कॉमरेडों से बात कर रहे थे। गीता ने इन्हें पहचाना। इन्हीं के सामने उसका मामला पेश हुआ था। गीता को भूल, मजहर उन लोगों के समीप जा बात करने लगा। गीता भी उसके पीछे-पीछे पहुँच कुछ अन्तर से खड़ी अपनी ओर ध्यान होने की प्रतीक्षा करने लगी।

मजहर ने सेक्रेटरी से कहा—'सब इंतजाम हो गया। छः वर्कर्स (मजदूरों) के लिये पार्टी-फण्ड से कपड़ा मँगा दिया है। बाकी लोगों के लिये उनके अपने आदमी ले आये हैं।'

प्रान्तीय-कमेटी के एक मेम्बर ने पूछा—'वर्कर्स की अर्थी के लिये आदमी तो पूरे हैं? छः-छः आदमी होने चाहिये ताके कंधा बदलने की सुविधा रहे।'

'हो जायगा'—मजहर ने उत्तर दिया—'हम सब लोग हैं। कुछ दूर तक आप लोग भी चलेंगे। आदमी बुलवाये हैं। वे तब तक रास्ते में मिल जायँगे। अब देर नहीं होनी चाहिये।'

'कितना अफ़सोस है'—सेक्रेटरी ने चश्मे के नीचे उँगलियाँ डाल अपनी नींद से सूजी सी आँखें मल और चश्मा ठीक करते हुए कहा—'इन बहादुरों का जुलूस नहीं निकल सकता।'

गीता उतावली हो रही थी। अपनी ओर किसी का ध्यान होते न देख एक कदम आगे बढ़ बोली—'कॉमरेड्स, मैं एक बात पूछना चाहती हूँ।'

सेक्रेटरी ने अपनी चुंधियाइ आँखें उसकी ओर उठाईं और फिर सहायता के लिये मजहर की ओर देखा। प्रान्तीय कमेटी का दूसरा मेम्बर बोल उठा—ओह, 'कामरेड गीता।'

'यस गीता, हाँ गीता'—सेक्रेटरी ने पूछा—'हाँ, हाँ क्या है?'

साथ खड़े कॉमरेड्स में एक बोल उठा—'कामरेड गीता, आपके लिये कल तीन बजे पार्टी-दफ़्तर में पदमलाल भावरिया का संदेश भिजवाया था। मिला नहीं?' सभी लोग गीता की ओर देखने लगे।

'मैं के० जी० एम० हस्पताल में ड्यूटी पर थी। वहाँ संध्या को भाई ने खबर पहुँचाई। उस समय ड्यूटी पर थी। कोई दूसरा आदमी नहीं था।'

'ठीक है'—प्रान्तीय कमेटी के मेम्बर ने सिर हिलाकर अनुमोदन किया।

संदेश भिजवाने वाला कॉमरेड बोला—'कल दो बजे उसे वालंटियर लाये। शरीर में छः गोलियाँ लगी थीं। साथ के लोग

कहते थे, मोड़ के आगे ही लोहे की एक लाठ ले उसने फ़ौजी-लारी को गिरा दिया। जब यहां लाया गया, बहुत खून बह जाने से बेहोश था। इंजेक्शन लगाने से कुछ देर के लिये होश आया। मैंने घरवालों का पता पूछा—जवाब दिया, उनका क्या होगा; आकर घबरायेंगे। क्या शहर में गोली चल रही है?'

मैंने कहा—'नहीं अब शान्ति है।'

'क्या हमारे जहाज़ी-सिपाही जीत गये?'—उसने पूछा—

'नहीं, कांग्रेस लीडरों ने उनसे हथियार डलवा दिये समझौता हो जायगा।' मैंने बताया।

बोला—'मारे गये ग़रीब!······दग़ा होगा।······हथियार डाल देने वाला कैसे जीतेगा?'

प्रान्तीय कमेटी का दूसरा मेम्बर बोला—'वेरी गुड? इसका सब हाल अखबार में देना होगा। नोट कर लिया है? उसका फोटो लिया है?'

कॉमरेड कहता गया—"मैंने पूछा, कहिये आपके घर के लोगों को बुलवा दें, तो कॉमरेड का पता बताकर, गीता की ओर संकेत कर उसने कहा—'उन्हें बुलवा दो!"'

गीता बोल उठी—'मैं उससे मिलने की इजाज़त चाहती हूँ।' कॉमरेड क्षण भर गीता को देखता रह कर धीमे स्वर में बोला—'वह तो रात नौ बजे मर गया।······बड़े जीवट का आदमी था।'

गीता के पाँव लड़खड़ा गये। गिर पड़ने से अपने को सँभाले रखने के लिये वह अपने बटुए को दोनों हाथों से कस कर पकड़े थी।

मज़हर हाथ में थमी पेंसिल से अपना सिर खुजलाते हुये बोला—'यह गीता का ही प्रभाव था कि भावरिया जैसा बदनाम व्यक्ति भी राष्ट्रीय-संघर्ष के मोर्चे पर आगे आया वर्ना······'

सेक्रेटरी ने गीता की ओर देख मुस्कराने का यत्न कर कहा—'वी नो, वीनो (हम जानते हैं) गुड गर्ल (शाबाश, बहादुर) !'

गीता के आँसू बह गये।

घड़ी देख मज़हर बोला—'बहुत देर हो रही है।'

सब लोग अर्थियों की ओर चल दिये। हिचक की आवाज़ सुन सेक्रेटरी ने लौट कर देखा। ठीक से देख पाने के लिये उसने अपना ढलक आया चश्मा ऊपर चढ़ा गीता के मुख की ओर देखा—'ह्वाट इज़ दिस कामरेड (यह क्या करती हो) ?'—सेक्रेटरी का सर भारी हो रहा था—'यह रोने का समय नहीं······हमें गर्व होना चाहिए !··· यह आज़ादी के मूल्य की किश्त है।······उसके लिये रोना क्या ?'

गीता गले में उमड़ती हिचकी को पी गई। पलकों में आंसू भर जाने के कारण वह कुछ स्पष्ट देख न पा रही थी। मन से उठते आवेश को दबाये रखने के लिए वह दांतों से होंटों को काट रही थी परन्तु गालों पर से आंसुओ की धारायें बहती गई। सहसा सुनाई दिया—कामरेडस अटेंशन (सावधान) !'

अर्थियों के समीप खड़े कामरेड सिपाहियों की तरह तन कर सीधे खड़े हो गये। गीता भी तुरंत, लड़खड़ाते कदमो से वहाँ पहुँच, उनके साथ मिल, उन्हीं की तरह तन कर खड़ी हो गई। गालों पर बहते आँसू पोंछ सकने के लिए उसके हाथ हिल न सके।